भोजपुरी-सौरभ

22वां अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, रायपुर (छ.ग.)

28 एवं 29 मार्च 2009

प्रधान संपादक

रघुवर दयाल सिंह

जय भोजपुरी

जय भोजपुरी
जय छत्तीसगढ़
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
ईकाई छत्तीसगढ़
अभिनन्दन बा.

भोजपुरी-सौरभ

22वां अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
रायपुर (छत्तीसगढ़)
28 एवं 29 मार्च 2009

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक
रघुवर दयाल सिंह

सह-संपादक
डॉ. प्रभाकर सिंह
अभय सिंह

दिक्‌दर्शक
डॉ. प्रभुनाथ सिंह
डॉ. जौहर शाफियाबादी
अशोक कुमार सिन्हा

संपादक मंडल
राजेन्द्र कुमार तिवारी, संजय सिंह,
विश्वनाथ सिंह, रामबदन मिश्रा, हरेन्द्र शर्मा,
रविन्द्रनाथ शाही, विरेन्द्र सिंह, मुन्ना सिंह, इन्द्र विजय विसेन एवं सत्येन्द्र कुमार गौतम

प्रदेश कार्यकारिणी का गठन

संरक्षक :

डॉ. जौहर शफियावादी, महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन, पटना

अध्यक्ष :

श्री अशोक कुमार सिन्हा

वरिष्ठ उपाध्यक्ष :

श्री रघुबर दयाल सिंह (पत्रिका प्रकाशन)

उपाध्यक्ष :

श्री हरेन्द्र प्रसाद शर्मा (संगठन), **श्री अरुण कुमार सिंह** (वित्त व्यवस्था)

महामंत्री :

श्री राम वदन मिश्र

संगठन मंत्री :

आचार्य पं. नरेन्द्र कुमार सुमन

सचिव :

श्री तेजनारायण सिंह, श्री मनोज कुमार तिवारी

कोषाध्यक्ष :

श्री सत्येन्द्र कुमार गौतम

सह-कोषाध्यक्ष :

श्री अभय सिंह

कार्यकारिणी सदस्य :

श्री सुधीर कुमार सिंह, श्री विजय पाण्डेय, श्री विजेन्द्र शर्मा, श्री बी.बी. ओझा, श्री राजेश सिंह उर्फ ललन सिंह, श्री सत्येन्द्र सिंह (अधिवक्ता), **डॉ. प्रभात कुमार सिंह, श्री अशोक सिंह, श्री समीर श्रीवास्तव,**

आमंत्रित सदस्य :

श्री प्रफुल्ल विश्वकर्मा, संजय श्रीवास्तव (पार्षद) **डॉ. प्रभाकर सिंह, श्री हनुमान सिंह, श्री प्रभुनाथ बैठा, श्री आर.एन. प्रसाद, मो. हैदर इमाम जौहरी**

डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री
छत्तीसगढ़ शासन

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का 22वां अधिवेशन छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में आयोजित किया जा रहा है, जिसमें भोजपुरी साहित्य के अनेक विद्वान लेखक और कवि शामिल होंगे। आयोजकों द्वारा उनके साथ हिन्दी और छत्तीसगढ़ी भाषा के साहित्यकारों को भी सम्मेलन में आमंत्रित किया जा रहा है। निश्चित रूप से देश की अन्य सभी भाषाओं और लोक भाषाओं की तरह भोजपुरी भाषा और साहित्य का संसार भी अत्यंत समृद्ध है।

अनेकता में एकता जहाँ हमारी महान भारतीय संस्कृति की एक बड़ी विशेषता है, वहीं देश की विभिन्न भाषाओं के जरिए हमारी राष्ट्रीय संस्कृति को भी एक अत्यंत खूबसूरत इन्द्रधनुषी पहचान मिलती है। हिन्दी, छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी भाषाओं के बीच वैसे भी काफी सहजता, सरलता और समानता महसूस होती है। मुझे आशा है कि 22वें राष्ट्रीय भोजपुरी अधिवेशन का यह महाकुंभ भोजपुरी भाषा, साहित्य और कला संस्कृति के विकास में काफी सहायक होगा।

छत्तीसगढ़ की पावन धरा पर अखिल भारतीय स्तर का यह महत्वपूर्ण आयोजन हम सबके लिए सचमुच सौभाग्य, गर्व और हर्ष का विषय है। देश के विभिन्न राज्यों से अधिवेशन में शामिल हो रहे प्रतिनिधियों को अपने छत्तीसगढ़ प्रवास के दौरान देश के इस नये राज्य की सांस्कृतिक विशेषताओं के बारे में भी बहुत कुछ जानने और समझने का अवसर मिलेगा। मैं प्रदेशवासियों की ओर से और अपनी ओर से भी उन सबका हार्दिक स्वागत करता हूँ । आयोजन की सफलता और इस मौके पर प्रकाशित हो रही स्मारिका के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. रमन सिंह

बृजमोहन अग्रवाल
मंत्री
लोक निर्माण विभाग, स्कूल शिक्षा, संसदीय कार्य,
पर्यटन, संस्कृति, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग,
छ.ग. शासन, रायपुर

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का 22वां अधिवेशन दिनांक 28 एवं 29 मार्च 2009 को निरंजन धर्मशाला, वी.आई.पी. रोड, रायपुर (छ.ग.) में आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में देश के कोने–कोने से हिन्दी, भोजपुरी तथा छत्तीसगढ़ी भाषा की विद्वान सम्मिलित होगें। इस अवसर पर "भोजपुरी सौरभज्ज पत्रिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

एतदर्थ सम्मेलन की सफलता हेतु शुभकामना व पत्रिका के प्रकाशन हेतु बधाईयां।

बृजमोहन अग्रवाल

राजेश मूणत
मंत्री
नगरीय प्रशासन
आवास एवं पर्यावरण, परिवहन
छ.ग. शासन, रायपुर

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि अखिल भारतीय भोजपुरी समाज, साहित्य सम्मेलन में सामाजिक पत्रिका सृजनात्मक भोजपुरी सौरभ विशेषांक प्राकशित करने जा रहा है।

आशा है कि यह विशेषांक सामाजिक क्षेत्र से जुड़े हुए समस्त जनों के लिए उपयोगी साबित होगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

राजेश मूणत

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	कृति/संकलन	पृष्ठ क्रमांक
1	संपादकीय	रघुवर दयाल सिंह	1–2
2	अध्यक्ष की कलम से	अशोक कुमार सिन्हा	3
4	भोजपुरी के मंगल गीत (उचका प बैइठले महादेव)		4
5	राष्ट्रगीत (बटोहिया)		5
6	राष्ट्रगीत (जन–गण–भारत)	रघुवीर नारायण	6
7	कौमी एकता (गीत)	इंजी. सुधाकर सिंह	7
8	गजल (रोई की गीत गाई)	जौहर शफियाबादी	8
9	किसानों की दीपावली और पूजा	डॉ. प्रभाकर सिंह, हेमन्त पाणिग्रही	9–11
10	भुलाइल बिसरल गीत	स्व. राधा मोहन सिंह	12–13
11	जय गोवर्द्धन गिरधारी	भगवान सिंह भास्कर	14
12	मन के दरपन	श्यामकांत ओझा निराला	14
13	माँ तू बड़ी महान	सत्येन्द्र कुमार गौतम	14
14	भोजपुरी के आदि कवि – बाबा कबीर	अभय सिंह	15–16
15	अनमोल फुटेहरियार	श्रीमति सरिता सिंह	17
16	बसंत गीत		18
17	भोजपुरी श्रमवीर	कु. ऋचा सिंह	18
18	गजल	रामेश्वर शर्मा	19
19	भोजपुरी माटी के गौरव – चन्द्रशेखर	डॉ. प्रभुनाथ सिंह	20–24
20	कवि सम्मेलन के इचाद	डॉ. जीतेन्द्र वर्मा	25–27
21	बुजुर्ग खुश होंगे तो परिवार महकेगा	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य	27
22	क्रोध हमरा आवेला	विश्वनाथ प्रताप सिंह	28
23	आत्मविश्वास	श्रीमति सरस्वती शाही	29
24	स्वास्थ्य ही जीयन है	संजय सिंह	30
25	कहानी (अचके में)	कृष्ण कुमार	31–32
26	बरखा के बरसात	दिवाकर सिंह	33–34
27	उनके गजल उनके बदे	डॉ. जवाहर लाल बेकस	34
28	देशभक्ति गीत	राम वदन मिश्र	35
29	कतना बढ़िया छन	सुरेश कांटक	35
30	पाकल–पाकल पानवा खियावे गोपीचानवां?	राम वदन मिश्र	36–37
31	डॉ. उदय नारायण तिवारी के साहित्यिक व्यक्तित्व	डॉ. तैयब हुसैन पीड़ित	38–40
32	गजल	गंगा प्रसाद अरुण	40
33	फागुनी बयार	कु. शुभम सिंह	40
34	के कही विश्वासघात?	डॉ. गजेन्द्र सिंह, डॉ. पी.एन. सिंह	41
35	विश्वास और प्रेम (जीवन का सार)	आर.एन. शाही	42–43
36	नेताजी आज के	मोहन शर्मा	44
37	धेपका जी – आंचलिक कथा	रघुवर दयाल सिंह	45–51
38	गजल	हरेन्द्र प्रसाद शर्मा	52
39	भोजपुरी के उदयमान गौरव		53
40	संपर्क सूत्र		54–55

सम्पादकीय...

काल चिन्तन :

मर्यादा पुरषोत्तम राम के ननिहाल,दक्षिण कौशल आ आजु के छत्तीसगढ़ राज्य में भोजपुरिया भाई आ भाषा पर विचार करे के पहिले भोजपुरी भाषा के ओर-छोर,भोजपुरियन के कर्म प्रवीणता, साहस आ यायावर प्रकृति के जानल जरुरी बा। -पौराणिक काल के विज्ञानिक,वेदवेता, वेदंमाता गायत्री के रचियता-ब्रम्हर्षि विश्वामित्र जब आज के बिहार राज्य के बक्सर जिला में स्थित गंगा तट पर आपन आश्रम बनवनी और अपना आस पास श्रेष्ठ मानवीय गुणों से परिमार्जित चेलन के बसवनी तब प्रशिक्षित शिष्यन के संबोधित करत समय द्विज के स्थान पर पहिला बेर भोज शब्द के इस्तेमाल कईनी। ऊ संस्कृत के शब्द है। एकर मायने है-भो = हे,ज =(जन्म पाने वाले)अर्थात-हे मानवी. गुणों से विभूषित नव जीवन पाने वाले श्रेष्ठ मानव। भोज केप्रयोग के पहिले द्विज आ आर्य शब्द के प्रयोग लगभग एही अर्थ में कईल जात रहे। वैज्ञानिक महर्षि विश्वामित्र के शिष्य जवन-जवन गॉव या ईलाका में रहत रहन ओही अंचल के भोजपुर आ अनेक जगह से बटोराईल विश्वामित्र के शिष्यन के संस्कारित बोली के भोजपुरी नाम पड़ल।

- कालान्तर में राजा भोज, मिहिर भोज,कुनती भोज आदि अनेक राज्य के राज -भाषा के रुप में भोजपुरी के प्रयोग के थोर-बहुत वर्णन मिलेला। -भाषा विज्ञान के अनुसार उत्तर मागधी भाषा से अवधि बघेली,भोजपुरी,मगही ऑ छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रादुर्शाव भईल। -भोजपुरी आ छत्तीसगढ़ी दूनो एकलाद के बहिन ह लोग। ऐहि से दुनों के व्याकरण वर्तनी शब्द आ वाक्य विन्यास में बहुते समानता बा।

-छत्तीसगढ़ के लोक कलाकार शादी ब्याह के समय भोजपुरी क्षेत्र में भोजपुरी गीत गा के, नृत्य कर के, बहुत प्रतिष्ठा पावे ला लोग। ऐही तरी राम-सीता से लेकर आज के समय में भी छत्तीसगढ़ के माटी भोजपुरियन के रास आवेला। जनसंख्या के घनत्व और खेती के बंटवारे से व्यथित भोजपुरिया मॉरिशस,यूगांडा त्रिडीनाड और अनेक देशन में गिरमिटिया मजदूर के रुप में गईले ऑ ओहिजे रचि बस गईले। ऐहि तरी देश में जहॉ औद्योगीकरण के जोर रहें ऊहॉ भोजपुरिया भाई रोजी रोटी के तालाश में गईले आ ओहिजे के हो गईले।

-आम भोजपुरिया समूचे भारत माता के अपने धरती मानेला। ओकरा में क्षेत्रवाद के भाव बहुते कम होला।

-छत्तीसगढ़ के रायगढ़,जशपुर ऑ सरगुजा के शासक 18 वीं शताब्दी में भोजपुरिया जवानन के कृषि विशेषज्ञ के रुप में बोलवले रहन। तब से ऊ ऐहिने बस गईले। 18 वीं शताब्दी में ही रायपुर में बैलगाड़ी के वक्का निर्माण के उत्कृष्ठ शिल्पी के रुप में भोजपुरिया अईले। आजुओ उनके खानदान बढ़ईपारा रायपुर में बसल बा।

-सरगुजा,रायगढ़ विश्रामपुर, कोरिया, कोरबा, रायपुर,भिलाई,जगदलपुर में लगभग 5० लाख भोजपुरिया बलस बाड़े। अब त भोजपुरी भी छत्तीसगढ़ में एक भाषा के रुप में प्रचलित बा।

-भोजपुरियन के एगो विशेषता रहे कि जहॉ गईले अपने कठिन परिश्रम ऑ लगन के परिचायक बन गईले। रायपुर के लोहा उद्योग

में कठिन काम में संलग्न भोजपुरिया छत्तीसगढ़ के नव निर्माण में अहम् भूमिका निभा रहल बा। दोसर विशेषता ऊ ह कि ई अपना तीज-त्योहार, गीत, छठ पर्व ऑ भोजपुरी भाषा के सिर ऑखिन पर राखे ले। रायपुर में कइ एक भोजपुरी संगठन बनल। सब में ऐके भाव रहे। भोजपुरी भाषा ऑ संगठन।

एही बीच भेट भइल बिहार सरकार के पूर्व वित्त राज्यमंत्री, सुविख्यात् शिक्षाविद्, मार्गदर्शक, अभिभावक स्वरूप डॉ. प्रभुनाथ सिंह से ।उहां के प्रस्तावित कईनी कि छत्तीसगढ़ राज्य में अतना बड़ा संख्या में भोजपुरी भाषी निवास करे ले। ऐहिजा अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के ईकाई गठित कइल चाहीं। रउवा एकर कमान सम्हालीं। हम आपन मजबूरी बतवनी एहि बीच राजधानी भोजपुरी मंच के तत्वावधान में भोजपुरी सम्मेलन रायपुर में 2003 में सम्पन्न भइल। भोजपुरी राजधानी मंच के अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल विश्वकर्मा तत्कालीन सभापति जी हमरा के भोजपुरी गंगा पत्रिका के सम्पादन के जवाबदारी सौंपले। ओही दरम्यान भेंट भइल प्रसिद्ध सूफी सन्त, कौमी एकता के मसीहा, भोजपुरी के अग्रदूत, प्रखर वक्ता, भोजपुरी आन्दोलन के दमदार कमाण्डर डाक्टर जौहर शौफियावादी से। ऊहां के एक व्यक्ति न हुई बलुक एगो जीवन्त संस्था हुई। उनका से मिलला प कौन भोजपुरिया अभागा होई जे भोजपुरी आन्दोलन में सक्रिय न हो जाई। ईहे भईल हमरो साथ। उनके आज्ञा से फिर से भोजपुरी सौरव के सम्पादन के जवाबदारी निभावे के पड़ल।

अतने सबुर के बात रहे कि देश के सुप्रसिद्ध मैटेलर्जी इंजीनियर, भूतपूर्व महाप्रबन्धक, बोकारो स्टील प्लाण्ट एवं कार्यपालक निदेशक श्री अशोक कुमार सिन्हा जी, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के छत्तीसगढ़ ईकाई के मुखिया बननी। साहित्य के अवरुद्ध धारा छत्तीसगढ़ में प्रवाहित हो चलल।

पत्रिका के प्रकाशन खातिर बहुत कम समय प्राप्त भइल तबहुं नीमन-नीमन साहित्यिक व्यंजन के जेवनार परोस रहल बानी। आशा ही ना पूर्ण विश्वास बा इ छितराइल / बटोराइल व्यंजन रउआ सभे के रूचिकर लागी। अगर कहीं कोनो भूल हो गइल होखे त हमार गलती मानब अ अगर नीमन लगे त भोजपुरी के जवरात अबियान के श्रेय मानब। एह पत्रिका के प्रकाशन में सम्पाजक मण्डल के सदस्यन के अलावा जेकर-जेकर रचना छपल बा, उकरा प्रति धन्यवाद अ। जेकर नइखे छपल ओकरा प्रति हम क्षमाप्रार्थी बानी ।

गलती सही के माफी मांगत रउरे

रघुवर दयाल सिंह

निहोरा-
अध्यक्ष के कलम से...

जय भोजपुरी,

हमें यह सूचित करते हुए अपार हर्ष एवं बेहद खुशी हो रही है कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का अगला 22 वाँ अधिवेशन पहली बार छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी रायपुर में आयोजित किया जा रहा है और हम छत्तीसगढ़वासी इस बात से काफी गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। हमारे भारत के कोने-कोने से आए भोजपुरी भाषी आज छत्तीसगढ़ प्रांत में कंधे से कन्धा मिलाकर छत्तीसगढ़ राज्य की वैभव, उन्नति, विकास में अपना सम्पूर्ण योगदान दे रहे हैं और अपनी सभ्यता, संस्कृति को निभाते हुए छत्तीसगढ़ की परंपरा में अपने को हर तरह से सन्निहित कर लिए हैं और यह अवसर आया है कि अब हम सभी भोजपुरी भाई-बहनों को भी अपना परिचय देने के लिए प्रेरित करें।

इस महान आयोजन के शुभ अवसर पर हमारे देश के केन्द्रीय मंत्री, सांसद, साहित्यकार, कवि, लेखक, विचारक, विद्वान सभी लोग सम्मिलित हो रहे हैं। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन छत्तीसगढ़ इकाई की ओर से एवं अपनी तरफ से आग्रह करते हैं कि आप सपरिवार 28 एवं 29 मार्च 2009 श्री निरंजन लाल धर्मशाला वीआईपी रोड, बेबीलॉन होटल के बगल में रायपुर में उपस्थित रहकर इस आयोजन को अपना आशीर्वाद देवें। आपका भरपूर स्नेह मिले और छत्तीसगढ़ की मान-शान को प्रकाष्ठा पर पहुंचाये। सभी लोगों को यह मालूम हो जाये कि छत्तीसगढ़ में विभिन्न भाषा-भाषी सभी लोग आपस में मिलजुलकर हर तरफ से आगे बढ़ रहे हैं और शीघ्र ही छत्तीसगढ़ पूरे भारत में अपना परचम लहराने में प्रथम राज्य साबित होगा। पुनः आपसे हृदय से निवेदन करना चाहूंगा कि आप अपना भरपूर आशीष दें और इसमें जुड़ जायें क्योंकि आपके बिना सहयोग के इतना बड़ा महोत्सव पूर्ण नहीं हो सकता। इसलिए आपका समर्थन, सहयोग और आशीर्वाद की हर समय आवश्यकता हम महसूस कर रहे हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि इस अधिवेशन को पूर्ण कराने के लिए आप अपना कर्तव्य महसूस करते हुए उचित सहयोग के साथ पूर्व सूचना देकर हमें अपने उत्साह का अवश्य परिचय देंगे ताकि इस आयोजन को समय की मांग को समझते हुए अपनी ताकत लगायें तभी हम भोजपुरी भाषा को अष्टम सूची में नाम दर्ज कराने के प्रयास को पूरा कर पायेंगे।

जय भोजपुरी - जय छत्तीसगढ़ी

धन्यवाद

भवदीय

(अशोक कुमार सिन्हा)

भोजपुरी के मंगल गीत

गाई के गोबरे महादेव, अंगना लिपाइ
गजमति, आहो महादेव चउका पुराइ
सुनी ए शिव, शिव के दोहाई।

चनन ते छेइ छेइ पीढ़िया बनाइ
ताही पीढ़िये बइठे लें महादेव, जाटां छितराई
सुनी ए शिव, शिव के दोहाइ।

जंधिआ बइठल, गउरा देइ, गइली अलसाइ
हुदका के मरले महादेव, गइले रिसिआइ
सुनी ए शिव, शिव के दोहाइ

बहियां ओलारी गउरा देइ, लिहली मनाइ
सुनी ए शिव, शिव के दोहाइ।

बिअहे के बेरिया महादेव, कुछ नाहीं पाइ
गवने के बेरिया महादेव, सबकुछ भेंटाइ
सुनी ए शिव, शिव के दोहाइ

के दिही हाथी, घोड़ा के रे धेनु गाइ
के दिही आपन धिअवा, अंगुरी धराई
सुनी ए शिव, शिव के दोहाइ

बाबा दिहें, हाथी-घोड़ा, भइया धेनुगाइ
माई दिहें आपन धिअवा, अंगुरी धराई
सुनी ए शिव, शिव के दोहाइ

अंचवे के लोटा महादेव, खाये के थारी
सुते के पलंगिया महादेव, ओढ़े के रजाई
सुनी ए शिव, शिव के दोहाइ।

भोजपुरी राष्ट्रगीत (बटोहिया)

गीतकार-रघुवीर नारायण

(भारत के आजादी की लड़ाई के प्रेरणास्त्रोत रहल एहगीत के रचयिता के आभार मानत हमनी के कृतज्ञता स्वरूप एहगीत के प्रकाशित करावत बानी)

(1)

सुन्दर सुभूमि भैया, भारत के, देसवा से,
मोरे प्राण बसे, हिम खोह, रे बटोहिया।
एक द्वार घेरे राम, हिम कोतवलवा से,
तीन द्वारा सिन्धु, घहरावे रे बटोहिया।
जाऊ जाऊ भैया रे, बटोही हिन्द देखि आऊ,
जहवाँ कुहुकि कोहली बोले रे बटोहिया।

(2)

पवन सुगन्ध मन्द, अगर चननवाँ से,
कामिनी बिरह राग, गावे रे बटोहिया।
बिपिन आगम घन सघन बगन बन,
चम्पक कुसुम रंग देबे रे बटोहिया।
तोता तूती बोले राम, बोले भेंगरेजवा से,
पपिहा के पी पी. जिया साले रे बटोहिया।

(3)

सुन्दर सुभूमि भैया, भारत के, देसवा से
मोरे प्राण बसे गंगा धार रे बटोहिया।
गंगा रे जमुनवाँ के, झगमन पनियाँ से
सरजू झमकि, लहरावे रे बटोहिया।
ब्रहपुत्र पंचनद घहरत निसि दिन,
सोनभद्र मिठे स्वर गावे रे बटोहिया।

(4)

ऊपर अनेक नदी उमड़ी घुमड़ी नाचे,
जगन के जदुआ, जगावे रे बटोहिया।
आगरा प्रयाग काशी, दिल्ली कलकतवा से,
मेरे प्राण बसे, सरजू तीर रे बटोहिया।
जाऊ जाऊ भैया रे, बटोही हिन्द देखि आऊ,
जहाँ ऋषि चारो, वेद गावे रे बटोहिया।

(5)

सीता के विमलजस, राम जस कृष्ण जस,
मोरे बाप दादा के कहानी रे बटोहिया।
व्यास बाल्मीकि ऋषि गौतम कपिल देव,
सुतुल अगम के जगावे रे बटोहिया।
रामानुज रामान्द, न्यारी प्यारी रूपकला,
ब्रह्म सुख वन, के भँवर रे बटोहिया।

(6)

नानक कबीर गौरी, शंकर श्री रामकृष्म,
अलख के गतिया, बतावे रे बटोहिया।
विद्या पति कालिदास, सूर जयदेव कवि,
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया।
सुन्दर सुभूमि भैया, भारत के देसवा से,
मोरे प्राण बसे, हिम खोह, रे बटोहिया।

(7)

जाऊ जाऊ भैया रे, बटोही हिन्द देखि आऊ,
जहवाँ कुहुकि कोइली, बोले रे बटोहिया।
बुद्धदेव पृथु वीर अरजुन शिवाजी के,
फिरि फिरि हिय सुधि आवे रे बटोहिया।
अमर प्रदेश देश सुभग सुघर बेस,
मोरे हिन्द जग के निचोर रे बटोहिया।

(8)

सुन्दर सुभूमी भैया, भारत के भूमि जेहि,
जग रघुवीर सिर नावे रे बटोहिया।

राष्ट्रीय गीत -

(जन-गन-भारत)

(1)

मोरा वतन,मन,धनहि तन,
बसेला हिए,मन् प्रान बा।
करतानी अरपन,सब जनम
हे माई कोटि प्रणाम बा।

(2)

सम्राट भारत,भरत-भूषण
जन-जनार्दन जानतं।
नौ पुत्र आपन,त्याग के
युवराज जन से खोजतं।
भारत बा प्यारा,जग दुलारा
जड़ मूल से जनतंत्र बा।
जय हो जने,एह देश के
हे मातु कोटि प्रणाम बा।
मोरा वतन----------

(3)

जनमें ईहाँ कौशिक ललन
ऋषिराज विश्वामित्र जी।
जन क्रांति के,पहिले जनक
झकझोर डलनी विश्व भी।
रच देनी सृष्टि,एक नया
कहनी,सभी जन,एक बा।
जय हो जने,एह देश के
हे माई कोटि प्रणाम बा।

(4)

श्रीराम,राजा,राजा सुख,तज,
वास,बन चौदह सुदी।
बनवासियन में,रम के ही
अपनवनी, केवट,भीलनी।
बा ई धरा,जग में महा
जनमल,कई जन-राज बा।
वैशाली के जनतंत्र के
हे मातु कोटि प्रणाम बा।

(5)

एकलव्य,धनुही-धारियन में
नाम बा, वनराज के।
मत काटि दीं, दहिना अंगूठा
बन के,द्रोणाचार्य से।
यदि बन के, विश्वामित्र,राजा
राम बन के,खोजतीं।
फिर ना कभी,बैरंग लिफाफा
लौट पाईत,खेल से।

(6)

सदियों के जनता,राज से
अनमोल,हीरे,प्राप्त बा।
जय हो जनो,एह देश के
हे माई,तोह के, सलाम बा।
मोरा वतन----------

गीतकार- रघुवर दयाल सिंह

दूगो गजल

-जवाहर लाल बेकेस

(एक)

०रात म बाजत रहल जे सेज प पायल नियन।
भोर होते बहि गइल उ आँखिके काजल नियन।
०उनका भलही में मीलल होई चारदिन के जिन्दगी।
हमरा खातिर त मिलल बे जिन्दगी एक पल नियना
०छन में जरि के राखन हो जाय फूलन के सुबास।
आग लागल बा चमन में आज दावानल नियन।
०खुद के खोजे में हेरा गइलीं हम अपने आप में।
अपने सूरत अब लागे लागल इहाँ जंगल नियन।
पतित पावन रूप उनकर तिर्थ चारो घाम के।
देश ले उनका के जे हो जाये गंगाजल नियन।
एक दिन बेकस गजल के गाँव में आके तनी।
ओढ़ लीं हमरा गजल के रेशमी आँचल नियन।

(दो)

बात बढ़ते बढ़त का से का हो गइल।
जिन्दगी मौत के अब सजा हो गइल।
पा के जब ले हेराइल बानी जिन्दगी।
दुनिया के सम मजा बे मजा हो गइल।
जेकरा चलते सलियत जहर पी गइल।
उहे गलती अबकियो दफा हो गलि।
आजु बनि के बिगड़ का गजल आब रन।
गैर त गैर अपनो जुदा हो गइल।
काल्हु तक जे बचल ब्रहम चारी रहे।
आजु उहो शादी सुदा हो गइल।
बरका देली हम झगरा के जेकरा बदे।
जान मारेला ऊ आमदा हो गइल।

सम्पर्क : सम्पादक पनघट
बेकस निवास,नोखल,
रोहतास (बिहार) 802215

कौमी एकता

(प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के ईयाद में)

कवि-इंजीनियर सुधाकर सिंह
परमानंद नगर, रायपुर

(1)

कौम को,एकता बा, उपाय महा
एह देश में,लेष ना,संकट भारी।
जब से समराट,भईल अकबर
अपने ही उठावत,रोज कटारी।
कौम के एकता के प्रतीक बनल
तब दीन-ईलाही,बनल सुखकारी।

(2)

जब शोषण से,अकुलाई,गईल
धन चूस रहल गित गोर व्यापारी।
कौम के एकता,तबहीं लऊकल,
जब हिन्दु के नावं,जफर पतवारी।
जब झांसी,बनल,भूचाल महा
इक्यासी बरिस के जवान-बुढ़ारी।
गंगा,जी में,बांह चढ़ा दिहले
सेना,भाग चलल,तब गोरन-वारी।

(3)

कौम के एकता के प्रभाव रहे
हिल गईले ब्रिटेन,महा दुराचारी।
बापू के ललकार,हुँकार बनल
काटि गईले गुलामी के सीकर भारी।
कौम के एकता जब,टूटि गईल।
आंचर फाटि गईल,कलपी महतारी।
कौम के एकता के,ना तूरे कोई
भारत माई,रहल बिआ,पूत निहारी।

रोईं की गीत गाई

गजल

डॉ. जौहर शफियाबादी
खानकाहे जौहरे आजम गाजी नगर,
बीरगांव, रायपुर (छ.ग.)

इदर्द का सुनाई ई लोर का देखाई
अरमान के चिता पर रोईं की गीत गाई।

हहरत हिया में हमरा लहरत तूफान बाटे,
जिनगी के नाव कवना अब घाट पर लगाई।

अमृत का बाट में इ घोरल ह तहरे माहुर,
पीहिले बन के शंकर तोहरा के का पीआई।

कोइल के कूक सुनके कुहकत बा हमरो काया,
सब हीत मति जाके होने हंसी उड़ाई।

मिलल बा जवन हमरा किस्मत के अपना बखरा,
इ आग आउर के तना छाती के हम दबाई।

ए मोह का नगर के कारीख का कोठरी से,
चुप-चाप बबुआ जौहर नाता छोड़ा के जाईं।

नदी के धार जे मरूस्थल के ओरी फेर देवे ला,
उ नाता पानी के तरसत भूई से जोड़ देवे ला।

हिमालय लांघे के जेकर लगन आगे बढ़ावे,
उ चिंता गोर पिरइला के पीछे छोड़ देवे ला।

भरम बाचल बा ओकरे दम से नेहिया के जगत्तर में,
जे टू टूटल सनेही दिल के देखते जोड़ देवे ला।

कबो उ यात्रा के यातना से ना डरे राही,
जे चलते-चलते फोड़ा पाँव के सब फोड़ देवे।

भला ओकरा के केहु ना कही कहियों कहीं जौहर,
तनी सा बात पर जेकर के वादा तोड़ देवे ला।

किसानो की दीपावली और पूजा

डॉ. प्रभाकर सिंह एवं हेमन्त कुमार पाणिग्राही
उद्यानिकी विभाग,
इंदिरा गांधी कषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव शरीर मिट्टी, जल, वायु, अग्नि (शक्ति) एवं आकाश पंच तत्वों से बना है और किसी भी धार्मिक अनुष्ठान अथवा पूजा अर्चना के समय प्रमुख रूप से गणेश (वायु/प्राण/आत्मा/परमात्मा) भूमि (मिट्टी), कलश जल, नक्षत्र (आकाश) एवं शोडश माता (शक्ति/ऊर्जा) की पांच पूजाओं का प्रावधान है और ये ही तत्व जीवन के आधार हैं। जल ही जीवन है और अन्न ही ब्रह्म है। अतः इसकी पृष्ठ भूमि किसान और किसानी ही है। सामान्यतः त्यौहारों का सम्बन्ध किसी न किसी मिथक, धार्मिक मान्यताओं, परम्पराओं अथवा ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ा होता है। हमारी मान्यताओं के अनुसार दीपावली का एक प्रमुख कारण भगवान राम का रावण वध के पश्चात चौदह वर्ष बाद बनवास से लौटकर अयोध्या आने पर उनके स्वागत में पूरी अयोध्या की दीपों के प्रकाश से की गई सजावट से है, तभी से दीपावली का त्यौहार मनाने की परम्परा चली आ रही है।

दीपावली त्यौहार इस देश में हजारों वर्षो से किसी न किसी रूप में मनाया जाता है, किन्तु इसका वर्तमान स्वरूप पांच सौ साल से अधिक पुराना नहीं है। दीपावली यानि दीपों की पंक्ति। दीपावली प्रकाश पर्व है। दीप उत्सव अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व लिखे गये वात्सायन के कामसूत्र में कार्तिक अमावस्या को यज्ञ रात्रि के रूप में उत्सव मनाये जाने का उल्लेख है जिसके अनुसार दीपावली की रात्रि को यक्षो द्वारा अपने राजा धनपति कुबेर के हास–विलास में बिताने, सामाजिक क्रीड़ाओं और गाने बजाने और आमोद–प्रमोद का वर्णन है। दीपावली पर रंग–बिरंगी आतिशबाजी, बढ़िया पकवान एवं मनोरंजन के जो कार्यक्रम होते हैं ये यक्षों की ही देन है। सभ्यता के विकास के साथ–साथ यह त्यौहार मानवीय हो गया और धन के देवता कुबेर की बजाय धन की देवी लक्ष्मी की पूजा होने लगी।

वर्तमान में भी कई स्थानों पर दीपावली के अवसर पर लक्ष्मीजी के साथ कुबेर की भी पूजा होती है। कालान्तर में कुबेर के स्थान पर ऋद्धि–सिद्धि के दाता गणेश की पूजा की जाने लगी। यदि देखा जाए तो कुबेर मात्र धन के अधिपति हैं जबकि गणेश सम्पूर्ण ऋद्धि–सिद्धि के दाता माने जाते हैं। इसी प्रकार लक्ष्मी मात्र धन की स्वामिनी ही नहीं वरन ऐश्वर्य एवं सुख–समृद्धि की भी स्वामिनी मानी जाती है। इस कारण कुबेर की जगह लक्ष्मी एवं गणेश ने ले लिया।

एक अन्य धार्मिक कथानुसार राजा बलि ने देवताओं के साथ लक्ष्मी को बन्दी बना लिया। लक्ष्मी को मुक्त कराने के लिए भगवान विष्णु ने वामन अवतार में राजा बलि से तीन पग धरती मांग कर धरा (पृथ्वी) और लक्ष्मी को मुक्त कराया था। इस अवसर पर राजा बलि ने भगवान से वरदान लिया था कि जो व्यक्ति धनतेरस, नरक चर्तुदशी (रूप चौदस) व अमावस्या को दीपक जलाएगा, उस पर लक्ष्मी की कृपा होगी तभी से इन तीनों पर्वो पर दीपक जलाया जाता है।

त्यौहार, उत्सव व मेले आदि प्रायः फुर्सत विश्राम के क्षण दिनों में ही अच्छे लगते है। चूंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है और 70 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि पर निर्भर करते हैं अतः कृषि में फुर्सत के क्षण तब आते हैं जब फसल पकने लगती है। इसीलिए गर्मी–सर्दी के सन्ध्याकाल जब रबी की फसल पकने को होती है सर्दी समाप्त होकर गर्मी आने को होती है तो एक प्रमुख त्यौहार होली का आता है, इसी प्रकार जब खरीफ फसल पकने को होती है, गर्मी जाने को और सर्दी का आगमन होता है तो भारत का प्रमुख दीपावली त्योहार मनाया जाता है। कृषि के क्षेत्र में मौसम (ऋतु) का अभिन्न योगदान रहता है। प्राचीन साहित्य में ऋतुओं का विस्तार से वर्णन किया गया है कि इन ऋतुओं में क्या–क्या कृषि कार्य करने चाहिये, भोजन में क्या–क्या सावधानियां रखनी चाहिए।

दीपावली का त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को होता है, परन्तु इसे प्रायः चार दिन धनतेरस, नरक चतुर्दशी व अमावस्या एवं पड़वा अन्नकूट तक मनाया जाता है और इन अवसरों पर अलग–अलग पूजाओं का प्रावधान है, चूंकि दीपावली का पर्व मुख्यतः लक्ष्मी पूजा, धन एवं ऐश्वर्य की कामना के लिए होता है और अपवित्र गन्दे एवं दुर्गन्धमय स्थानों पर लक्ष्मी नहीं आती, इसलिए लोग दीपावली के पूर्व अपने–अपने घरों, देवालयों और प्रतिष्ठानों में साफ–सफाई में लग जाते है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी महिलाएं गेरू और गोबर से घर आंगन में अल्पना–स्वास्तिक और रंगोली बनाती है। गोबर से लीप कर, चूने से सफेदी कर दीवारों पर गेरू से चित्रकारी करती हैं। मांगलिक अनुष्ठान के समय गोबर से धरती को लीपकर पवित्र बनाने की परम्परा आज भी मौजूद है।

वनस्पति पूजा :- भारत में कृषि को विशेष महत्व दिया गया है। यहॉ अन्न को लक्ष्मी स्वरूप अन्पूर्णा माना गया है। धान को लक्ष्मी रूप मिला है। अतः दीपावली से पूर्व धन तेरस को खरीफ फसल (धान्य) की कटाई का शगुन किया जाता है, नई फसल घर में लाई जाती है धनतेरस के दिन अब फसल की जगह धन एवं ऐश्वर्य के प्रतीक के रूप में स्वर्ण, चांदी, बर्तन व वाहन आदि खरीदने लगे हैं। इस दिवस को भगवान धन्वतरी आयुर्वेद के जनक की जयन्ति के रूप में भी मनाया जाता है। प्राचीन भारतीय दर्शन में वनस्पति पूजन का विशेष महत्व है, वनस्पतियॉ मानव जीवन की सम्पूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करती है। हमारा भोजन, वस्त्र, गृह, पशुपालन स्वास्थ्य और कृषि आदि सभी कुछ वनस्पति जगत से ही प्राप्त होता है। वनस्पतियों में ऐसी जडी–बूटियां होती है जो हमें व कृषि (खेती) को रोगों से बचाती हैं।

धनतरेस के अगले दिन कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को रूपचौदस के रूप में मनाई जाती है। रूप चौदस को छोटी दीपावली भी कहते हैं। इस दिन घरों की धुलाई–सफाई करने के बाद दीपक जलाकर दरिद्रता की विदाई की जाती है। वस्तुतः इस दिन अलक्ष्मी (जो दरिद्रता की प्रतीक है) की जयंती होती है।

लक्ष्मी पूजा :- कार्तिक की अमावस्या को दीपावली का प्रमुख दिन होता है। दीपावली के दिन लोग खील, गट्टा, प्रसाद नई फसल के रूप में धान्य की बालियॉ, मूंगफली, बेर आदि पूजा के लिए खरीदते हैं और सांयकाल में बंदनवार व रंगोली सजाकर लक्ष्मी –गणेश की पूजा करते हैं, पूरे घर में दीप जलाकर माता लक्ष्मी का आह्वान करते हैं। व्यापारी वर्ग दीपावली के दिन ही नई हिसाब–बही बनाता है और किसान अपने खेतों में दीपक जलाकर अच्छी फसल की कामना करते हैं।

गौ पूजा :- दीपावली पर लक्ष्मी पूजा से पूर्व गौ पालन करने वाले गाय की पूजा करते हैं। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का विकास पशुपालन से ही प्रारम्भ हुआ है। गाय को भारतीय संस्कृति में माता का स्थान दिया गया है। गाय से हमें कृषि के लिए बैल मिलते हैं। खेत के लिए उत्तम खाद मिलता है। गो–मूत्र के रूप में कीटनाशक मिलता है तथा हमें दूध, दही, छाछ, घी एवं मक्खन मिलता है जो हमें शक्ति देता है, स्वस्थ रखता है इसीलिए दीपावली के मांगलिक पर्व पर गौ पूजा के लिए महिलाएं गायों को दिन में नहला–धुलाकर मेहन्दी लगाती हैं। गाय के सींग को हिरमिच (रंग) से रंगा जाता है। गले में सूत–लच्छा–मोरपंख आदि की मालाएं डाली जाती हैं। रात्रि को गाय की पूजा कर अर्ध चढ़ाकर सुन्दर भविष्य की कामना की जाती है।

धान्य पूजा :- दीपावली आलोक उत्सव ही नहीं वरन् अन्नोत्सव भी है। यह समय खरीफ फसल के पकने एवं रबी की बुवाई का होता है। दीपावली के अवसर पर खेतों की फसल की कटाई का शगुन कर रात्रि को उसकी पूजा की जाती है। लक्ष्मी को धान्य प्रदत्त देवी के रूप में ही सर्व प्रथम पूजा गया। कालान्तर में जब आदान–प्रदान के लिए धान्य का स्थान धन (मुद्रा) ने ले लिया तो लक्ष्मी को धन देवी के रूप में पूजा जाने लगा। जिसे आज प्रत्येक वर्ग अपने स्तर एवं सामर्थ्य के अनुसार पूजते हैं।

गोवर्धन पूजा :- दीपावली के दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोर्वधन पूजा की जाती है। गोर्वधन पूजा वास्तव में गो संवर्धन और गोबर के महत्व को समझाने के लिए की जाती है।

अन्नकूट पूजा :- इसी दिन नई फसल शुभ हो, इसलिए सर्वप्रथम देवताओं को अर्पण करने के लिए भगवान को नए अन्न के मिश्रण से तथा विभिन्न प्रकार की सब्जियों के मिश्रण से तैयार छप्पन भोग लगाया जाता है जिसे अन्नकूट कहा जाता है।

बैल पूजा:- हमारी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि का मूल स्तम्भ है। बैल के हल द्वारा जो खेती की जाती थी, उससे हमारे खेतों की उर्वरा शक्ति बनी रहती थी, साथ ही विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधों का संरक्षण भी होता था, बैल की पूजा के पीछे यही रहस्य है कि हमारी खेती सनातन बनी रहे।

रात्रि को बैलों की तथा बैलचालक सहयोगी/ग्वाला/हाली की चन्दन अक्षत से पूजा की जाती है। कपूर या घी की ज्योति से दोनों बैल एवं चालक की आरती उतारते है। अनाज –पकवान, पूवा–पापडी का भोग लगाया जाता है। बैल चालक को अन्न वस्त्र व नगद राशि भेंट दी जाती है । पूजा के बाद बैलों को प्रदर्शन करने हेतु ग्राम के बाजार से निकाला जाता है, जहाँ ग्रामवासी विभिन्न प्रकार की अतिशबाजी से बैलों का स्वागत करते है।

गणेभा/वायु (प्राण) पूजा :- ऊँ महिमा जासु गं राऊ, प्रथम पूजयते नाम प्रभावु। गणपति प्राण प्रदाता–संकट त्राता है। वायु (प्राण) के बिना जीवन सम्भव नहीं है। अतः सर्व प्रथम प्राण (वायु) के रूप में गणपति को पूजा जाता है।

भूमि/मिट्टी पूजा :- गणेश पूजा के पश्चात भूमि पूजा का प्रावधान है। ऊँ पृथ्वी त्वया घृतालोका देवि कृकृकृ भारतीय जीवन दर्शन पृथ्वी को माता मानता है। यही कारण है कि हम हमारी धरती को सदैव सस्य श्यामला (हरी–भरी) देखना चाहते है।

कलभा (जल) पूजा :- जीवन जल से ही उत्पन्न होता है। जन्म से मृत्यु तक जल व्यक्ति से जुड़ा है। जल के बिना शारीरिक, मानसिक व भौतिक शुद्धि नहीं होती। जल से शुद्धि के लिए ऊँ अमष्तो पस्तरण मसि स्वाहा। पंच पूजा में जल के प्रतीक कलश की पूजा की जाती है। ऊँ कलशस्य मुखे विश्णुकृकृ ऊँ अपां पतये वरूणाय नमः। कृषि दर्शन में भी जल को कृषि का प्राण माना है।

आकाभा (नक्षत्र) पूजा :- पंच तत्व एवं पंच पूजाओं में आकाश (नक्षत्र/नवग्रह) की पूजा का विशेष उल्लेख है। भारतीय दर्शन में नवग्रहों का उल्लेख है, जैसे सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु। ऊँ पूज्या सूर्यादि नव ग्रह्म प्रीयन्तां न मम्ः। उपरोक्त सभी ग्रहों का प्रभाव मानव जीवन व कृषि पर भी पड़ता है। ग्रह हमारे कृषि कार्यो में कैसे लाभान्वित करते है, इसका वर्णन हमारे शस्त्रों में दिया गया है।

अग्नि (ऊर्जा/भाक्ति/मातृ) पूजा :- पंच तत्व में अग्नि भी सम्मिलित हैं ऊर्जा/शक्ति के अभाव में जीवन में गति सम्भव नहीं है। अतः पंच पूजा में अग्नि के प्रतीक रूप में शक्ति/माता शोडश मातृ का पूजन का विशेष महत्व है।

भारतीय संस्कृति में यह नियम बन गया है, जिससे भी लाभ मिले, उसके प्रति कृतज्ञता जाहिर करने के लिए पूजा की जाने लगी और यही पूजाएं हमारी कृषि एवं जीवन पद्धति का अंग बन गई। जिन घरों में शान्ति और प्रेम का वातावरण रहता है, जहाँ श्रद्धा एवं संतोष रहता है वहाँ लक्ष्मी धन, ऐश्वर्य अपने आप आ जाती है। सभी भूतों में लक्ष्मी विराजमान रहती है। हमें उसका आह्वान करना चाहिए।

या देवी सर्व भूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थितां।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

***

सर्वदा भगवान में विश्वास रखो ।

भुलाइल-बिसरल गीत

भोजपुरी के शेक्सपियर भिखारी ठाकुर आ रण बांकुरा वीर कुंवर सिंह के इयाद में

भोजपुरी के सेक्सपीयर स्वर्गीय भिखारी ठाकुर आ उनके गीत जवन उनका ड्रामा पियवा निशईल, बेटी बेचवा, मलेछुआ के माई, बिदेशिया आदि से बटोर के स्वादिष्ट व्यंजन परोस के हम अपना के धन्य मानत बानी

(1) **नालायक पूत :-**

तहार देखनी, जवानिया के जोर बबुआ।
बड़ भइला पढ़े बइठवंनी,
जननी कि करबा–अ अंजोर बबुआ।
बुढ़वा के दिहल–अ धसोर बबुआ।

(2) **बेटी बिदाई :-**

जमते मैआ माहुर दे के,
काहे ना दिहलू मारि।
तेल लगाके गोद खिलाके,
काया के दिहलू संभारी।

(3) **मयभा मतारी :- (बेमेल बियाह)**

घर के काम कइला से, पियहा छुतिहर घइला से,
कवना करनिया में चूकनी हो बाबूजी।
दिन–रात होला झड़ी, कब से भरल नड़ी,
नरक बीगत जिनगी बीतता हो बाबूजी।
मुखवा में दांव नइखे, निकलत बात नइखे,
कतना से सहीं दुख हमहूं हो बाबूजी।

(4) **मजदूरी :-**

कइले दिन–भर बनिहारी,
मीलल तीन सेर खेंसारी।
डांड़ हिला के मति भरमा के,
ले गईले भिखारी।

(5) **भोजपुर जिला :-**

धन–धन हवे भोजपुर जिला,
धन ईहवा के माटी।
ना ही कवनो कामे छूटल,
नाहीं कुछओ बांची।

(6) **गंगा स्नान :-**

चलअ हो गोरिया,
करे गंगा असनानवा।
धीरे–धीरे बोल–अ ना त,
सुन ली मरदनवा।
गेठरी में बान्ह नून,
सतुआ पिसनावा।
चलहु गोरिया।

(7) **डगरिया जोहत गोरिया :-**

डगरिया जोहत ना हो, डगरिया जोहत ना।
बीतत बाड़े आठो पहरिया हो डगरियाकृकृकृकृ।
धोती पटधरिया, ले के कान्ह प चदरिया,
हो बबरिया झारि के ना।
केई रे लगवले हमरा, जरिया में अरिया हो, लहरिया उठे ना।
दुख में होला जतनरिया हो, लहरिया उठे ना।
कहत भिखारी, मनवा करे हर घरिया हो, नजरिया भर के ना।
देखती आठो पहरिया हो, नजरिया भर के ना।

(8) **लहरिया उठे ना :-**

ऊधो बाबा कहिह, विदेशी से खबरिया हो, लहरिया उठे ना।
द्वारिका पुरी में जाई, हमनी के बिसराई।
कुबरी से कईले ईयरिया हो, लहरिया उठे ना।
कतना के राखीं थाती, नींद नाहीं आवे राती।
दिल से उतरे ना संवरिया हो, लहरिया उठे ना।
ऊधो बाबा दीह पाती, पढ़ि के जुड़ाइल छाती।
ना त मरि जाइबा, खाई के जहरिया हो, लहरिया उठे ना।

(9) **ड्रामा के प्रारम्भ में राम भजन के बानगी :-**

चउका प अवध–बिहारी,
राम–राम हरे–हरे।
लोढ़वा घुमावे महतारी,
राम–राम हरे–हरे।

(10) **ई गीत स्वर्गीय भिखारी ठाकुर के ना ह। ई त ढंका ह जवन 1857 में पहिलका स्वतन्त्रता संग्राम के समय रणबांकुरा वीर कुंवर सिंह के घायल भइला प उनकर भाई वीर अमर सिंह के वीरता के सम्बन्ध में वीर रस के कवि "भानू" द्वारा गावल गइल गीत :–**

अंग, अंग, अंग के, बेलंग क के बंग के।
जंग में खेलल खूब, लाल रंग होरिया।
मगह कलिंग के जे धारल आ हांकल डींग,
सुनते परे ला डांक, मुंह में फेफरिया।
गोरन के फौज घहरात, घन–घोर आवे,
छपले आकास उड़ियात आवे धुरिया।
कुंवर अमर सिंह, ललकार देले भोजपुर में,
जुटले जवान भानु, सोन के कगरिया।
दमकि दुनाली चले, लाठी हाली–हाली चले,
हेलो हेलो ओने, एने जय महावीरिया।
छुपुकि छुपुकि गोरा, साधे स निशान तले,
लपकि लपकि रोके, लाठी भोजपुरिया।
कुंवर अमर सिंह, कहर करे घोड़वा प,
गोरा लोग के छुए दे ना, तनिको अंगुरिया।

***

स्व. राधा मोहन सिंह
ग्राम/पोस्ट - परासरा, जिला - बलांगीर (उड़ीसा)

भोजपुरी-सौरभ के प्रकाशन पर
हमारी हार्दिक शुभकामनाएं...

प्रो. संजय कुमार (अधिवक्ता)

मेसर्स आर्या कन्सलटेन्सी

रोहिणीपुरम, रायपुर (छ.ग.)

भोजपुरी-सौरभ के प्रकाशन पर
हमारी हार्दिक शुभकामनाएं...

प्रो. ए. के. मिश्रा
9926204140

बाम्बे विजीलेन्स सिक्यूरिटी

जीवन बीमा मार्ग, पायल होटल के सामने,
मेन रोड, रायपुर (छ.ग.)
फोन : 0771-32521136
मो. : 9977470684, 9827485191
ई-मेल : mishra_bvs@rediffmail.com

जय गोवर्द्धन गिरिधारी

-भगवान सिंह भास्कर

हे भारत के भाग्य विधाता
जय गोवर्द्धन गिरिधारी।
भारत मइया तड़पत बाड़ी
युग युग तूं ही अवतरी ।।
जब जब भार पड़ल धरती पर
तब तब तूं लेलू अवतार।
सब दुष्टन के नाश तूं कइलू
भगतन के कइलू उधार
इकटक ध्यान लगवले भास्कर
विनय करीले बार-बार ।
हे भारत के भाग्य विधाता
फेर आ जइतु एक बार ।।

महामंत्री
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना
(18 वाँ आ 19 वाँ सत्र)
सम्पर्क : प्रखण्ड कार्यालय के सामने, लखरावँ, सिवान(बिहार) 841226

माँ तो बड़ी महान है

माँ की महिमा क्या बतलाए
माँ से ही तो संसार है
गिनती न हो पाए जिनकी
उतने माँ के उपकार है।
बचपन से आज तक पाला
परेशानियों में भी संभाला ।
सदा प्रेरक बनकर हमको
विजयी होना सिखलाया ।
हमें दिए स्वादिष्ठ व्यंजन
खुद ने रूखा सूखा खाया ।
ममता की मूरत हर माँ को
मेरा बहुत प्रणाम है ।
माँ से बढकर कोई नही है,
माँ तो बड़ी महान है।

-सत्येन्द्र कुमार गौतम

मन के दरपन

- श्याम कांत ओझा निराला

मन के दरपन के कइसे
बखान हम करी ।
का कहीं ना कही
बयान कइसे करी।
दरपन लागित जब हाथे
सूरत देखती हम
मूरत केकर बा दरपन में
जनि जइती हम।
दर्पन देखले बिना
मोर बहकल कलम
त सजल होई सोंचो
उ मन के दरपन।
प्रेरक बनि के इ दरपन
कविता हो गइल
सजल बहुए कि ना
अब कहीं कइसे हम।
भावना में ना बडुए
मोर बहकल कलम
ललक रहे देखेके कबो
मन के दरपन।
मन के मिलल लगन
त लिखत बानी हम
अन्तथा केहू ना लीही
प्रार्थी बानी हम।
मन के कोना में कवनो
कदर जे रहले
कविता में बा अब लउकत
इ मन के दरपन।

भोजपुरी के आदि कवि-बाबा कबीर

-अभय सिंह (श्री लेदर्स)

जब मुगल विजेतावन के, घोड़न के टॉप से,उड़ल धूरि से भारत की सीमांत भर गईले रहै। जब भारत के पुण्य भूमि पद दलित हो चुकल रहे। जब भारत के जनता राजनैतिक हार के स्वीकार कर चुकल रहें। तब साहित्य के आसमान पर चमकल कबीर के वाणी पहिलका बेर सुनाई पड़ल रहे जवन सबसे ज्यादा साफ आ आपन लागत रहे। काशी के कबीर अपना भोजपुरी वाणी आ अपना खंजड़ी प ताल देत जन मानस के रिझावे लगले।

व्यक्तित्व:- कबीर जन्मजत विद्रोही रहन। उनकर मन आ विचार, अखण्ड आत्म विश्वास आ अदम्स साहस से भरल रहे। ऊं. सिंकदर लोदी के सामने शीश ना झुकवले। हिन्दु आ मुसलमानन् के प्रबल वैमनस्य उनका के तनिको बिचलित ना कर पवलस। ऊ योगियन के प्रभाव से घवाह ना भईले आ ना ही सूफी अपना संप्रदाय में उनका के मिला सकले। अपना अटपती सधुक्कडी वाणी से उत्तर भारत के नेतृत्व करत रहले। सुकराते जईसन ऊ तीत बात कहत रहन आ सुकराते जईसन, शासनक वर्ग,कबीर के विष के प्याला पिए के देलस। वाह रे भोजपुरिया कबीर। विष पी के पचा गईले। लोग उनका के ताकते रहि गईल। उनका वारे मैं डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी जी लिखले बानी कि ऊ सिर से पांव तक मौला, सुभाव से फक्कड़, आदत से अक्खड, भक्त के सामने निरीह, आंडबरी के के सामने प्रचण्ड, दिल से साफ,दिमाग से दुरूस्त भीतर,से कोमल,बाहर से कठोर,जन्म से अछुत आ कर्म से बंदनीय रहन ।युगावतार के शक्ति आ विश्वास ले के पैद भईल रहन। युग प्रर्वतन के दृढ़ता आ क्षमता उनका में रहे एही से युग प्रवर्तन कर सकले।''

धार्मिक मान्यता:- संत कबीर,गुरू रामानंद,जे तुलसीदास के भी गुरू रहन,से राम नाम के दीक्षा ले लै रहन वाकिर कबीर के राम रामनंद व तुलसी के राम से भिन्न वाडे। जहॉ तूलसी के राम सगुण साकर परमब्रम्ह हबे। नर के रूप में नारायम हवे ओहिजे कबीर के राम निर्गुण निराकार हवे। घट-घट व्यापी हवे जिनका के देखल सुनल नईखे जा सकत। उनकर प्राप्ती ज्ञान से ही संभव बा। कबीर के राम के कतही खेजे के नईखे ऊ त कण-कण में बसेले। उनकर राम सबके हृदय में बसेले। उनके शब्द में आईल बा।

हिरदे सरोवर है अविनासी।

उनकर राम दशरथी राम ना हवे बलुक परमेश्वर के प्रतीक हवे। उहेकें लिखले बानी:-

दसरथ सुनि तिहु लोक बखाना

राम नाम का भरम है आना।

कबीर के मतानुसार परमात्मा के पावे खातिर एह ठगनी,मयावी संसार के त्यागें के पड़ेला। ई संसार माया से ओत-प्रोत बा। माया बड़ा रूपवती ह। ठगनी आ चितचोर ह। माया जीवन में वासना के जनमावेले। माया के पांच बेटा काम,क्रोध,मद,मोह आ लोभ हवे। जस माई तस धिया। ई पांचो मानव जीवन के पतन के कारण बा। कबीर के कहनाम बा--

संसार ऐसा सपन जैसा

जीवन सपन समान।

संसार दुख के जंजाल ह। दुख त माया के फल ह। एह सत्य के ज्ञानिए लोग समझ पावेला।

संसार के लोग माया से भ्रमित हो के दुख बटोर के सुखी मान लेला। एह भाव प बाबा कबीर अपना कडईल पन से ना चुकले आ कहले-

सुखिया सब संसार है,खाने और सोवे।

दुखिया दास केबीर है,जागे और रोवे।

कबीर दास आडंबर के घोर विरोधी रहन। हिन्दु आ मुसलमान केहू के ना बकसले। दूनों के डांटत आ समझावत कहले-

मन ना रंगावे,रंगावे जागी कपडा।

दढ़िया बढ़ाए जोगी हो गइले बकरा ।।

कंकड़ पत्थर जोड़ के मस्जिद लिया बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे,क्य बहरा हुआ खुदाय॥

रचना :- बीजक कबीर के एके प्रमाणिक रचना मानल जाला। बीजक के तीन भग वा साखी,शब्द आ रमैनी। ऐसे त कबीर के नाम से अनेक पद लोक-गीत के रूप में प्रचलित बा।

समाज सुधारक :- सच पूछल जाय त कबीर दास से ऊंचा समाज सुधारक कमें बा लोग। साहित्य के कलंक धोवत कबीर के वाणी अनमोल बा।

1. जाति पांति पूछे नहि कोइ।
   हरि को भजे सो हरि का होई।
2. बड़ा हुआ तो क्या हुआ,जैस पेंड़ खजूर
   पंथी को छाया नहीं,फल लागे अति दूर।
3. माखी गुड़ में गड़ी रहे,पंख रहो लिपटाय।
   हाथ मले और सिर धुने,लालच बुरी बलाय।
4. पोथी पढि-पढि जग मुंआ,पंडित भया न कोय
   ढाई आखर प्रेम के,पढ़ सो पंडित होय।

रहस्यवाद:- कबीर आत्म,परमात्मा के बीच में माया के करतूत के रहस्य से परदा उठवले बानी-

1. जल से कुंभ,कुंभ में जल बा
   भीतर बाहर पानी।
   फूटल कुंभ जल जलहि समाना
   यह तत है विज्ञानी।
2. एक अचंभा देखा रे माई,ठाढा सिंह चराने गाई।
   पहिले पूत पाछे भई माई कुत्ता के ले गई बिलाई।
3. दूलहिन गावहु मंगलचार
   हम घर आए राजा राम भरतार

कबीर के भाषा:- अपना भाषा के विषय में बाबा कबीर खुदे लिखले बानी-
मेरी बोली पुरबी ह पर खड़ी बोली ह। जवना में अरबी,फारसी,भोजपुरी, राजस्थानी आ बृज भाषा के पुट बा।
डां रामचन्द्र शुक्ल जी कबीर के भाषा के बारे में लिखनी-
''सधुक्कड़ी अटपटी बानी''
डां.हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्द में-
''भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था।'' वे वाणी के डिक्टेटर थे।
डॉ. श्याम सुन्दर दास के शब्द में -
''कबीर की भाषा में खरेपन की मिठास है जो उन्ही की विशेषता है।''
कबीर की भोजपुरी :- उनका वाणी में पूरबी (भोजपुरी) में ज्यादा रमल रहे। ऊँहा के ठोक ठेठा के बोलत रहीं जवना में अक्खड़पन के झलक रहे। ऊँहा के भोजपुरी के प्रथम कवि मानल जा सकेला।

--o--

अनमोल फुटेहरियार

लेखिका - श्रीमती सरिता सिंह
हर्षित टॉवर, रायपुर

(1)
आटा में सनाई खास,
मांड़त में बढ़े सांस
तबही त बने,अनमोल फुटेहरिया।

(2)
बूंट के छपाई अरु
भांड में भुजांई तब
जांत में पिसाई होवे तबे सतुहरिया।

(3)
सातु सतमेंझरा के
बातिया अलग बाटे
खांए में सवाद के बढ़ावे फुटेहरिया

(4)
जवाइन,मगरइल,लागे
काली रे मिरिचवा से
लहसुन,आदिया बनावे फुटहेरिया

(5)
हरियर मिरचाआ,
धनिया के गम गम
नीबू के खटाई, त बढ़ावे चटकरिया।

(6)
ऊपर से करुआ तेल
सातु बनले पंच मेल
चीखे खातिर हाथवा बढ़ावे भोजपुरिया।

(7)
लिट्टी के बनावे गोल
भीतरी में पंच मेल
भूमि गर्म अमृत पचावे फुटहोरिया।

(8)
आड़वा बोझाई गइले
गोइठा लहक गइले
गते गते अगिया मघेस फुटहरिया

(9)
लिट्टी के बोझाई शुरु
चट पट पलटे शुरु
चारो ओर एक सा सिकाई फुटहेरिया

(10)
भउर खउराई गइले
लिटिया तोपाई गइले
सोंन्ह सोन्ह गमके ला भोग फुटहेरिया ।

(11)
गरमी से फाटी जाला
लिट्टीया चटकि जाला
तब ही नवेल बनेला फुटहेरिया।

(12)
पांच-सात ऐके साथे
रामछी में डाले जाले
दूनो ओर जोर से ढुलावे भोजपुरिया ।

(13)
भांवर भोग उज्जर भइले
नीके से झरइला प
घीव में डुबाई के बने लाँ फुटहोरिया।

(14)
चोखा में ना,कौनो द्योखा
स्वादवा में,बा अनोखा
अघाइलो में भूखिया जगावे फुटहोरिया।

(15)
टूंगी टंगी मरिचा,बा
अदरख पोरे पोरे
कतरल लहसुन मिलावे भोजपुरिया ।

(16)
भउर में टमाटर आलू
भउरे में भाटा कालू
हरियर द्यनिया सजावे भोजपुरिया।

(17)
तातले मिसत बाटे
लोग ललचात बाटे
नून तेल करूआ मिलावे भोजपुरिया

(18)
भूखिया बढ़ावे चोखा
बाकी सब भुलावे चोखा
सबके के अपना बनावे भोजपरिया

(19
खाना में पसंद खास
लिट्टी-चोखा के भुखास
आटा सातू,टटके जुटावे भोजपुरिया।

भोजपुरिया श्रमवीर

(1)

हे भोजपुरी,रस से भरी
तव जोश भी दमदार बा।
तहरे परिश्रम से जमल
ई सकल कारोबार बा।

(2)

चल रहल,लोहा ढलाई,
चढ़ गईल,ऊँचा चढ़ाई
राज्य छोट-हन छत्तीसगढ़ के
देश में उजियार बा।

(3)

तहरे जवानी,के कहानी
गा रहल,इतिहास,कब से।
तू श्रमिक,तहरे से विकसित
ई सजल दरबार तब से।

(4)

तू दिया अंधियार के
तम के खदेड़े में निपुण
जग के अंजोरिया बॉट के
तहरा बदे तम ही रहल।
हे कर्मयोगी सद्गुरु
गीता के जीवन जी रहल
बाकी जने तो बांचते
तूं तार लुगरी सी रहल।

(5)

काम के पूजा जरुरी,
दाम में अंधेर बा।
धैर्य अपना ल सखे,
दिन के भी बलदत्,देर ना।

(6)

अपने ही सृष्टि पर कुठारा
मत चला,ढह जाई त।
कर्म-ही ना रह गईल
त मान भी घट जाई त।

(7)

राज के ऊँचा सूनाला
ऊँचे सुर में गावल चाही
भोजपुरिया मजदूरन के मत
महलन तक पहुचावल चाही।

कवियत्री- कु. ऋचा सिंह
बाल्कोनगर, कोरबा

बसंत गीत

ऋतुराज बसंत के अंतपुर से
कब फगुनी तूं आ-धमकी।
अब ना सिहरन,नाही ऊमस
मधुरस मौसम आ टपकी।
तूं अईलू,स्वागत बा गोरी
प्रीत गगरिया से- छलकी।
बाग-बगैचा,खिल-खिल,मुसकी
मन उमंग,तनवा दमकी।
ई बौराईल भंवरन के बहकल देखिं
कलियन के अधरन के चमू
एक-एक करके,सबकी।
पा के दंश,और खिल गईली
नयनन् से मारे मटकी।
फगुनी तूं,बच्चन मधुशाला
मधु से घट भर दे सबकी।
रानी,कानी,नई,पुरानी
सबके लागे,जस टटकी।

ग़ज़ल

बनावल मुस्काईल अऊर हसल झूठ बा।
अब ई सच्चाई ना रही अटल झूठ बा।

दोसरा में हक जमा के बइठ गईल,
अपना में देबे दी दखल झूठ बा।

ढोंगी कब हूं छोड़ दी आपन रहिया,
ई केहूं से बात का पचल झूठ बा।

केहूं के ना पुछले रगल जी अत में ,
खुब कर मुअला पर हलचल झूठ बा।

जोड़-घटना- गुणा- भाग उचित रहे,
ये करा बाद के हल अइल झूठ बा।

ख के नाम कमइल गीत ज़ल,
धता से कलम चलल झूठ बा।

रामेश्वर शर्मा
(मेश्वर मिलके सामने) नगर मार्ग, बढ़ई पारा
रायपुर (छ.ग.) मोबाईल-09302179153

जाड़ा आईल

अकुलाइल आ भुलाइल, ना जाने कहां से आइल,
बयार का खिलखिलाइल, कि समूचा देह सिहराइल.
रात भर ई बढ़िआइल, बाकिर भर दिन बिलबिलाइल.
दिवस मुट्ठी भर कहाइल, काम लेकिन सब निपटाइल.
तनिका दिन जब घमाइल, मेट गइल सब मिलमिलाइल.

सांझ होत पिलपिलाइल, भर रात लागे खिसिआइल.
सूरज देखत लजाइल, जाने केने द घुसिआइल.
सभे डाल जे फुलाइल, ह मौसम जाड़ा के आइल.

अंकुश्री
सी/204, लोअर हिनू,

गीत

बसंत रितु

-डॉ. अजय कुमार ओझा

मौसम बदललति धरती, कइली सिंगार हो,
आव बसंत रितु, स्वागत तोहार हो।

००

सुरूज के पहिली किरनिया चादर बिछवलसि हो,
चिरई के कलरव संग, दुअरा बहार हो।
आव बसंत रितु, स्वागत तोहार हो।

००००

बहे पुरवइया जइसे, मधुरी बेयारिया हो,
जाड़ा के ठिठुरन गइल, गरमी तेयार हो।
आव बसंत रितु, स्वागत तोहार हो।

००००००

बगिया में फूल खिलल, आम मोजराइल हो,
कोइलर के कुहुकि में त, ललसा हजार हो।
आव बसंत रितु, स्वागत तोहार हो।

००००

खेतवा में लहरे तीसी, बूँट-खेसारी हो,
गेहूँ के बाली झूमे, सरसो के लहार हो।
आव बसंत रितु, स्वागत तोहार हो।

००००

विद्या के देवी मइया, शारदा आगे अइली हो,
उन्हुकर पूजा-अर्चन के घर-घर तेवहार हो।
आव बसंत रितु, स्वागत तोहार हो।

०००००

आपस में मिलि जूलि समें फगुआ सुनाई हो,
मनवां मारे जाई, खुशिया हजार हो।
आव बसंत रितु, स्वागत तोहार हो।

प्रधान सचिव
जमशेदपुर भोजपुरी सहित्य परिष्द

भोजपुरी माटी के गौरव : चंद्रशेखर

-डॉ. प्रभुनाथ सिंह

चंद्रशेखर जी ने कभी हमरा बहुत नजदीकी नइखे रहल, बस थोड़ा-बहुत परिचय रहल बा। कभी कभार उनका से मिले के अवसर उनका साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली वाला आवास पर आ मोंड़सी आश्रम में मिल चुकल बा। जयप्रकाश नगर, बलिया में आयोजित समारोह आ भोजपुरी के साहित्यक-सांस्कृतिक मंच पर उनका साथे उठे बइठे, उनका के सुने आ सुनावे के कुछ सुखद अवसर के आपन एगो अलग अनुभव भी रहल बा। कहीं भी कवनो रूप में उनकर दर्शन भईल त लागल की ऊ आदमी अपना तरह के एगो अलग राजनेता रहे, जेकरा राजनीति पर ओकर जीवन दर्शन, विचार आ चिन्तन हावी रहे। ऊ आदमी कभी भी पीछे मुड़ के ना देखलस कि ओकरा पीछे चलेवाला कोई बा भी की ना। एकला चलो ''वाला'' राह के राही बराबर अपना मंजिल का ओर चलत रहल, जवन ठीक बुझाइल ऊ बोललस, बे परवाह होके जवन राष्ट्रपति आ मानव हित में रहल। आज के वोट के राजनीति पर एकर कवन असर होई ई बात ऊ कबोनास सोचलस। गॉधी, विनोबा आ जयप्रकाश के राजनीतिक विचारधारा आ चिंतन के अंतिम कड़ी के रूप में चंद्रशेखर जी के देखल जा सकेला। एह दुनिया से उनका उठ गइला के बाद आज अईसन बुझा रहल बा कि एक देश में वर्तमान राजनीतिक इतिहास के असलिये पनवा फाड़ट के छितरा गदल बा।

चंद्रशेखर जी के ऊँचाई दलगत राजनीति के दायरा में बॉध के ना ऑकल जा सके। कवनो आदमी के जब कभी राजनीति के चसका लागल आ ऊ उनका साथे जुड़ल त ऊ चुनाव जीतल, आ जब मन में आइल उनका दल के छोड़के दोसरा दल में भी चल गइल। अइसन आइल-गइल राजनेता लोग से उनका कभी भी, कवनो अनबन ना भइल। व्यक्तिगत संबंध में खटॉस ना आइल। 'मँहुआ से तीन खुँट' अइसन लोग आज भी कवनो ना कवनो राजनीतिक दल में पलात-पोसात आ फरत-फुलात बा। देश के कवनो अइसन दल आ जात-जमात नइखे जवना में चंद्रशेखर जी से कवनो ना कवनो रूप में जुड़ल कुछ लोग ना होखे। चंद्रशेखर जी चुनाव में अपना दल के टिकट त् बॉटते रहन दोसर दल में उनका साथे-बइठे उठे वाला के टिकट के पैरवी करे से भी बाज ना आवत रहले। एगो हमरा से काफी नजदीकी आदमी जवन चंद्रशेखर जी के पकिया चेला बा, उ भारतीय जनता पार्टी के सांसद रहल चुकल बा। एक बार जब ऊ पार्लियामेन्ट के चुनाव में टिकट से वंचित होत रहे त चंद्रशेखर जी सीधे अटल जी के पास पहुंच गइले आ कहले कि ई त् बड़ा गलत हो रहल बा। ई बात अलग बा कि ओह गलती के सुधार ना ो सकल आ ओह सीट पर भाजपा बुरी तरह से हारल।

एक बार हम आ हिन्दी के यशस्वी कवि डॉ. केदार नाथ सिंह जी उनका से मिले गइल रहिन जा। एगो अइसन नेता जेकरा के ऊ अपना दल से जीता के सांसद में ले आइल लें, ऊ घुलिटिया मार के दोसरा दल से केन्द्र में मंत्री हो गइल रहे। ओकरा विभाग से सम्बंधित कुछ चर्चा शुरू भइल त् हम कहनी कि एह विभाग के अइसन गइल-गुजरल आ अज्ञानी मंत्री देश का इतिहास में कबो नारा भइल होखी। चंद्रशेखर जी हमार बात सुनते आग-बबुला हो गइले आ कहले 'तू अपना के बहुत बड़ अर्थशास्त्री बुझेल का? के एकरास से बढ़िया एह विभाग के मंत्री भइल बा'? हम उनका से मुँह थेथरई करे का ना चाहत रहनी, चुप हो गइनी। लेकिन ना अड़ाइल त् कहनी कि अपने, अइसन आदमी के राजनीति के चोटी पर पहुंचवनी आ ऊ रऊआ के धोखा दे के दोसरा दल में चल गईल। अइसन घटिया चरित्र वाला आदमी के भी बचाव रउआ कर रहल बानी त् करीं। अपने पूज्य बानी। बाद में हमरा बुझाइल कि चंद्रशेखर जी केतना बड़ा विचार वाला आदमी बाड़े- ''नेकी कर दरिया में डाला''।

भारत गांवन के देश कहल जाला। एकर आत्मा गाँवन में रचल-बसल बा। देश के आजादी के बाद गाँधीजी आ विनोबा जी ''ग्राम सुराज'' के बात कइले। गाँव उजड़त चल गइल, आ शहर बसत चल गइल। गाँव बदहाल हो गइल आ शहर गुलजार होत चल गइल। सरकार, ग्रामीण विकास विभाग बना के गाँव के गरीबी, भुखमरी, बेबसी आ बेरोजगारी दूर करे का नीयत से ढाका भर योजना बनवले बिया। ई योजना बनावेवाला राजनेता आ अफसर ना कभी गाँव देखले बाड़े ना गरीबी के दंश झेलले बाड़े। कम आय से गरीबी के पहचान करे वाला लोग के ई कहाँ पत्ता बा कि गरीबी, पेट के आग से झुलसल शरीर के हड्डी, धसल ऑख आ तार-तार भइल आत्मा के चेहरा के पर्दा पर उतरल दिल-दहला देबक वाला एगो बिम्ब ह।

आँख पर चश्मा लगा के देखे वाला लोग, एकर कबो एहसास ना कर सके। हवाई सर्वेक्षण से एकर आँकलन आ पहचान ना हो सके ''बांझ का जानी परसवती के पीड़ा''। चंद्रशेखर जी गांव के नेता रहले। निकट से गाँव के बदहाली देखले-सुनले आ झेलले रहले। गाँव के वेदना से उपजल उनका अंदर के संवेदना बार-बार उनका के बेधत रहे। उनका अन्दर के बेचैनी, उनका चेरहा आ बात विचार से बराबर झलकत रहे। आउर गइराई से एह समस्या के पहचान आ निदान के बेचैनी उनका मन के जब कोड़े आ झोरे लागल त् ई राजनीतिक फकीर पैदल भारत यात्रा पर निकल गइल। एह यात्रा के पड़ाव निदान केन्द्र का रूप में लगभग आधा दर्जन आश्रम के रूप ले लेहलस जहाँ से स्वरोजगार, स्वालंबन से सम्बंधित शिक्षा आदि के संचालन हो रहल बा। गाँव-देहात के लोगन से सट के बोले बतिआवे आ ओकर दुख-दर्द दूर करे वाला से अब कहाँ भेंट होई। ई प्रश्न अइसन लोग के साल रहल बा, लोग के आँख के आँसू सुख गइल बा, पपनी नइखे गिरत, चारो तरफ घोर अंधरिया लऊकत बा। जेकरा पुर्नजन्म में विश्वास बा ऊ दसो नोंह जोड़ के भगवान से ईहे विनती कर रहल बा कि भोजपुरी माटी के ओह सपूत के, इब्राहीम पट्टी गांव में आ ओकरा अगल-बगल फेर से पैदा कर देस।

एह देश में चोटी के नेता बहुत लोग भइल, लेकिन दोस्त-परस्त नेता का रूप में चंद्रशेखर जी के एगो अगले पहचान रहे। संकट का समय में कवनो स्तर तक जा के अपना आदमी के मदद करे में चंद्रशेखर जी कभी अपना मान-मर्यादा के भी ख्याल ना रखले। उनका साथ में जुड़ल दर्जनों अइसन लोग रहल जे समाज के नजर में अच्छा ना मानल जात रहे। उनकर एगो अलग सकारात्मक सोंच रहे। केहू में उनका कवनो खोंट नजर ना आवत रहे। दुनिया में कवनो अइसन आदमी ना होई जवना में कवनो ना कवनो दोष आ कवनो ना कवनो गुण ना होखे। चंद्रशेखर जी आउरो लोग के तरह सामान्यत: दोष ना देखत रहन, बस ओकर गुण देखत रहन। ओकरा व्यक्तिगत के एह ऊर्जा के जाग्रत करा के गति ऊँचाई, आकार आ विस्तार दे के सामाजिक आ राजनीतिक काम लेत रहन। चंद्रशेखर जी कोढ़ से छूत करत रहन, कोढ़िया से ना। कुछ एह तरह के उटपटाँग आचरण के चलते ऊ समाचार पत्र में चर्चा में रहत रहन, लेकिन अपना आदत से कबो बाज ना अइले। लोग उनका विषय में का सोंची, एकर परवाह ना करते हुए समाज के नजर में अइसन अछूत लोग के बगल में खड़ा होके आपन सहानुभूति आ संवेदना के उजागर करे में कबो हिच-किचइले ना। जेल में जा के लालू यादव जी आ डॉ. जगननाथ मिश्रा जी से मिलल, धनबाद के रॉबिन हुड छविवाला नेता सूर्यदेव सिंह के संकट के घड़ी में संकट मोचन का रूप में सरेआम खुल्लम-खुल्ला खड़ा रइल आदि अइसन अनेक उदाहरण बा। अच्छा आदमी खराब आदमी के साथ में पड़ के बिगड़ जा ले-ई बात त् सबका बुझाला, लेकिन खराब आदमी अच्छा संगत में जाके संवर जा ले -ई बात बहुत कम लोग का घोंटाला। लोग कहेला कि काजल का कोठरी में गइला पर ओकरा दाग जरूर लाग जाला, लेकिन अईसन बात चंद्रशेखर जी के साथे कबोना भइल। चंद्रशेखर जी के एह रूप में शंभु के दर्शन कइल जा सकेला, जे विष-पान करके आपन गर्दन करिया कर ले ले लेकिन एकरे चलते जगदीश हो गइले- ''मान सहित विष खाय के शंभु भये जगदीश''। जगदीश का रूप में एक मात्र एह नेता के फोटो केतना घर में टंगाइल बा, एकर लेखा-जोखा कइल कठिन बा। चंद्रशेखर जी के जान-माल पवर कभी कवनो खतरा कभी ना रहल। साफ छवि आ बेबाक बात करेवाला आदमी के भला केहु दुश्मन काहे होई? ई संयोग कहल जाई कि डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जयप्रकाश जी आ चंद्रशेखर ई तीन अदद चोटी के नेता जे अजातशत्रु के रूप में उभर के सामने आइल ऊ भोजपुरी माटी के देन रहे। भोजपुरिया लोग का ई तीनो रतन पर गुमान कइल वाजिब बा।

चंद्रशेखर जी समाजवादी विचारधारा के एगो जुझारू नेता आ चिन्तक रहन। एह रूप में हम उनका के लोहिया के काफी निकट पाइले जेकर आचार-विचार, राहन-सहन सबसे एगो समाजवादी सेवी के रूप में झलकत रहे। साधारण से साधारण आदमी भी देश के कवनो ना कवनो से जब कभी कवनो ना कवनो काम से उनका दरवाजा पर गइल त् उनकर दवाजा बराबर खुलल मिलल। अस्पताल में मरीज के भर्ती करावल, केहु के लइकन के कवनो शिक्षण संस्थान में नाम लिखवावल, नौकरी दिलवावल आदि असंख्य फरियादन के साथे गाँव-देहात से ढहत-ढिमिलात पहुंचल अइसन आम लोगन के चंद्रशेखर जी आउरो नेता का तरह कुकुर नियर दुर-दुरवले ना, बल्कि इज्जत देहले, जेतना बन पड़ल ओतना मदद कइले, खाये-पीये के जोगाड़ कइले, घटला-बढ़ला पर रूपिया-पइसा दिहले आ लौटानी खातिर मार्ग व्यय भी। दीया लेके ढूँढला पर भी आम आदमी के सुख-दुख में एह हद तक जा के भागीदारी निभावे वाला नेता एह देश में कहीं खोजला से ना मिली। छोट-बड़ जे भी उनका निकट रहे, ओकरा विवाह-शादी आ मरनी-जिअनी सब अवसर पर ओरा दरवाजा पर पहुंचे के कोशिश कइले चंद्रशेखर जी। एह भाग-दौड़ के जिन्दगी से उनकर शरीर टूटत चल गइल। उनकरा स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ल। लेकिनस एह सबसे उनका मन के अपार शान्ति मिलत रहे आ आत्मा का असीम सुख। एह राजनीतिक संत के अपार श्रद्धा का साथ एह रूप के दर्शन करत हम कहे के चाहब कि-

क्यूँ हमें भीड़ से तू सबसे जुदा लगता है,

तेरे सीने में कहीं हमें खुदा लगता है।

अपना से थोड़ा-बहुत निकट रहे वाला लोग के भी छोट-छोट बात के ख्याल रखे वाला एह देश के चोटी के नेता के जमात में चंद्रशेखर जी एगो अकेला इन्सान रहन। एक बार के वाक्या ह कि जयप्रकाश नगर, बलिया में कवनो समारोह रहे। पूर्व सांसद स्व. रामशेखर प्रसाद सिंह के साथे ओह समारोह में हमहुँ रहीं। 'प्रभात खबर' के प्रधान सम्पादक आ चंद्रशेखर जी के विश्वास प्राप्त समर्थक हरिवंशजी के विशेष आग्रह रहे, एह अवसर पर पहुंचे के। एक समारोह के पंद्रह दिन के बाद जयप्रकाश नगर से सरयू नदी के पार बसल मांझी में ''अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन'' के महाधिवेशन आयोजित रहे। ओह समारोह के मुख्य अतिथि का रूप में अपना उपस्थिति के मौखिक स्वीकृति भी चंद्रशेखर जी दे देले रहन। समारोह में शामिल भइला का बाद भीड़ में धकियावत हम चंद्रशेखर जी का पास पहुंचनी आ उनका से पूछनी कि सम्मेलन में आईब न? चंद्रशेखर जी कहले, ''बुरा मत मनिह, ओह दिन हम दोसरा जगह व्यस्त बानी, ना आ सकब, लोग से हमरा ओर से माफी माँग लिह।'' उहाँ ऊ बाहर से पहुंचल अतिथि लोगन के भोजन के भी व्यवस्था कहले रहले। हमनी एगो दोसरा के दुआर पर खाये चल गइनी। जब लोग चंद्रशेखर जी के भोज में खाये बइठल रहे त् हमनी के ना देख उनका बेचैनी हो गइल। लोग से घूम-घूम के पूछे लगले ''देख लोग हो! रामशेखर भाई आ प्रभुनाथ केने चल गइल लोग'' बाद में सब हमनी खाना खा के लौटत रहीं त् लोग ई बात बतावल। हमनी दुनु आदमी उनकरा से मिल के वस्तुस्थिति के जानकारी देनी जा त् ऊ कहले, ''ई कवन बात भईल कि तू लोग आइल बाड़ हमरा नेवता पर आ दोसरा के दुआरी पर खाये चल गइल ह।'' बात आइल-गइल खत्म हो गइल। चंद्रशेखर जी के चिंता रहे कि मांझी वाला कार्यक्रम में ना शामिल होख पावे के हम लाचारी व्यक्त कइनी ह, शायद एही से रूस-फुल के बेखइले रामशेखर भाई आ प्रभुनाथ जी चल त ना गइल ह लोग। महान नेता ऊ होला जे जमीन पर देखेला, आसमानी नेता त पड़ल बाड़े। सब कुछ देखला सुनला के बाद हमरा बुझाला कि चंद्रशेखर जी एगो आदमी रहले-आदमी जवना में दया, करूण संवदेना, सच्चाई, कर्मठता, इमानदारी आ निष्ठा आप उपट के भरल होखे, जेकरा अंदर झँकला से भगवान दिखाई देत होंखस। ईश्वर के एगो अनुपम सृष्टि रहले चंद्रशेखर जी-''खुदा ने भी जश्न मनाया होगा, जिस दिन फुर्सत में आपको बनाया होगा। उसकी भी आँखों से निकले होंगे आँसू, जिस दिन आपको भेजकर खुद को अकेला पाया होगा।''

एगो आऊट घटना के हम बयान करे के चाहब, जवना के चर्चा पत्र-पत्रिका में कर के भ्रम के स्थिति कुछ लोग पैदा करत आइल बा। ऊ प्रसंग बा कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में, कांग्रेस के कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में चंद्रशेखर जी के निर्वाचन से। ओह घड़ी हम बिहार विधानसभा के सदस्य रहीं आ ओह अधिवेशन में छपरा के तत्कालीन सांसद चंद्रशेखर बाबू आ बिहार के पूर्व मंत्री बाबू हरदेव नारायण सिंह के साथे गइल रहनी। युवा तर्क नेता के रूप में चंद्रशेखर जी, कृष्णकान्त आ रामधन के तिकड़ी के चर्चा अपना जोड़ पर रहे। एह तीनों आदमी के पहिले-पहिल हमरा दर्शन ओह अधिवेशन में ही भइल रहे। आफिसियल सूची जवन जारी भइल रहे ओकरा में चंद्रशेखर जी के नाम ना रहे। एकरा बावजूद चुनाव में ऊ जीत गइले आ खूब चर्चित भइले। एकर चित्रण लोग इंदिरा गांधी के विरोध के बावजूद जीत का रूप में करेला। एह बात में हमरा कवनो सच्चाई नजर ना आवे। ओह अवसर के हम एगो चश्मदीद गवाह बानी। आफिसियल सूची जारी करे में कईगो बात के ध्यान में रखे के पड़ेला जैसे क्षेत्रीयता, जात, जमात आदि। चाहला के बावजूद भी केहू के नाम शामिल करे में नेता का कबो-कबो दिक्कत होला। चंद्रशेखर जी के नाम सूची में ना रहे एह से ई निष्कर्ष निकालल जाला कि इंदिरा जी, चंद्रशेखर जी के ना चाहत रहली। ई कहल हमरा बेईमानी बुझाला। हमरा ईयाद बा कि रामेश्वर बाबू आ रहदेव बा ए.आई.सी.सी. के मेम्बर रहे लोग। हम ना रहीं, हम त बस तमाशा देखे खातिर आ कलकत्ता घुमे खातिर गइल रहनी। एह दुनु आदमी का चंद्रशेखर जी से निकटता रहे। ई लोग एह जंग में उनकर समर्थक रहे। हमरा ईयाद बा कि ई दुनु आदमी इंदिरा जी से मिल के चंद्रशेखर जी के अपना समर्थन के बात बतावल। इंदिरा जी एह लोग के बात के विरोध ना कइली आ कहली, 'कोई बात नहीं है, आप लोग निर्भिक होकर चंद्रशेखर जी को वोट दीजिए।' चंद्रशेखर जी के, बागी नेता के भी एगो स्वरूप रहे। उनकर बगावत के भी एगो ऊँचाई रहे आ ओकर सम्मान रहे। एह चुनाव के ले के इंदिरा जी आ चंद्रशेखर जी के आपसी संबंध कबो खराब ना भइल। एह छोट-छोट बात से ऊपर उठ के देश-समाज के चिंता करे वाला ई दुनु नेता रहस। बस, बात हमरा इहे बुझाला कि- ''जा कि रही भाना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैंसी''।

भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति से हमरा गहरा लगाव रहल बा। एक भाषा आ संस्कृति के पहचान, सम्मान आ समृद्धि खातिर हम भोजपुरी आंदोलन आ लेखन से बराबर जुड़ल रहन बानी। अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक संगठन आ आयोजन के अगुवाई करत आइल बानी। विश्वविद्यालय में भोजपुरी के पढ़ाई शुरू करवला से लेके भोजपुरी के संविधान के अष्टम् सूची में शामिल करे आ साहित्य एकाडेमी से मान्यता दिलावे से संबंधित संड़क से संसद तक के लड़ाई में एगो वफादार आ जुझारू सिपाही के भूमिका अदा कइले बानी। भोजपुरी आंदोलन का चंद्रशेखर जी से अपार अपेक्षा रहल। भारत के प्रथम राष्ट्रपति आ चंद्रशेखर जी के अपना भाषा के प्रति प्रेम चर्चित रहल बा। एह भाषा-भाषी लोगन से ई लोग भोजपुरी में ही बोलल-बतिआवल। ई लोग मातारी के दूध आ गाय के दूध के मीठास के अंतर समझत रहे। कवनो लाचारी रहल कि भोजपुरी आंदोलन के नेतृत्व चंद्रशेखर जी से ना मिल पावल। हमारा बुझाला कि इनका सामने बराबर देश रहल, कवनो क्षेत्र ना। जहाँ तक भाषाई सोंच के प्रश्न बा। ई बात इनका बराबर खटकत रहल कि जवना देश में राष्ट्र भाषा हिन्दी का देश में आजादी के पचासन वर्ष से अधिक समय गुजरला का बाद भी उचित सम्मान ना मिल सकल ओह देश में क्षेत्रीय भाषा खातिर आंदोलन कइल कहीं-न-कहीं से बेईमानी बा। एह सब का बावजूद भी इनका के भोजपुरी माटी के अनमोल लाल के रूप में भोजपुरी भाषा-भाषी लोग बराबर मानत रहल। भोजपुरी भाषा-भाषी लोग के हृदय के विशालता के ई एगो पैमाना मानल जा सकेला। देश के कवनो कोना में जब कभी भोजपुरी के साहित्यिक-सांस्कृति आयोजन भइल मंच पर चंद्रशेखर जी के मुख्य अतिथि के रूप में गरिमामय उपस्थिति के ललक कबो ना गइल। एह मामला में चंद्रशेखर जी हमनी के निराश कबो नइखन कइले। का एकरा के भोजपुरी भाषा के प्रति उनकर अगाध प्रेम ना कहल जा सकेला? अइसन मंच का उनका साथ से जुड़ल बहुत सब रोचक संस्मरण बा।

सन् २००० में विश्व भोजपुरी सम्मेलन, नई दिल्ली के महाधिवेशन का समय मावलंकार हाल सभागार देश-विदेश से पहुंचल भोजपुरी साहित्यकार, संस्कृति कर्मी आ भाषा प्रेमी लोग से खचाखच भरल रहे। एह आयोजन के कर्ताधर्ता रहन भोजपुरी के सच्चा सपूत, सड़क से संसद तक भोजपुरी के लड़ाई लड़ेवाला जुझारू नेता सांसद प्रभुनाथ सिंह। मंच पर एह विश्वस्तरीय आयोजन के मुख्य अतिथि रहन चंद्रशेखर जी आ अध्यक्षता खातिर सादर आमंत्रित रहन भोजपुरी प्रेमी आ हिन्दी के यशस्वी कवि आदरणीय डॉ. केदारनाथ सिंह। स्वागत भाषण के क्रम में हम चंद्रशेखर जी का विषय में बहुत कुछ कह गइनी जवन बहुत लोग का उट-पंटाग लागल। क्रोध से चंद्रशेखर जी के भी नाम फरफराये लागल। लेकिन जवन हम कहनी ऊ चंद्रशेखर जी के व्यक्तित्व के सही आ बेबाक विश्लेषण रहे। हम भाषण के क्रम में कहनी- ''चंद्रशेखर जी एह देश के एगो अइसन राजनेता बाड़े कि जब कभी एगो नाद आ खूँटा पर उनका के बान्ह के राखे के प्रयास भइल त् चंद्रशेखर जी ऊ नदवो फोरले आ खूँटवो तुड़ के भाग चलले। ई शायद भोजपुरी संस्कृति के एगो पहचान ह। एकरा के बान्हल ना जा सके । अगर अइसन बात ना रहित त् भोजपुरिया जवान दुनिया में ना छितराइल रहिते आ अपना बुद्धि आ बांह का बल पर कोई देशन के ना बसवले रहिते। भोजपुरी भाषा-भाषी लोग दुनिया में पसर के इतिहासे ना रचल बल्कि भूगोल भी बनवलस। चंद्रशेखर जी के एह भोजपुरी चरित्र के एगो प्रतीक के रूप में देखल जा सकेला। बोलत-बोलत बेलगाम होके भाषण के अंत में फेर हम एगो आउरो बात चंद्रशेखर जी का ओर इशारा करत कहनी, ''चंद्रशेखर जी का जब कभी क्रोध आइल त् जवना लाठी से ऊ दोसरा के कपार फोड़ले ओही लाठी से आपन कपार भी। ईहो एगो भोजपुरिया चरित्र रहल बा जवना के प्रतीक बाड़े चंद्रशेखर जी''

भोजपुरिया, जब क्रोध में आई त् दोसरा के कपार पर लाठी जरूर पटक दी, लेकिन जब ओकरा एहसास होई कि कुछ गलत हो गइल बा त् अपनो कपार ओही लाठी से फोड़ ली, यानि ऊ दिल के साफ होला, ओकरा, अंदर छल प्रपंच ना होला, ओकर बाहर-भीतर एक समान होला, ऊ लावल लपरिआवल बात ना करे- ''भर बांह चूड़ी ना त् पट दे राँड़''। भोजपुरिया सांच बोलेला भले ओह साँच के आँच से ओकर शरीर भी जरत होखे। चंद्रशेखर जी साँच बोलले, भले ओकर लाठी पलट के उनके पीठ पर लागल। उनका मुअला के बाद उनका पर बहुत-कुछ लिखल, आज हमरा पढ़े के मिल रहल बा। हम जवन कुछ भोजपुरी के एह महाकुम्भ में कहले रहीं ऊ बात उनका संबंध में कवनो ना कवनो रूप में जरूर हम एह लेखन में देखत बानी। बाघ के खोद के केहु निश्चिन्त ना बइठ सके। उहे हाल ओह अधिवेशन में हमार भइल। जब चंद्रशेखर जी बोले खातिर खड़ा भइले त् उनकर पहिलका टारगेट हमहीं रहीं। ऊ आपन खिज कुछ एह तरह के बात कहके उतरले, ''प्रभुनाथ जी हमरा संबंध में बहुत कुछ उटपटांग अपना स्वागत भाषण का क्रम में बोल गइले ह। सुननी ह कि बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फररपुर से

सेवा-निवृत्त भइला के बाद दिल्ली का कवनो मैनेजमेंट इन्स्टीच्यूट में डाइरेकटर हो के आइल बाड़े। पता ना जे लोग इनका के ले के आइल बा ऊ लोग इनका के ठीक से जानत पहचानत बा कि ना। यदि ऊ आदमी एह सभागार में बइठल होखे त् हम ओकर दर्शन करे के चाहिब,'' हमरा संस्थान के सभापति डॉ. ए के सिंह दर्शकदीर्घा से चंद्रशेखर जी के हाथ जोड़त प्रणाम का मुद्रा में खड़ा भइले। उनका के सम्बोधित करत ऊ कहले,'' डॉ. प्रभुनाथ सिंह के डाइरेक्टर बना के ले आइल बाड़ त् एक बात के गांठ बान्ह के राख ल।'' आपन, दोसर डाइरेक्टर के भी जोगाड़ करत रहिअ। पता ना तू इनका के केतना दिन से जानत बाड़। कहियो आधा रात के आपन मोटरी-गठरी बान्ह के बिना कहले इ भगिहें त् फेर खोजलो से ना भेंटइहन, आ तहार इन्स्टीच्यूट डूब जाइ''। पूरा हॉल ठहाका आ ताली से गूंज उठल। आज हमरा बुझाला कि चंद्रशेखर जी का संबंध में जवन हम कहनी उहो ठीक रहे आ चंद्रशेखर जी जवन हमरा संबंध में कहले उहो सटीक रहे। जब कभी चंद्रशेखर जी से मुलाकात भइल आ कवनो चर्चा आगे बढल त् हमरा से झंझटे भइल। राजा भोज आ भोजवा तेली के बीच के ई वैचारिक लड़ाई रहे। स्थापित व्यक्तित्व से बात-बात में टकराव छोट आदमी के एक ईच बड़ कर देला आ घटिया आदमी से बने के साध अब हमरा मन में धरल के धरले रह जाई। जब बीमारी से चंद्रशेखर जी खटिया ध लेहले तब उनका से मिले के समय ना मिल सकल। ई सोंच हमरा के अपने नजर में गिरल पावत बा। पत्ता ना एह पाप के प्रायश्चित हम कब आ कवना रूप में कर पाईब। डॉ. केदारनाथ जी से जब कभी भेंट भइल त् ऊ कहले'' ए जी! कवनो दिन टाइम निकाल के चंद्रशेखर जी के चल के देखे के चाहीं। ऊ बहुत बीमार बाड़े।'' ऊ टाइम कबो ना आइल आ अब त् आवे के सवाले पैदा नइखे होत। जीवन भर एह अपराध बोध से उबरल कठिन बा।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन नई दिल्ली के बिहार राज्य सम्मेलन, गोपालगंज में आयोजित रहे। एहु आयोजन के सूत्रधार रहन सांसद प्रभुनाथ सिंह। चंद्रशेखर जी के कवनो ना कवनो बहाना से पूजे के बराबर सोंच रहल प्रभुनाथ सिंह सांसद के। एह आयोजन के स्वागताध्यक्ष रहन गोपलगंज के तत्कालीन सांसद श्री रघुनाथ झा। मैथिली भाषा-भाषी एह सांसद के भोजपुरी प्रेम जगजाहिर बा। जब कभी संसद में भोजपुरी के सवाल प्रभुनाथ सिंह सांसद उठवले उनका बगल में रघुनाथ झा जी खड़ा मिल ले। ओह समय चंद्रशेखर जी के पचहत्तरवीं वर्षगांठ सगरो मनावल जात रहे। सम्मेलन के बहाने उनका के ''भोजपुरी गौरव'' सम्मान से एह सम्मेलन में चांदी के प्रतीक चिन्ह आ अंग-वस्त्र दे के सम्मानित कइले, विश्व भोजपुरी सम्मेलन, नई दिल्ली के संस्थापक आ कार्यकारी अध्यक्ष सांसद प्रभुनाथ सिंह। ओह समारोह के चंद्रशेखर जी के रेल से ले के पहुंचल रहले तत्कालीन रेल मंत्री आ आज बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश जी। भोजपुरी के सब आयोजन में चंद्रशेखर जी धारा प्रवाह ठेठ भोजपुरी बोलत रहन। उनकर भाषण विचारोत्प्रेरक, रोचक आ संग्रहणीय होत रहे। भोजपुरी साहित्यक-सांस्कृतिक मंच पर चंद्रशेखर जी का गजह पर बइठावे वाला आदमी कहीं दूर-दूर तक नजर नइखे आवत। देखीं, कब तक उन कर भरपाई होत बा। भोजपुरी भाषा के मान्यता के सवाल पर चंद्रशेखर जी के विचार आ बयान बराबर विवाद के घेरा में रहल, ई सवाल चाहे भोजपुरी के कवनो मंच से उठल होखे या संसद में। अनपा भाषण के क्रम में एक सवाल के बगल में छोड़ के आगे बढ़ जात रहन चंद्रशेखर जी या खुलेआम कहत रहन कि एकर कवन जरूरत बा। भोजपुरी के संविधान के अष्टम अनसूची में शामिल करे के सवाल संसद में जब प्रभुनाथ सिंह, सांसद उठवले त् उनका अपार समर्थन मिलल, यहां तक कि गैर भोजपुरी भाषा-भाषी सांसद लोगन के भी। कहीं से भी कवनो विरोध के स्वर संसद में ना सुनाई पड़ल। चंद्रशेखर जी के सीट पर बार-बार जा के प्रभुनाथ सिंह, सांसद के उद्वेगला पर जब चंद्रशेखर जी बोले खातिर खड़ा भइले त् विरोध में बोल गइले। राष्ट्रभाषा हिन्दी के भूत उनका के पकड़ लेत रहे। भोजपुरी भाषा-भाषी लोग के उनका प्रति असीम आस्था, सम्मान आ भरोसा के बहुत बड़ झटका लागल। एकर तीखा प्रतिक्रिया भी भइल। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सासाराम अधिवेशन में हम चंद्रशेखर जी के बचाव ना कर पवनी आ भोजपुरी साहित्यकार आ संस्कृतिकर्मी लोग के आक्रोश हमरा झेले के पड़ल। पहिला बार जीवन में चंद्रशेखर जी के विरोध में हमरा कुछो बोले के पड़ गइल। भोजपुरी भाषा-भाषी लोग के ई आक्रोश कुछ एही तरे के रहे जइसे पहाड़ पर कवनो पत्थर फेंकला से ओकर कुछ ना बिगड़े लेकिन ओकरा चेहरा पर ऊ छोट पत्थर खरोंच त् जरूर डाल देला। अइसन सब प्रतिक्रिया के कवनो असर भोजपुरी भाषा-भाषी उनकर मतदाता पर ना पड़त रहे। कवनो भी स्थिति में भोजपुरी माटी के गौरव आ बलिया के एह बागी के ऊ संसद में देखे के चाहत रहे। भोजपुरी भाषा-भाषी लोग के दिल में केतना श्रद्धा अपना एह नेता के प्रति रहे एकर अंदाजा एही से लगावल जा सकेल।

--o--

कवि सम्मेलन के इचाद

- डॉ. जीतेन्द्र वर्मा

हमरा गाँव में एगो भोजपुरी कवि सम्मेलन भइल। भोजपुरी सम्मेलन होखे जा रहल बा। एह में भोजपुरी के सभ महाकवि लोग जुटी रउवा सभे कवि सम्मेलन में आके अपना मातृभाषा प्रेम के परिचय दी । हम हिंदी कवि सम्मेलन में कबो ना गइल रही। उत्सुकता वश हम हूँ कवि सम्मेलन में पहुँचली।

कवि सम्मेलन शुरू होखे के निर्धारित समय बीत गइल रहे। समियाना के बहरी बहुते लोग खड़ा रहे। हमहूँ किनारे खड़ा हो गइनी। मंच कवि लोग से भर गइल रहे। कई गो कवि लोग मंच पर चढे खातिर धक्का-धुक्की करत रहे। लोग बैचैन रहे कि जल्दी से कवि सम्मेलन शुरू काहे नइखे होत। एक घंटा बाद आयोजक लोग बैच लगबले, पान कचरत मस्ती में झूमत लउकल। एक जना माइक का लगे जाये के चहले बाकिर जास कइसे? चारू ओर कविए- कवि लोग रहे ऊ बहुते प्रयास कइले कि कइसहूँ माइक का लगे चल जाई। कवि लोग से बहुते पर्थना कइले। बाकिर रास्ता ना मिलल के ढकेलत,हाथ-गोड कचारत माइक पर गइले ऐ मंच पर बइठल कवि लोग के तुरंत मंच पर से उतर जाये के फरमान सुनवले । नीचे खड़ा कवि लोग के खुशी के ठेकाना ना रहे।

मंच पर बइठल केहू कवि अपना जगे से ना हिलल,जइसे कुछ सुनलही ना होखे। आयोजक लोग परेशान। लोग के हल्ला बढ़ते जात रहे। कुछ देर बाद चार -पाँच गो रंगरूट नुमा लइका मंच पर अइले आ कवि लोग के जबरदस्ती मंच पर से उतारे के शुरू कइले मंच कइले। मंच के अरिया बइठल कवि लोग के धक्का मार के नीचे गिरा दिहले। कुछ कवि लोग के झोरा छीन के फेक दिहले। कुछ कवि लोग के घेट में हाथ लगावे के पड़ल। खूब चिल्लहट मचल। कवि लोग कमजोर थोड़ही रहे कि आसानी से हट जाव आखिर ऊ लोग अपना कविता से कई गो क्रान्ति कइले बा। भला ऊ लोग कइसे मैदान छोड के भाग जाइत लोग शिकायत करित- कवि के नाम हसावत बाड़े बड़ी मुश्किल से कुछ जगे खाली भइल। मंच पर से उतरल कवि लोग के चिलइला के ठीक ना रहे-बाप-रे-बाप एजवा हमनी के अपमान होता दादा -हो-दादा ई हमनी के ना सुरसति माई के अपमान हवे। बाप रे, दादा रे------केहू सुनता हो।

हल्ला का मारे कवि-सम्मेलन शुरू करावल कठिन रहे। तले एक जना आयोजक आके गते से कहले-मंच पर जेकरा जगे नइखे मिलल ओकर से से कविता जरूर पढ़वावल जाई। एतना सुनते कवि लोग अगरा गइल आ एकदम चुप हो गइल।

कवि सम्मेलन शुरू भइल,संचालक महोदय आपन बात शुरू करत कहलीं-

एह घड़ी हिन्दी कवि सम्मेलन के श्रोते नइखन भेटात, बाकिर देखी भोजपूरी कवि सम्मेलन में केतना लोग बटोराइल बा एही से सिद्ध हो जाता कि भोजपुरी हिंदी से श्रेष्ठ भाषा बिया। सही बात त ई कि हिंदी कवि लोग के कविता लिखही ना आवे छोटे-छोटे-बड़ लाइन में दूका लिखेला लोग कि केहू के बूझइबे ना करें। रउवा सझ का शोझा बाकि भोजपुरी में एतना बड़का-बड़काँ महाकवि लोग बा कि हतना भीड़ जमा हो गइल बा। सही बात त ई बा कि हिंदी भोजपुरी में कवनो तुलने नइखें आ अइसने बहुत बात कवि लोग कविता पढ़े के शुरू कइल एगो कवि के परिचय करावत संचालक महोदय बतवलीं-

भोजपुरी के महाकवि फलाना के रउवा सझे जानते होखब। इहाँ के फलाना नाच में पहिले लबार के काम करत रहीं। ओजवां इहाँ के खूब नाम रहे। एह घड़ी नाच के सीजन डाउन हो गइल बा। एह से इहाँ के कवि सम्मेलन में पधारे के कृपा कइले बानी। जइसही महाकवि जी कविता पढ़े के शुरू कइली कि पूरा समियान सीटी आ सिसकारी से गूजे लागल। वाह-वाह, खूब जमल-कवि सम्मेलन के आयोजक लोग के मुँह चमके लागल।

एगो कवि के संचालक महोदय एह तरे परिचय करवली- भोजपुरी के महाकवि फलान के रउवा सभ ना जानत होखब बाकिर आज ली। इहाँ के भोजपुरी में बईसगो किताब लिखले बानी। कवनों किताब दू सौ पत्रा से कम के नइखे। सभन में कूट के जिल्द बा। एगो युवा कवि के परिचय करावत संचालक महोदय कहली- इहाँ के बड़ी प्रतिभावान कवि बानी। इहाँ के लिखल गीत अबहिए बड़ी चाव से नाच में गावल जाता होनहार बिरवान के होत चिकने पात वाली बात बा। इहाँ के गीत के कई गो कैसेट बनल बा । इहाँ से भोजपुरी के बड़ी उमेद बा।

जवन माइक पर आ जास ऊ जाये के नाम ना लेस। संचालक महोदय के धकिया के हटावे के पड़े। कविता के बात मत पूछी।

हमरा संचालक महोदय के बात सही बुझाइल कि हिंदी भोजपुरी के कवनों तुलने नइखे। कविता के तर ना टूटत रहे सयिाना सीटी सिसकारी का तरह-तरह के बोल से गूंजत रहल।एगो बूढ़ कवि के परिचय करावत संचालक महोदय कहली- इहाँ के भोजपुरी के भीष्म पितामह हुई। इहाँ के भोजपुरी के झंडा ढोइले। भोजपुरी के शायदे कवनों अइसन संस्था होई जहवां इहाँ के अध्यक्ष- सचिव ना होखी

भीष्म पितामह जी कविता सुनावे लगनी। सीटी आ सिसकारी में आउर तेजी आ गइल। लोग दाँते अंगुरी काटत कहे-

हई देखी बुढ़वा के।
बुढ़ारियों में अतना जोर।
ई त बड़ा छिनार बुझाता।
-मेहरारू लोग के गोल, से आवाज आइल।

आ अइसने बहुते बात। ई सब बात सुन-सुन के भोजपुरी कें भीष्म पितामह के अगरइला के ठीक ना रहे। उ झुम-झुम के कविता सुनावे लगले। जनम सवारथ हो गइल।

उहाँ के अबही दू गो कविता सुनवले रहली कि मंच का लगे बइठल एगो हिंदीकट लइका जोर से कहलस -

अरे ऊ दूनों कविता हम फिल्मी पत्रिका में पढ़ले बानी। रउवा भोजपुरी अनुवाद कइले बानी का? सभे अचकचा गइल। भीष्म पितामह जी तनी सकपकइनी बाकिर जल्दि ए सकपकाट दूर हो गइल। उहाँ के शेर नियर दहड़नी-

तू हमरा के चोर कहताड। हमरा के ठीक से चिन्हताड किना?
लइका डेरा गइल। ऊ हाथ जोड़ के कहलस-
ना। ना। हम रउवा के भला चोर कहब------

अबही लइका सफाई देते रहे कि भीष्म पितामह जी ओकरा के क्षमा क दिहनी आ रोवाइन मुँह बना के कहे लगनी- ए लइका बेचारा में कवनों दोष नइखे। ई पढ़ाकू बूझाता। असल बात त ई कि हिंदी कवि लोग भोजपुरी लोकगीत के चोरावे में मास्टर बा रउवा सत्रे होखब कि भोजपुरी लोकगीत के तनी मनी बदल के सिनेमा में खूब गावल जाता। हमरो कविता केहू हिंदी वाला कवि अपना नाम पर छपवा देले होई। त का ई कविता ओकर हो जाई आ हम चोर कहाएक? ना...ना... एकदम ना..... बाबा रउवा एकदम निफिकिर रही ऊ कविता रउवे हवे पुरा समियाना भीष्म पितामह केसमर्थन में खड़ा हो गइल। सभे हिंदी कवि के चोर कहत रहे।

कउवा बोले लगले सन। लोग हडबडाइले घर कावर जाये लागत। दउड़ के संचालक महोदय पर अइले आ कविता सुना रहल कवि के धक्का दे के हटावे लगले। कवि जी पकड़ लिहनी। संचालक महोदय मंच कस के धक्का दिहले त कवि जी माइक लिहले-दिहले नीचे गिर गइनी कवि जी तुरंते देह झार के खड़ा हो गइनी आ माइक ठीक क के कविता पढ़े लगनी। बड़ी छीना-झपटी कइला का बाद आयोजक लोग माइक मंच पर ले आवे में सफल भइल। संचालक महोदय लोग से निहोरा करे लगले- सुनी---सुनी--- रउवा लोगनी तनी देर आउर ठहर जाई। अबहीं क गो रसगर महाकवि बांचल बाड़े। रउवा सभ एहू लोग के सुन ली। ना त गाँव- जवार के बड़ी शिकायत होई कि एजवा के लोग साहित्य के मरम ना बूझे। लोग पर एकर असर ना बुझाइल। तले एगो महाकवि माइक पर अइली आ शुरू कइनी आपन गीत-

ए जा झाड़ के

वाह-वाह।
जिऊ-जिऊ।
फेर कवि-सम्मेलन जम गइल। सीटी आ सिसकारी गूंजे लागल।
आयोजक लोग आपस में बतियावत रहे-
भाई हो। खूब जमल

हम त कई बेर से कहल रही कि नाच से बेसी भोजपुरी कवि सम्मेलने जमि। बाकिर हई मरदे त मानते ना रहस। बेमरदे। हम का जानी कि भोजपुरी में अइसन-अइसन महाकवि लोग बा।

अबकी मेलो में नाच का बदला भोजपुरिए कवि सम्मेलन होखों

हाँ,हाँ, । ठीक रही।

एकदम ठीक।

कई गो आवाज आइल।

कवि सम्मेलन ओर गइल रहे। कुछ महाकवि लोग आ आयोजक लोग आ आयोजक लोग में बकझक होत रहे। हमहूँ तनी लगे चल गइली। एगो महाकवि कहत रहले- कवनों कवि सम्मेलन में हमरा जाए के रेट मार्ग व्यय, भोजन पतर के अलावे पाँच सौ एक रूपया बा। रउवा सभे के विश्वास ना होखे त भोजपुरी के केहू महाकवि से पूछ लीं। अगल-बगल बइठल महाकवि लोग जल्दी-जल्दी मूड़ी हिला के सहमति जतावल। आयोजक में से एक जना कहले- ऊ त ठीक बा। बाकिर हमनी रउवा के पाँच सौ एक रूपया कहवाँ से दी।

जहवाँ से आउर लोग के दिहनी हई। आउर लोग के बोलावल गइल रहल हवे। रउवा बिना बोलवले आइल बानी। राउर खर्चा बजट में ना जोड़ाइल र। रउवा सभे हमरा के बोलवनी काहे ना? हम त कई गो चिट्ठी आ मुँहजबानी खबरो भेजववनी कि हमरो के बोलाई। हमरा के राह खर्च आ फीस देवही के पड़ी चाहे जहवाँ से दी। अधिकांश कवि लोग एह बात खातिर खिसियाइल रहे कि ओह लोग के कविता सुनावे के अवसर ना मिलल।

हम मने-मन दसो नोह जोड़ के भोजपुरी के महाकवि लोग के प्रणाम कइनी आ घरे चलनी।

वर्मा ट्रान्सपोर्ट
राजेद्र पथ
सीवान-841226 (बिहार)
मो. ०९४३०६७७५२३

बुजुर्ग खुश होंगे तो परिवार महकेगा

बुजुर्ग से जुड़ने का मतलब है,
प्रज्ञावतार से जुड़ना
बुजुर्ग से जुड़ने का मतलब है,
संस्कारों से जुड़ना
बुजुर्ग से जुड़ने का मतलब है,
खुशियों से जुड़ना
(वर्तमान की सभी परिवारिक समस्याओं का एक मुश्त समाधान है बुजुर्ग से जुड़ना)

इस संसार में बुजुर्ग ही साक्षात् देवी-देवता है

ईश्वर से प्रार्थना है कि मेरे मन में बुजुर्गो के प्रति सेवा,सम्मान एवं सद्भावना के भाव पैदा हों।

प्रेरणा स्त्रोत- विश्व गायत्री परिवार के पिता

प्रज्ञावतार-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

क्रोध हमरा आवेला

- संकलनकर्ता :
विश्वनाथ प्रताप सिंह (एम.सी.ए.)

(1)

जब जब हमरा मन के विपरीत कुछ भी घटित होला।
त हमरा क्रोध आवेला।
दोसरा के कर्तव्य पाठ करावल मन के भावेला।
अपना के कर्तव्य बोध करावल क्रोध जगावेला।
बार बार, कारण अकारण आवत रहला से
क्रोध अब मीत बन के, सतावेला।
क्रोध अब मुहं के नक्शा बिगड़ले बा,
मौका मिलते केहू पर बरसावेला।
क्रोध त काम से बचावे के कवच है।
ई बात सोलह आना सच हैं।

(2)

क्रोध खाली बाउरे ना ह। अब सार्थक बन गईल वा।
ई बहुत कुछ करवावेला। तन में ऊर्जा बढ़ाने ला।
बहस में उत्प्रेरक बन के,जीत,हार ईहेत करावे ला।
ई स्वास्थ वर्थक ह,रक्त संचार के इहेनु बढ़ावे ला।

(3)

क्रोध गूंग-बैताल ना ह,ईहे वाचाल बनावेला
छोटी छोटी बात प लंबा संसदीय बहस ईहे त करावे ला।
क्रोध कतनो छुपाई,दुप नहीं पावेला।
तन के टी.बी. के स्क्रन पर,अविरल नजर आवेला।

(4)

ई क्रोध लाजमी वा। ई तबही आवेला।
जब दोसरा के काम अपना माथे मढल जावेला।
घोर शोषण के शिलान्यास प क्रोध कृपाला के अवतरण नजर आवेला।
इतिहास गवाह बा। जब जब शोषण के सिलसिला चलल बा।
सर्वहार लोग क्रोध के विगुल बजवलले बा

(5)

क्रोध के सुधा पान, सुभाष बोस के मुक्का बा।
ऐही से उनकर कहल आजु आओ चुका वां।
क्रोध दोसरा प कईल जाला पर अपने के जरावे ला।
क्रोधकर्ता के जरा जरा मोत त पहुंचावे ला।
ई क्रोध सत्य ह,जे जीवन के सत्य से मिलाववे ला।

(6)

क्रोध सच्ची गुरू है,जे जीवन के गुर सिखावे ला।
एकरा प विजय करते जीवन निकल जाला।
क्रोध सनातन है, जे हर युग में सच्चा साधी बन आवे ला।
क्रोध महात्मा ह,जे परहित करवावलो।

(7)

अरे। ई क्रोध ना होईत इतिहास ना लिखइते।
लंका में डंका बजईते का राम?
कंस,जरासंध के मिटइते धनश्याम?
भीम तोड़ पइते दुर्योधन के टांग?
शिवाजी का पइते छत्रपति नाम?

(8)

जनक पुर में क्रोध,सौमित्र के
क्रोध परशुरा,दुर्बासा विश्वामित्र के
क्रोध राणा, पृथ्वीराज, छत्रसाल के
क्रोध में अहिसंक गांधी सुबास के।

(9)

क्रोध के प्रताप पर राणा दिल्ली से टकरइले।
बापू के अहिसक क्रोधे से चर्चित चकरईले।
जनता के क्रोध से अग्रेज कंपि गइले।
अंग्रेजन के क्रोध से हिन्दुस्तान बटईले।

(10)

क्रोध जगह प ना आवे न कईसन भोजपुरिया?
क्रोध कतहूं आ जावे,त लागे हतेमरिया।

***

आत्मविश्वास

-जीवन युद्ध का अजेय अस्त्र

आत्मा की शक्ति प्रकृति की एक महान शक्ति है। आत्मज्ञान होते ही मनुष्य के संपूर्ण कष्ट भाग जाते है। आत्मज्ञान, आत्मसंयम तथा आत्मविश्वास से ही व्यक्ति अपने भाग्य, मोक्षा प्राप्ति एवं आनंद के मार्ग का निर्माता स्वंय बनता है। आत्मविश्वासी व्यक्ति कभी भी संकीर्ण विचारधारा नहीं रख सकता, वरन उनका निश्चय दृढ़ और अटल होता है। आत्म सम्मान की रक्षा करना मनुष्य का सबसे पहला धर्म है। आत्मसम्मान वहीं पर होता है, जहां आत्मविश्वास होता है।

आत्मविश्वास के समानदुनिया में कोई दूसरा मित्र नहीं। आत्मविश्वासी व्यक्ति की शक्ति उसका संकलप होता है, जिससे सभी कार्य पुर्ण होते है। दृढ़ निश्चय और दृढ़ अच्छा शक्ति वाले व्यक्ति युद्ध प्रारंभ होने के पहले ही आधी विजय प्राप्त कर लेते हैं। आत्मविश्वास में वह शक्ति है जो व्यक्तिमें 1000 गुणा शक्ति पैदा कर देता है। अमेरिका का भूतपूर्व राष्ट्रपति आब्राहिम लिंकन जो एक झोपड़ी में पैदा हुआ था, उसके दिव्य आत्मा विश्वास नें ही उसे अमेरिका जैसे विशाल एवं धनाड्य देश का राष्ट्रपति बनाया। आत्मविश्वासी मनुष्य इतना समर्थ आत्मा सम्मानीय होता है कि दूसरों पर निर्भर रहना पंसद ही नहीं करता। दुनिया की चाहे जो वस्तु नष्ट हो जाये या खो जाये पर आत्मविश्वास की शक्ति जो वास्तविकता और सिद्धांतो पर आधारित है उसे खोने का तो सवलाल ही पैदा नहीं होता। विश्वास एक औषधि है एवं मनुष्य के हृदय का विश्वास ही उसका सच्चा डाक्टर है। आत्मविश्वास जागृत करने के लिए अपने आचरण को (1) निर्णय (2) दृढ़ता (3) गरिमा (4) आत्मनिर्भरता में ढालना बहुत ही आवश्यक है। निर्णय करने की क्षमता, दृढ़ इच्छा शक्ति और गरिमा मय आत्मसम्मान तथा आत्मनिर्भरता ही मनुष्य में आत्मविश्वास पैदा करते है।

मानव की संपूर्ण सफलताओं का भवन विश्वास के आधार पर टिका हुआ है किसी भी विजेता की जीत का रहस्य उसका अटल विश्वास है। अविश्वासी मन जीवन के उच्च लक्ष्य स्थल तक कभी भी नहीं पहूंच सकता । संसार में बहूत कम संख्या में ऐसे लोग हैं जो अपने गौरव और योग्यता पर विश्वास रखते हैं एवं उन्ही महापुरुषों का नाम इतिहास के पत्रों पर स्वर्णाक्षरों नामांकित किया जाता है। जीवन का अमृत ही आत्मविश्वास है, जिसके समक्ष से डर एवं निराशा रुपी विष भाग जाते है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि जिस प्रकार ईश्वर में विश्वास नहीं रखने वाले को नास्तिक कहा जाता है उसी प्रकार स्वंय पर विश्वास न करने वाले को भी उससे भी बड़ा नास्तिक कहा जाना चाहिये।

एक महान लेखक ने अपने हीन भावना को दूर भागाने के लिये अपनी आत्मा में निम्नलिखित शब्दों और वाक्यों को कहते रहना बताया है। मैं ईश्वर की संतानव हूं, ईश्वर के गुण मुझमे विद्यमान हा, उस दिव्य शंक्ति के बल पर मैं पा सकता हूं, मुझमे कायरता नहीं है, मुझमे असीम शक्ति है एवं मैं योग्य हूं। जो निश्चयी होते हैं वे निश्चित रुप से सफलता प्राप्त करतें है एवं सफलता उसके इर्द गिर्द गूमती रहती है। आत्मविश्वास का सूर्य उदित होते ही हीन भावना के बादल छिन्न भिन्न होकर छटने लगते हैं। मनुष्य की शक्तियों की कोई सीमा नहीं, कहीं नही, उनके केवल एक बार जगा देने की आवश्यकता है। आत्मविश्वासी व्यक्ति को किसी बंधन में न ही बांधा जा सकता न ही हराया जा सकता है, और न उसे असफल बनाया जा सकता है। परमात्मा ने हमारी आत्मा को अमोध शक्ति प्रदान की है जिसके द्वारा वह हमें घोर संकट से बचाती है। इसी शक्ति का नाम है आत्मविश्वास। विश्व में अगर कोई प्रबल प्रेरणा शक्ति है तो आत्मविश्वास की ही है। जो महान से महान कार्य करने के लिअ दृढ़ प्रेरित करती रहती है। वीर महापुरुषो में ही अपनी विजय पर अखण्ड विश्वास एवं अपनी असीम शक्ति पर अटल विश्वास होता है यही मेरे जीवन का अजेय अस्त्र शस्त्र है। इन्ही लेखों के साथ———

श्रीमती सरस्वती शाही,
मण्डल अध्यक्ष (गुढ़ियारी)
भा.ज.पा. महिला मोर्चा, रायपुर (छ.ग.)

स्वास्थ्य ही जीवन है

-संजय सिंह

जन्म सिद्ध अधिकार ह स्वास्थ्य।
स्वास्थ्य ही जीवन ।।

भोजपुरिया कहावत है-

धन गईल त कुछुओं नईखे गईल
स्वास्थ्य गईल त सब गईल।

प्राकृतिक नियम के पालन से उत्तम स्वास्थ्य मीलेला।

प्रकृति आ देह पांच गो तत्व के अनुपातिक मेल से बनल बा। वायु अगन जल भूमि आकाशा पांचो तत्व के अनुपात गड़बड़इला से शरीर रोगी हो जाला आ जवना तत्व के कमी होखे ओकर,ओतने मात्रा में पूर्ती से शरीर स्वस्थ्य हो जाला। ईहे चिकित्सा शास्त्र के आधार ह।

1. **वायु :-** प्राण(वायु) के बिना जीवन असंभव बा।
   हमार जीवन सांस प टीकल बा। वायु कम मीलते घबराहट होला। कहल बा "सुबह-शाम के हवा, लाख टका के दवा।" हवाद. घर बनाई जा आ प्राण वायु अनुकूल मिले ओकरा खातिर प्राणायाम करीजा।
2. **अग्नि या सूर्य :-** सुर्य किरण दर्शन अति नीका, रोग बलाय तुरन्त हो फीका।
   सूर्य स्नान चेहरा को दमका देला। ओज,शाहस,शक्ति के बढावेला। नेत्र रोज आ चर्म-रोग से मुक्ति करावेला।
3. **जल:- अर्थवेद में कहल बा।** अप्स्वन्त अमृतमयप्सु भोषजम्
   अर्थ बा जल में अमृत बा आ जल में औषधी बा।
   जल ही जीवन ह। जल महान आरोग्यय प्रदायक ह। जले में जीवन के जन्म होला। ताजा,शुद्ध जल के सेवन करे के चाहीं।
4. **भूमि:-** प्रथम भोजपुरिया कवि,कबीर अपना खंड़ी के थापा प गवले रहन:- माटी ओढ़ना माटी बिठवना, माटी दाना पानी रे माटी में चुम्बीय शक्ति होला। ई शरीर में स्फूर्ती दायक होला। भूमि प चलता से शरीर में प्राण शक्ति बढ़ जाता।
   महात्मा गांधी कहले रहन-
   माटी के पुतला,माटी से ठीक करो।
5. **आकाश(अवकाश):-** खाली जगहे के नाम आकाश ह। आकाशे में पूरा ब्रम्हाड सामईल बा। हमारा शरीरो में आकाश बा। एही में हृदय फेफड़ा आंत आपन-आपन कर सकला। भोजन करत समय एक चौथाई पेट,आकाश खातिर खाली राखल उत्तम ह। तबही नु वायु शरीर के अन्दर बाहर आ-आ-जा सकेला। आकाश तत्व के प्राप्त करे के उत्तम उपाय ह उपवास राखल। बिमारी भगावे के उत्तम अस्त्र-एक दिन के उपवास ह। ई पांचो ईश्वरी बरदानह। ईहे अपनाई आ स्वस्थ रहीं

--o--

कहानी

अचके में

-कृष्ण कुमार

मुनिस दउरत टिसन पड अइलें। अइसन कि ऊराहता में से ही सोचत आवत रहन। गाड़ी टिसन पड कबहिंए आ चुकल रहे। जांगर ठेठावला के बाद ऊहांफत आइल रहन टिसन पड। उबुका अपना ऑफिस के बॉस पड काफी खिस बरत रहे। लाख गिड़गिड़इला के बादो ऊ उनुका के आधा घंटा पहिले ना जाए देलें। उनुका बोखार से जरत अपना मेहरारू के पिअर सूरत इयाद आ गइला घरे से चले के बेरा ऊ काफी निरिह शब्दन में कहले राहे-''आजु जलदिये चलि आइबि। हमार तबियत बहुते खराब बा। दें हितावा लेखा घह घह लहकता। आजु पांचि दिन हो डाइल...''

मुनिस उनका से वादा भी कइले रहन-''घबड़इहड मति हम आजु गघबेररि होत-होत कवनो गाड़ि से जरूरि लवटि आइवि ...।''घरे से निकलला पड ऊराहे में सोचि लेले रहन-ऑफिस के काम फटाफट निपटा के ऊजलदिये लवटि अइहें। सांझि के सात बजत-बजत कवनो डॉक्टर से मेहरारू के देखा दिहन। उनकर ई कस्बानुआ शहर राति के नौ बजत-बजत बन्द हो जाला ...। उनका नजर घड़ी पड चलि गइल। सवा पांच बजे के सूचना उनुका के पूरा शहर से झकझोरि देलसि। ऊ दउरत टिकट वाला काउन्टर पड पहुंचलें। करीबन पचास आदमी के लाइन लागल रहे। उनुका बहुते गहिराड़ निरासा भइल। एक घन खातिर जइसे उनुकर आंखि चौंधिया गइल। बाकिर ऊ जलदिये लाइन में लाडाल काउन्टर के पास वाला आदिमी से बोललें- ''भाई साहेब किरिपा करके हमरो एगो टिकट लेलीं। हम राउर बहुते आभारी रहबि ...।''

ऊ आदिमी काटत नजरी से एक बे मुनिस के घुरलसि। फेरू गरजि के कहलिस- ''लाज नइखे लागत तोहरा। हम बूढ़ आदिमी होके घंटा भर से लाइन में लाडाल बानीआ तू नौजवान होके एह तरिका से टिकट लेबे आइल बाड़। अइल आ आके फट से काउन्टर मिरी चलिअइल। जाके पीछा लागि आ ...।''

नुनिस कुछुओ ना कहि सकतें। अपना ओरे ताकत एगो दोसर आदिमी, जे करीबन काउन्टर के लगे पहुंचहि वाला रहे, ओकरा से बोललें-भाई साहेब, तनि अपने के मदद कडदीं। बड़ा मुसीबत में पड़ल बानी। लाइन में लागि जइतिं, बाकिर गाड़ी छूटे के समय बीतत जा रहल बा ...। माफ करडबंधु। बहुत लोग के टिकट हमरा लेबे के बा। केहू दोसरा आदिमी के दे द ...। काइन्टर के नियरा पहुंचे वाला अउर तीन-चारिलोगन के ओरे मनिस तक लें। उहो लोग उनुके ओरे देखत रहे। बाकिर उनुका के देखते ऊलेग नजर फेर लेल। सहसा उनुकर दृष्टि बगल वाला खाली काउन्टर पड जा टिकला ऊ चटाके ओइजा पहुंचि गइलें। काउन्टर के भीतर वाला बाबू उनुका के देखते पूछलें - का बात बा ...?

बड़ा परेशानी में परल बानी। आरा जाये के बा। काउन्टर पड बड़ी भीड़ बा। गाड़ी छूटहिं वाला बिया ..।

तड हमार से का कहल चाहत बाड़ ...? सर्नी, रउसा खाली बइठल बानी। एह गाड़ी के कुछ टिकट तड अपनाहूं के दे सकत बानी ...। का हम तोहरा बाप के नोकर हईं कि तोहरा कहे के मोताबिक टिकट दे दीं? यह गाड़ी के टिकट ओह काउन्टर पड मिलते बा तड एह काउन्टर पड कइसे दे दीं ...?

नियम तड देबे के ना ठह भाई जी। बाकिर अपने के चाहितिं तड मानवता के नाता से अइसन करि सकडतानी.....।

जइल एइजा से कि बकवास करब .....?

देखि भाई जी, तनि हमरा मजबूरी के समझे के कोशिश

करीं.....। तडतू नवा मनब, हमरा पुलिस बोलावहि के का परि .....?

आ ऊ एजोटूटत नजर का उंटर वाला बाबू पड छोड़त प्लेटफारम के ओर चलि देलें। अचानक केटू के कहत सुनलें- गाड़ी खुलडतिया.....। ऊ तेजी दरउरे लगलें। गाड़ी के भीतरी बइठलखिड़िकन से झांकत लोडा उनुका के अजीब नजर से धूरे लगलें। एगो डिब्बा के सोझा खड़ा एगो टी.टी. साहेब उनुका नजर अइलें। ऊ झटकले उनुकलडो पहूंचि गइलें। काफी भद्र लागो बाला कीमती पोशाकन से लैस

कुछ लोडा उनुका के घेरले खड़ा रहनाऊ छने मड में मजरा समझि गइलें। उहो लोग ओहि तरीका के रठना बाकिर ऊ लोग ना सिर्फ टिकटे बनावत रहन, बलुक बर्थ के रिजर्वेसनों करावत रहना। ऊ गिड़गिड़ाता टी.टी. महोदय से बोललें- सुनीं,हमरा आराचले के बा भीड़ में चिकच मिलते नइखे आ डाडियों खुलहिंवाली बिया। हमरा के आरा के एगो टिकट बना दिएं.....।

टी.टी. साहेब उनुका के एक बे ऊपर से नीचे तक ले देखलेनफेरू बिल्कुल धीमा आवाला में बीललें- टिकट का बनावे के बा? बढ़ाव देने बीस रोपेया आ चल बइठ, आरा गेट पड बोलि देबिं.....।

भ असमंजस के धन चक्कर में परिगइलें। ओइजा से आरा के टिकट के दाम सिर्फ नौ रोपेया हडा। आजु ऊ बीसो रोपेया दे देतें बाकिर उनुका पाले सिर्फ दस रोपेया बांचलबा। ऊटी.टी. साहिब से बिल्कुल सांच बात बता देलें.....।

आईजी, डम रउआ के बीस रोपेया दे देतिं, बाकिर हमारा पाले सिर्फ दस रोपेया ही बांचल बा.....।

टी.टी. साहेब कवनो जवाब ना देलें। उनुका बात के अनुसुनी कड देलें। ऊ फेरू कहलें- आई जी.....।

का भाई जी- भाई जी करि रहल बाड़। टी.टी. साहेब उनुकर बात पूरा ना होखें देलें- कइसे टिकट बना दी ? बा प्लेट- फारम टिकट तोहरा पाले.....?

एके छन में टी.टी. साहेब के आवाज बिल्कुल बदलि गइल रहे। ऊ बिजुली फेरू टिकट रूम के ओरे भगलें। प्लेटफार्म टिकट के काउंटर अगले रहे। ओह काउन्टर पड एको आदिनी ना रहन एह से प्लेटफार्म टिकट लेके ऊ फेरू ओठ टी.टी. साहेब लडो जुमि अइलें।

सुनी प्लेटफार्म टिकट ले अइनीं.....।

अबकी बारी टी.टी. साहेब काफी क्रूर होके मुनिस के तकलें आ डांटत कहलें- एजा, गार्ड से सार्टिफिकेट बनावा के ले आवातब हम टिकट बना देबि.....। देखिं भाईजी..... ।कहिंत देनी, तोहार कुघुओ ना सुनवि.....। मुनिस गाड़ी के अन्त में लागत गार्ड के डिब्बा के ओरे दउरि चललें। गार्ड अब हाथ में ठरिअर झंडि लेले डिब्बा से बठरी निकल रहन । ऊ हाथि जार्ड से बोललें- सुनी, हमरा आरा चले के बा। हमरा पाले प्लेटफार्म टिक्ट बहुए। मेहरबानी

कडके टिकट बना दी.....। टी.टी. के लगे चलिजा.....। ऊहें के लगे से आवड तानी ऊहा के अपने लडो सार्टिपिकेट खातिर भेजनी हां.....। हम के ई सब कुछुओ नट्खी जानत ...। आ बहरी निकलि के गार्ड हरिअर झंडी हिलावे लडालें। हिलत हरिअर झंडी उनुका अपना ओरे लपकत बहुत बड़ नागिन अइसन लाडालि. आ ऊ भय से कांपि डाइलें...। सुनीं हमरा आरा पहुँचल बहुत जरूरी बा। हमरा मेहरारू के अबले अब-तब के घरी लाडाल होई। एह गाड़ी के बाद दोसर गाड़ी बारह बजे राति में आई। हमार मजबूरी समझिं ...। बड़ा जाहिल आदिमी बूझा तारड। हटड एइजा से एक बे तड कहि दिहनी कि हम ई सब कुछुओ नइखीं जानत ...। ऊ जइसे भीतर से टूटि जइलें। डाइलें। आगे के ओर सरकात गाड़ी उनुका अतीर छटपटाइट अरि देलसि। उनुका सेना रहल गइल लपकि के ऊ गार्ड वांला डिब्बा के सिकंचा पकड़ि लेलें। गार्ड साहेब डांटत कहलें- ना मनब? तोहरा सिर पड आफति सवार हो गइल बाका? पांचि सई रोपोया जुर्माना लागि जाई आ जेल के चक्की चलाने के परिजाई.....। मुनिस के हाथ से सिंकचा घूटिगइलाऊ फाटल- फाटल आंखिन से गाड़ी के देखे लगलें। अचके में उनुका समूचा घरती घूमत महसूस होखे लागल। ऊ गिरी जइतें, बाकिर गिरे से पहिल हिंऊ प्लेटफार्म पड बइठि गइलें। ना चाहला के बादो उनुकर निगाह आगे के ओरे मागत गाड़ी पड जा टिकल।

एकाएक उनुका महसूस मइल कि तेजी से आजत गाड़ी के नीचे उनुका मेहरारू के लास गिर गइल बा आ गाड़ी उनुका के बेरहमी से कूंचत आटो बढ़ल जा रहल बिया.....।

महावीर स्थान के निकट,
करमन टोला, आरा-802301 (बिहार)
फोन-06182-655293

बरखा के बर-सात

संकलन - दिवाकर सिंह

(1)
बरखा के बर-सात।
बाप-रे-बाप।
एक ना,दू ना,सात
एह बरखा के, बर-सात।

(2)
सूनल कथा बा।
कबीलन में भी पृथा बा।
एक सुकुमारी बदे एक बर खोजला के
स्वयंबर कहा-ला।
जैसे सीत-स्वयंबर के
भईल रहे हाला ।

(3)
धरोहर में धईल। दूसरका वर।
घरे में घेराईल, आजो कहाले, देवर।
बर तीन-चार भी रखे मै
केहू-केहू माहिर बा।
पांच वर के द्रोपद्री के कथा
त जग जाहिर बा।

(4)
सबके कईली मात।
इनकर लमहर हाथ।
एक नाही दो नाही,सात।
बरखा के बर सात।

(5)
सातो के पटे ना। दूर कबो हटे ना।
सातो के सात रंग नाता भी बेढ़ंग
सतरंग बन गईले। इन्द्रधनुष तन गईले।
वर्षा के साथ साथ। महल बनावे पास।
अलगे मकान बाटे। सबके अलग तान बाटे।

(6)
पहिला शीतल जी के, संगे में रहला से।
बरखा सुभावे से, ठंडक ले आवे ली।
तप करत धरती के सरधा पुरावेली।

(7)
दूजे रसराज जी के
सखी रही बरखा जी
श्वेत रजत,बून्दन के,पायल बजावेली।
थम थम के ,नाच नाच धरती जुड़ावेली
पियासल धरा के कण्ड भर पावेली
धरती भी, अगरा के,निहाल होत जावेली।

(8)
तीजे त्रिकाला के, प्रेम पगी,तरुणी जब
धरती के आंचर प, प्रेम गीत गावेली।
हरियर परिधान धरे, धरती उतान भरे
बीया के पोस पाल,डीव्ही झलकावे ली।
डीव्ही भी हंसी खुशी,सुरज के ताक फंसी,
मुसकी सम्हारे ली, मटकी चलावे ली।

(9)
चौथे चौमासा जी,बीन जब बजावे ले
ठुमुक ठुमुक बरखा तब,नभ से उतर पावेले।
तल सुर सुर मिला-मिला,कोयल तब गावेले।
भौरा गुनगुननावे आ झिंगुर झनझनावे ले
खिल जाले फूल सब,किसान हर्षावेले।

(10)
पंचम के विरही जब नैहर चलि आवेली।
कतनो मनावन प, लस ना, दिखावेली।
प्रेमी पगलईनी में चीख के दहाड़े ला।
संगी-बजरंगी सब मेघनाद कर देला।
गर्जन से,तड़पन से प्रिया के डरावेला।
धमकी प धमकी दे पत्नी धमकावे ला।

(11)
छठन त सठ हवे, लंपट उसठ हवे।
परगामी,बदनामी,बोली के लठ हवे।
नैहर के जाते ही बरखा के चोर।
बिजुरी से करे लगले बन-टू-का फोर।
उनका त गम नईख,बरखो बेदम नईखे।
खींस पीत ढ़ावेली बिजली गिरावेली।
हाहाकार मच जाता,धरती सहम जावे ली।

(12)

सप्तम सतावत जी,अशुभ पैदासी है।
बरसे घन-पेट-फोड,झरे ना, बहासी है।
ताल तलैया मेड़ तोड़ के भरे लाख चौरासी है।
पनिया दुकाल बाढ़,सब फसल करे साड़।
त्राहि त्राहि मच जाला,सबके गल-फांसी है।

(13)

निपट,अघोरी,अनारी के नारी जब
छाती के पीट पीट बिलख बिलख रोवेली।
साल भर के अश्रुधार एक दिन गिरावेली।
तब धरती बेचारी लाचारी से ओत प्रोत।
बाढ़ के विभिविका से गले तक भर जावेगी।

(14)

कुटिल, कपट, धन, लपट-झपट के।
बरसत बा दिन रात। ई कंइसन बरसात?
बरखा के खुशहाही कहवॉ? ई कइसन उत्पात।
सकल बखेड़ा पतियन के वा, बरख के बर सात।

उनके गजल उनके बदे

डॉ. जवाहर लाल 'बेकस'
(मो.) ०9431464588

(एक)

हमरा गजल में प्यार से आवे के शुक्रिया,
हमरा के मन के मीत बनावे के शुक्रिया,
तड़पन रहे बहुत मगर अड़चन ना कम रहे।
एगो इश्क के सुतार सुझावे के शुक्रिया।
उजड़ल उदाश जिन्दगी बंजर पड़ल रहे।
ओह में फसल बहार के लावे के शुक्रिया।
एगो आरजू के छंद छेड़त मन-मिजाज पर।
हंसि के होकारी भर के जुड़ावे के शुक्रिया।
जिनिगी समाधि में रहे अंतिम विराम पर।
ओकारा के गुदगुदा के जगावे के शुक्रिया।
गहगह अंजोर हो गइल जिनिगी अन्हार के।
अगना में हमरो चॉन उगावे के शुक्रिया।
गंधांध हो मिरगानियन अपने सुबाय प।
श्रद्धा के मन-परान में धावे के शुक्रिया।
जेह राज के ना जान सकल बेकरार दिल।
ओह राज के बरयाम जनावे के शुक्रिया।
'बेकस' गजल के गांव में गम के गोहार प।
आपन दुलार-प्यार लुटावे के शुक्रिया।

(दू)

रात-दिन उनके जुबां पर नाम बा हम का करीं।
आबरू उनके बदे बदनाम बा हम का करीं।
उनका चाही भोर के पहिला किरण के ताजगी।
एने हमरा जिन्दगी के शाम बा हम का करीं।
छोड़ि के सुख-स्वार्थ मन अब ओढ़ि लेलस गेरुआ।
कामना कुंठित भइल निष्काम बा हम का करीं।
काल के मरजाद बनि के भेज के वनवास में।
सीता बिना व्यग्र-व्याकुल राम बा हम का करीं।
नाग के फूफकार के फन प सनाटा बात बो।
भीतर आस्तीन में कोहराम बा हम का करीं।
का मिली जब मिल सकल ना ऊ मिलन के रात में।
अब मिले में बहुते ताम झाम बा हम का करीं।
हम त चहलीं जिन्दगी से प्यार के कुछ अउरिदिन।
ओकरा लागे मौत के सरजाम बा हम का करीं।
काल्हु तक हम धूप से परहेज के आदी रहीं।
आजु हमरा सिर प भारी धाम बा हम का करीं।
मिल सकल ना भेंट के मोहलत मोहाल हो गइस।
अब त 'बेकस' आखिरी सलाम बा हम का करीं।

सम्पर्क-
सम्पादक: 'पनघट' बेकस निवास नोखा,
रोहतास (बिहार) 8०2215

देश भक्ति गीत (भोजपुरी)

संकलन
राम वदन मिश्र
प्रदेश महामन्त्री
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, छत्तीसगढ़

(1)

मांथ पर पगड़ी हाथे धारे लें लउरिया।
ढ़ेठ मरदाता होंलें,भाई भोजपुरिया।
जात-पात जानें नाहीं,ऊँच नीच माने नाहीं,
लिट्टी चोखा चाँपे रोज,चाँपे नित पुरिया ।।
लइका सेयान सभे मिली जुली गावेंले,
देशवा में एकता केज्योतिया जलावें लें,
दिलवा से दिलवा के दूर करे दुरिया। ढ़ेंठ मरदाना।

(2)

नीतिया अनीतिया के रितिया बतावे लें,
झूमर सोहर रोजे झूमी-झूमी गावेलें,
आन तान सहे नाहीं,नाही रे गरूरिया। ढ़ेंठ मरदाना।
देशवा पे शान आन बान के बचावे लें,
देशवा के माथे काटी बहिंया चढ़ावे लें,
दाव पेंच जाने नाहीं छुरिया। ढ़ेंठ मरदाना।

(3)

जहाँ-जहाँ जाले संस्कार वा बचावे लें,
देश प्रेमी लोगवा के गले से लगावे लें,
काना फूसी करस नाहीं,लेसस नाही लूतिया। ढ़ेंठ मरदाना।

(4)

तुलसी, कबीर, रसखाना गुन गावेलें,
बाबा महेन्द्र आ भिखारी के सुनावे लें,
धन रघुबीर देश गान एक सुरिया। ढ़ेंठ मरदाना।

(5)

बीर कुंवर काटी बहिंया चढ़वलें,
मंगल पाण्डे पीर अली सुलिया सजवलें,
देशवा ला केतना कटाई देलें मुरिया। ढ़ेंठ मरदाना।

(6)

माई के बचनिया के रोज गीत गावेलें,
मान सम्मान भोजपुरया बतावेलें,
भाई राम वदन नाहीं जाने जी हजुरिया।
ढ़ेंठ मरदाना होलें भाई भोजपुरिया ।।

कतना बढ़िया छन

मन के फूल खिलल
सतरंगी छटा मिली
रंग रोशनी वढ़ी
सुगंधित हवा मिली
संग साथ जब चली
जगत के जन जी ली
चौकादारी रात अन्हरिया
सब की थी

सुरेश कांटक
सम्पर्क:- कांट (ब्रह्मपुर) 802112 (बिहार)

दूसरों के अनुकूल होने की कला जिसमें है
वह जगजीत हो जाता है।

--०--

मनुष्य के मन में जैसे भाव होतें हैं,
यह संसार उसे वैसा ही दिखाई देता है

पाकल-पाकल पानवा खियावे गोपीचानवां?

राम वदन मिश्र
प्रदेश महामंत्री
अखिल भारतीय भोजपुरीसाहित्य सम्मेलन, छत्तीसगढ़

पूर्वी के जनक महान स्वतंत्रता सेनानी बाबा महेन्दर मिसिर जी गीत संगीत का अपना राष्ट से प्रीति का माध्यम से भोजपुरिया संस्कार क्षेत्र में एगो अद्भूत अद्वितीय अनमोल व्यक्तित्व के नाम ह जे महाकवि दिनकर निअर-मेरे नगपति मेरे विशाल- का ओट से राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के जेतरे शक्ति प्रदान कर रहल बारन, ओही तरे पंडित महेन्दर मिसिर अपना गीत-संगीत आ भजन कीर्तिन का ओट से 1857 के प्रथम भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के बुताइल चिन्गारियन के एक जुट क के लहोक लगा देलन आ राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन के एगो नया ढंग, नया अंदाज देत- मेरे नगपति मेरे विशाल - का तरे मनोवैज्ञानिक स्तर पर देश प्रेम के ऊर्जा जन-जन में भरे के भरपूर कोशिश कइलन-

जाग-जाग देशवा के चांद आ सुरूजवा,
मोर सवरिया सुन हो,
खोरहा बेलावे ला लुकार।
ठुमकी-ठुमकी नाचे मोरवा-मोरिनीया,
मोर सवरिया सुन हो,
विषधर के जाने ला जोगार।

ऊपर दिहल पंक्तिअन में बाबा महेन्दर मिसिर जी 1857 ई. के बाद के राजनीतिक सामाजिक आ आर्थिक नीति के ब्यौरा प्रस्तुत करत क्रांति के दीआ तुफान का छाती जड़वले रहे खातीर एगो नया संदेश आ एगो नया मार्गदर्शन दार्शनिक पुट का साथ प्रस्तुत कर रहल बारन। मौलिक रू से चांद सूरुज हिन्दू मुसलमान के कह रहल बारन, आ परदे-परदे में अंग्रेजी शासन के खोरहा शब्द से सम्बोधित करत खोरहा के भगावे, बेलावे के मौलिक जोगार मशाल, तूकार होला। ओह लूकार के जहिया चांद-सुरुज अपना हाथ में उठा ली, बाबा महेन्दर मिसिर जी का पक्का विश्वास रहे कि ब्रिटिश शासन नामीत खोरहा जरूर भाग जाई। बाबा महेन्दर मिसिर जी के इ भविष्यवाणी 15 अगस्त 1947 ई. में सिद्ध हो गइल। आगे देसरकी पंक्ति में पंडित महेन्दर मिसिर जी अपना गीत गवनई आ राग रागिनी के गांज-टाप में फंसा के अंग्रेज विषधर के जोगार लगावे के संदेश देरहल बारन आ भांति-भांति के अंग्रेज भगावे के जोगार शब्दन का ओट से प्रकाशित कर रहल बारन।

महाकवि दिनकर के रचना पंडित महेन्दर मिसिर के बाद के रचना ह। जवना में उ ओज न इखे जवन पंडित महेन्दर मिसिर के ए पूर्वी में बा।

ए हिमाला ए फशिले किस बरे हिन्दुस्ता,
चुमता है तेरी पेशानी को आसमां।

डॉ. इकबाल के इहो उच्चस्तरीय काव्य कौशल भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के जगावे में अपना एगो अलग-भूमिका राखत बा। डॉ. इकबाल के जवना कविता से प्रभावित होके महाकवि दिनकर-मेरे नगपति मेरे विशाल - के रचना कइनी बाकिर पंडित महेन्दर मिसिर के ई.पूर्वी-

जाग-जाग देशवा के चांद आ सुरुजवा,
मोर सवरिया सुन हो,
खोरहा बेलावे ला लुकार।

खांटी राष्ट्र प्रेम से प्रभावित होके अपना मातृभाषा के श्रृंगार बनल बा। ऐह रचना पर कवनो दोसरा चेतना आ चिंतन के छाप देखाई नइखे देत। हाँ कहीं कवनों छाप बा त उ ठेंठ भोजपुरिया संस्कार के छाप बा।

सासू मोरी मारे रामा बांस के छिडकिया,
से ननदीआ मोरी रे, सुसुकत पनिया के जास।
गंगा रे जमुनवा के चिकनी रे मटिया,
से ननदीआ मोरी रे, पउआं धरत बिछलात।
छोटी-मोटी पातर पिअवा, इंसे के ना बोले के,
से ननदीआ मोरी रे, सेहू पिअवा मरीओ ना जास।

पंडित महेन्दर मिसिर जी के इहो प्रचलित पूर्वी राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत आ क्रांति का चेतना से रागल-पागल बा। प्रतिकात्मक काव्य शैली के श्री गणेश पंडित महेन्दर मिसिर जी के पूर्वी के काव्यात्मक चतुराई का साथ गंभीर मनोवैज्ञानिक तत्वन के लावण्य से परिपूर्ण होके बहुत गहराई से जनमानस के उद्वेलित करत साफ-साफ मुखर हो रहल बा। घरेलू परिवेश का प्रतीक का ओट से सास ब्रिटिश शासन ननद भारतीय आ परिस्थिति सुसुक-सुसुक के जीअे के आ देश के हाल विपत्र, विचलित, फिसलन भरल गंगा यमुना के देश में बनल बा। एकरा से मुक्ति तबे सम्भव बा जब मालिक बनल छोटी-मोटी पातर पिअवा स्थानीय अंग्रेजन के दलाल जमींदार करबदाज आ दलाल लोग के मुआ दियाव।

भारतीय सभ्यता आ संस्कृति में विशेष रूप से भोजपुरिया संस्कार में पति के भगवान के दूसरका रूप मानल जाला, आ कवनो पत्नी अपना पति के मुआवे के कामना चाहे-भूलियो के हंसियो मजाक में पति खातीर अपमानित शब्द के प्रयोग नइखे कर सकत। जहां पति के दीघायु होखे खातीर करवा चौथ जइसन पवित्र पर्व कष्ट सह के मनावेले। नया बिम्ब, नया प्रतीक जहां महेन्दर बाबा छपले बारन ओहिजा जाली नोटो के छपाई क क के ब्रिटिश शासन के आर्थिक नीति के विफल करेके भरपूर लगवलन आ पचासो अरब जाली नोट छाप के 1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पेराइल परिवारन के भरण-पोषण कइलन करवलन, त वर्तमान लड़ाई शिखर पर पहूंचावे के कवनो जतन ना उठा धइलन। अपना गीत-संगीत, भजन-कीर्तन, पूर्वी आ कपिला बाई, नजमा बाई, हीरा बाई, सुगीआ आ विश्वसुंदरी ढेला बाई जइसन इंडियन का माध्यम से लड़ाई का मुंह पर श्रृंगार के पर्दा ठंनले रहलन। आतना नोट छाप के आपन मरइयो ना बना पवलन आ देश के आजादी खातीर सब कुछ गवां के अमर हो गइलन।

गोपीचंद नाम के सीआईडी बरिसन उनकर नौकर रहल, तब कहीं जाके उनका जाली नोट छापे के ओकरा के एक नवम्बर का नोट में बदले के आ देश का कोना-कोना में चलावे के पता चलल। पंडित महेन्दर मिसिर जी के सहयोगी मित्र बाबा जाने अली शफियाबादी एह कड़ी के एगो प्रसिद्ध सूफी संद स्वतंत्रता सेनानी रहनी जे बाबा महेन्दर मिसिर जी के भेजल पइसा के स्वतंत्रता सेनानियन के घरे-घरे पहुंचावे के जिम्मेवारी ले ले रहलन आ ऐह कार्य खाहीर नबी गंज बाजार जिला सिवान (बिहार) में एगो तम्बाकू के कारखाना खोलल गइल जवना में साठ गो घोड़ा तम्बाकू लाद के बेचे खातीर राखल गइल रहलन स। जवना पर स्वतंत्रता सेनानी लोग सवार होके तम्बाकू बेंचवा का रूप में जेल गइल। भागल धराइल स्वतंत्रता सेनानी लोग के दुखी परिवार के भोजन छाजन खातीर पइसा पहूंचावल जात रहे। सूफी संत बाबा जाने अली का ईमानदारी पर बाबा महेन्दर मिसिर जी के पक्का भरोसा रहे। ऐही से हर महीना तीन लाख नोट छाप के ओकरा के एक नम्बर नोट में बदल के पंडित महेन्दर मिसिर जी सारा पइसा सारा नोट उइवें भेज देत रहस। आ एको पइसा ओ में से ना छुअस, भले अपने भूंजा सतुआ खाके जिनकी कटलन। ऐहू से उनका संतोष ना भइल त बंगाल के सिआलदह स्टेशन से सरकारी खजाना लूटवा लेहलन। लगभग सत्तर लाख रुपया लुटाइल आ देश खातीर लड़े मरे जेल भर वालन देश भक्त के गांवा गांई, घरें-घरें पहूंचावल गइल। बाकि बाबा महेन्दर मिसिर सतरो पइसा आपना टीका चन्दन खातीर ना रखलन। ऐह सब मार्मिक संदर्भ आ मनोवैज्ञानिक युद्ध के गंभीर रूप में ब्रिटिश शासन लेलस आ अंत में इनका पर मुकदमा चलाके जेल भेज देहलस। आ इनका मनोवैज्ञानिक युद्ध का विरोध में इनका व्यक्तित्व पर मनोवैज्ञानिक युद्ध के सारा तीर कमान ब्रिटिश शासन साधक इनका के 420 आ रंग राग में इंडियन के साथ अझुराइल एगो शराबी कवाबी के छवि के जम के प्रचार-प्रसार करवलस आ साबित करे खातिर सारा अतजोग कइलस। जवना के कुछ प्रभाव आजो जहां-तहां देखल जात बा। गोपीचंद से इजलास पर बाबा महेन्दर मिसिर जी कहले रहनी कि- पाकल पाकल पानवा। खियावे गोपीचानवा ओह नोकर के रूप में ब्रिटिश शासन के नोकर शब्द से पंडित महेन्दर मिसिर जी भरल इजलास में सम्बोधित कइलन।

कांच-कांच कलियन पर भंवरा लोभइलें,
मोर सवरिया रे, घुरमी-घुरमी रस लेस।

--o--

डॉ. उदयनारायण तिवारी के साहित्यिक व्यक्तित्व

-डॉ. तैयब हुसैन पीड़ित

2 जुलाई 1903 ईस्वी में, ननिहाल, पांडेयपुर, बलिया में जनमल डॉ. उदयनारायण तिवारी के अपनों घर पीपरपांती बलिये रहे। घर में संस्कृत अध्ययन-अध्यापन के परम्परा । दादा पं. रामगति तिवारी ज्योतिष के बड़का पंडित आ चाचा पं. शिवपूजन तिवारी संस्कृत व्याकरण आ पुराण के नियम जानकार।

एह सब के कट के तिवारी जी के नाम अंग्रेजी स्कूल में लिखाइल आ एह तरह से 1923 ई. में उहां का एक मात्र सरकारी स्कूल, बलिया से प्रवेशिका पास कइलीं फेर एही साल कामस्य पाठशाला, इलाहाबाद में आई.ए. में नाम लिखवलीं। ओतिघरी कामस्य पाठशाला के प्राचार्य इतिहास के नामी विद्वान डॉ. ताराचंद जी रहीं। पढ़ाई के सिलसिला आगे बढ़ल आ उदय नारायण तिवारी जी 1925 में आई. ए. फेर प्रभाग विश्वविद्यालय से 1927 में बी ए आ 1929 में अर्थशास्त्र से एम.ए. कइलीं, बी ए में दोसर पेपर हिन्दी रहे। प्रयाग में ओहपरी असहयोग आंदोलन तेज रहे। तिवारी जी एकर अगुआ पुरुषोत्तम दास टंडन से प्रभावित होके सरकारी सेवा से विरत रहे के व्रत लिहली बाकी सामने जीविका के सवाल रहे, एह से 1930 में दारागंन स्थित एगो हाई स्कूल में गणित आ इतिहास के शिक्षक हो गइली। मन में आउर पढ़े के इच्छा जोर मारत रहे। मन रह-रह के एने-ओने दउरे। उहां के आगे बढ़ावे में एगो आउर घटना के संजोग उहां के मानत रहीं। बात 1925 के ह। तब तिवारी जी प्रयाग विश्वविद्यालय में बी ए प्रथम वर्ष के छात्र रहीं। वर्ग में डॉ. धीरेंद्र वर्मा हिन्दी के सीमा बतानत कहली कि - 'डॉ. ग्रिमर्सन के अनुसार भोजपुरी भाषा क्षेत्र हिन्दी के बाहर पढ़ता है, किंतु मै ऐसा नहीं मानता।'

भोजपुरी भाषा-भाषी होय का नाते एक तरफ डॉ. वर्मा के विचार उहां के नीक लागल त दोसरा तरफ हिन्दी के क्षेत्र से भोजपुरी के अलग बतावल देश-द्रोह जनाएल। उहां के मन में सोचलीं कि डॉ. नियर्सन एगो अंग्रेज आई सी एस हवन के जानी अंग्रेजन के 'फुट डालो-राज करो' का नीति से प्रभावित हो के ऊ अइसन कहले होरवस। उहां के मन में गांठ बान्ह लेनी कि एक दिन अपना अध्ययन से ऊ डॉ. नियर्सन के विचार निराधार साबित क के रहीहंन।

संजोग देखीं कि 1०3० में उहां के पटना में 'आल इंडिया ओरियण्टल कांफ्रेंस' में भाग लेवे के अवसर हाथ लागल, जहां देश के अनेक नानी-गिरामी विद्वान का साथ भाषा शास्त्र के स्वनामधन्य डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या से भेंट भइल। तिवारी जी मन में बहाइन आपन संदेह उहां के सामने रखलीं। डॉ. चाटुर्ज्या तिवारी जी के ईमानदार जिज्ञासा आ भोजपुरी भाषा का बारे में विशेष जाने के ललक देखत उनका के भाषा विज्ञान के विधिवत अध्ययन के ना खाली सलाह देनीं बलुक भोजपुरी ध्वनियन का संबंध में कुछ अभ्यास करवनीं, अनेक पुस्तक के नाम बता के ओके पढ़े के सलाह देनीं आ डॉ. बाबूराम सक्सेना व पं. क्षेत्रेशचंद्र चट्टोपाध्याय से मिल के अध्ययन के निर्देश लेने के सलाह दिहलीं।

पटना से लवट के तिवारी जी अपना गुरु डॉ. धीरेंद्र वर्मा के सहयोग से डॉ. बाबूराम सक्सेना से मिललीं आ उनके निर्देशन में तीन बरीस तक भोजपुरी भाषा के अध्ययन ए के पहिले एगो 'ए डाइलेक्टीव ऑव भोजपुरी' शीर्षक निबंध डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल का सहायता से 'बिहार उड़ीसा-रिसर्च सोसायटी' के जर्नल में प्रकाशित करवलीं। समय रहे 1934-35 आ निबंध, प्रशंसा रनातिर जेह कुछ नामी विद्वासन के बाध्य कइलक ओह में रहीं- डॉ. ग्रियर्सन, डॉ. ज्यूल ब्लाख, डॉ. टर्नर, डॉ. चाटुर्ज्या आ महापंडित राहुल सांकृत्यायन आदि। बाद में त कलकत्ता रह के 1922 में विधिवत तिवारी जी 'भोजपुरी भाषा की उत्पत्ति और विकास' विषय पर डी. लिट् खातिर थीसिस लिखलीं जवन 1945 में स्वीकृत भइल आ प्रयाग विश्वविद्यालय से उहां के डी लिट् के उपाधि मिलल। थीसिस अंग्रेजी में लिखाइल रहे जेकर अविकल अनुवाद क के पुस्तक का रूप में ऊ 'बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना' से 1954 में प्रकाशित भइल।

पुस्तक का 'वकतव्य' में ओती घरी बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के मंत्री रहल आचार्य शिवपूजन सहाय जी लिखले बानीं कि-

'हिन्दी-संसार में तिवारी जी भोजपुरी भाषा और भोजपुरी साहित्य के सर्वाग्रणी मर्मज्ञ माने जाते हैं।'

एने फड़ल पेड़ के झुकल देखीं कि अपना किताब के 'दो शब्द' में उहां के (तिवारी जी) बखूबी संकरले बानी कि 'आज भोजपुरी के अध्ययन में चौबीस वर्षों तक निरंतर लगे रहने तथा भाषा-शास्त्र के अधिकारी विद्वानों के सम्पर्क से भाषा-विज्ञान के सिद्धांत को पत्किंचित सम्यक रूप में समझ लेने के पश्चात मुझे अपने उस पूर्वाग्रह पर खेद होता है, जो बी ए प्रथम वर्ष में, भाषा विज्ञान के भीतर परिशीलन के बिना ही मेरे हृदय में स्थान पा गया था। आज मुझे डॉ. ग्रियर्सन के परिश्रम, ज्ञान एवं पक्षपात रहित विवेचना के गौरव का अनुभव होता है और इस विद्वान के प्रति हृदय श्रद्धा से परिपूर्ण हो जाता है।'अतने ना पढ़े के लागल चस्का देखीं कि तिवारी जी अर्थशास्त्र में एम ए त रहने कइलीं, आगरा विश्वविद्यालय से व्यक्तिगत परीक्षार्थी का रूप में हिन्दी से एम ए कइलीं। तिब्बत का प्रवास से लौटल राहुल जी के सम्पर्क में आके ना खाली पालि- संस्कृत के अध्ययन कइलीं बलुक 1938-39 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से एहू में एम ए कइलीं फेर सुनीति कुमार चाटुर्ज्या के सान्निध्य में भाषा विज्ञान के जम के अध्ययन कइलीं जेकरा खातिर अवेस्ता, पुराना फारसी आ ग्रीक व्याकरण के गंभीर अध्ययन करे के पड़ल। सबसे लैस होके 1945 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से भाषा विज्ञान में एमए के डिग्री लेनी आ तब सबका ऊपरा डी. लिट् के उपाधि त रहबे कइल। कहे के ना होई कि 1944 में अपने के बहाली प्रयाग विश्वविद्यालय में हो गइल जहां के कुलपति अंग्रेजी के नामी विद्वान डॉ. अमरनाथ झा रहीं। प्रयाग में अध्यापकी करत कई- एक बरिस अमेरिका से निमंत्रण पाके उहां के अमेरिका में भाषा विज्ञान पढ़वलीं फेर जबलपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष बनलीं आ एह सब के होतो जहां-जहां भाषा-विज्ञान पर अखिल भारतीय स्तर के शिविर होइवे, उहां के व्याख्यान खातिर बोलाहट भइल। अपना विद्वता के लाभ बांटत रहलीं। 1928 से जीवन-पर्यन्त हिन्दी साहित्य सम्मेलन के स्थायी सदस्य रहलीं। अइसे त (भोजपुरी भाषा आ साहित्य) में डी लिट् के उपाधि पावले अपने के साहित्यिक व्यक्तित्व के कोहेनूर हीरा जरल मातिन बा बाकी एकरा अलावहूं अपने ता जिनगी भोजपुरी भाषा आ साहित्य के प्रगति खातिर लगातार काम करत रहलीं। अपने के निर्देशन में डॉ. सत्यव्रत सिन्हा 'भोजपुरी लोकगाथा' पर श्रीधर मिश्र 'भोजपुरी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन' पर डाक्टरेट के उपाधि लेलक लोग, खुद भोजपुरी कहाउति, मुहाबरा आ बुझौनल के अच्छा संग्रह सम्मेलन पत्रिका में छपववलीं आ भोजपुरी लिखवइयन के कहत रहलीं कि ओह लोग के पद्य क्रम, गद्य अधिक लिखे के चाहीं। एक से भोजपुरी में सरस, सरल या स्वाभाविक शैली के आविर्भाव होई।

उहां के अलग भोजपुरी प्रांत बनाले के पक्ष में एकदमे ना रहीं आ कहीं कि एह से व्यर्थ के तनाव पैदा होई, जवना से भोजपुरी भाष आ साहित्य के प्रगति में बाधा पड़ी। हमनी का देश में प्रजातंत्र बा, तरेह-तरेह के भाषा आ बोलियन के ई देश एके संधे रहला से मजबूत होई। हँ हम भोजपुरी के विकास जरूरे चाहीले आ हमरा भोजपुरिहा लोग के शक्ति, साहस, देश-प्रेम आ बलिदान पर गर्व बा। अइसहीं ना अपने नइसन भोजपुरी साहित्यिक के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन, नवन इलाहाबाद में भइल रहे के अध्यक्षता करे के गौरव हासिल बा।

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना से किताब-रूप में प्रकाशित अपने के शोध-प्रबंध पर सरसरी नजर डललो पर अपने के गंभीर अध्ययन, परिशीलन आ गहीर दृष्टि से पता चल जाता।

ओकरा 'उपोदघात' में त व्यापक रूप से संसार के भाषा, भारतीय भाषा होते ओकरा संदर्भ में बिहार के भाषा आ बोलियन पर विचार भइल बा। 'प्रथम खंड' भोजपुरी भाषा के नामकरण, उद्भव आ विकास के इतिहास पर समर्पित बा 'त दूसरा अध्याय' भोजपुरी साहित्य पर। इहां कबीर से शुरू क के धर्मदास, शिवनारायण लक्ष्मी सखी, ग्रियर्सन, ह्यूग, फ्रेजर, जे बीक्स, ए जी शिरेफ, राम नरेश त्रिपाठी, कृष्णदेव उपाध्याय, दुर्गाशंकर सिंह नाथ, के काम आ बिसराम, तेगअली, रामकृष्ण वर्मा, पं. दूधनाथ उपाध्याय, बाबू आम्बिका प्रसाद, रघुवीर नारायण, भिखारी ठाकुर, मनोरंजन प्रसाद सिन्हा, राम विचार पाण्डे, प्रसिद्धनारायण सिंह, श्याम बिहारी तिवारी, कविवर चंचरीकस्वामी जगन्नाथ दास, अशांत साम्द के सौदाहरण साहित्यिक अवदान बतावे के कोम्सेस भइल बा।

अइसहीं भोजपुरी गद्य में अवध विहारी सुमन जवन बाद में स्वामी बिनलानंद सरस्वती कहइलन के कभा आ रविदत्त शुक्ल, भिखारी ठाकुर, राहुल सांस्कृत्यायन आ गोरख नाथ चौवे के नाटक के चचा आइल बा।

शेष में यानी 'द्वितीय खंड' से भोजपुरी भाषा के व्याकरण जइसे-ध्वनि स्वर, प्रत्यय उपसर्ग, समास, संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रियापद आ अव्यय आदि पर विचार भइल बा। 'परिशिष्ट' में कलकत्ता आ बनारस से प्रकाशित कुछ बड़ -छोटे किताबन के नामों उपरावल गइल बा त दक्षिणी, पश्चिमी उत्तरी भोजपुरी के आदर्श नमूना लघु लोक कथाअन के उदाहरण से बतावे के प्रमाण भइल बा। आखिर में फगुआ, डमकच, श्रीकृष्ण लीला, पावस, झूमर, लहसुना आदि भोजपुरी गीतन के लक्षण आ बानगी देहल गइल बा। गद्य के विकास त कसनो भाषा में कविता के बारे होला, जब बोली के भाषा-रूप बनेला। भला भोजपुरी एकर अपवाद कइसे हो सकत रहे? फेर भोजपुरी में गद्य के विकास विभिन्न विद्याअन में आजादी का बादे विधिवत् शुरू भइल। ओती फरी उहां के शोध प्रबंध लिखा चुकल रहे, एह से 1954 में प्रकाशित होइयो के तिवारी जी के 'भोजपुरी भाषा आ साहित्य' भाषे पर जादे केन्द्रित बा, साहित्य पर अपेक्षाकृत कम।

तबहूं भोजपुरी में जहां-जहां जे काम होत रहे, उहां के ओने तिकवल जरूर बानीं। ई उहां के सामीक्षात्मक दृष्टि के परिचालक बा, आ ईमानदार योगदान के ठोस सबूत। एह से उहां के व्यापकता लेले। आलोचकीय स्वरूप बनता।

न्यू अजीयाबाद कॉलोनी
पो.- महेंद्रू, पटना 800006

गजल

० बात बेबात के बढाइले।
आँख अबरा प हम देखाइले।
० फूठ लबरा के खुब पतिआईं,
जूठ फबरा के रोन खाइले।
० कंठ-सुर-ताल- बोल ठेंगा पर,
फाग आ चइत हम न चाइले।
० लूर आ गुर ना मिलल तेसे का,
टोल अकिला फुआ कहाइलें।
० मरम के बात कहीं चल निकले,
जीम तरूआर हम चलाइले।
० कुछ त तासीर मिलल बा अइसन,
हँसी के बात प रोआइले।
० लोग गंगा कहल कि गूँगा हम,
गूर खाइले मुस्कुराइले।

-गंगा प्रसाद अरुण
जमशेदपुर

फागुनी वयार

लेखिका-कु. शुभम सिंह
अयोध्यापुरी, कोरबा पश्चिम

फागुनी मस्ती हवा, छवले बा चारो ओर री।
बा कूकती कोइ-लर करिअई,तान मोहक माधुरी।
अमवा के मादक मोजरी,भर देले बाटे,सुबास से,
टेसू के फूलन से लदन,कई पेंड धधके आग से।
पुष्प अगणित, खिलखिलाता, बा सजावत बाग के।
गमक से गम-गम भइल बा,उकसा रहल अनुराग के।
फूल के मद के चोरवली, रंग-रंगी तितलियां।
दिल कली के जीत लेली,करियठ भंवर अठखेलियां।

***

के कही विश्वासघात?

डॉ. गजेंद्र सिंह
डॉ. पी.एन. सिंह
प्राचार्य डिग्री कॉलेज, छपरा

वर्तमान भारत सरकार के गृहराज्य मंत्री श्री प्रकाश जायसवाल जी का एह घोषणा से कि सब प्रक्रिया सूचीबध हो चूकल बा आ संसद के अगीला सत्र में संविधानय संशोधन का साथे राजस्थानी भाषा आ भोजपुरी भाषा के संविधान के अष्टम सूचि में समिलित कर लिहल जाई। गृह-राज्य-मंत्री के एह घोषणा से राजस्थानी भाषा आ भोजपुरी भाषा के भाषा-भाषी लोगन के ईहाँ ईद-होली-दिवाली जइसन धूम-धाम आ उत्सव के महिनवन माहौल रहल। केतना कवि-साहित्कार, लेखक, नेता, बटमार लोग आपन-आपन बाँह पूजवावे खातिर हरबरी में बिना पछुआ बन्हले मिठाई बाटल-बाटवावल आ आपना के भोजपुरी आन्दोलन के बरिआर सिपाही साबित करे खातिर राज्य से केन्द्र सरकार तकले दउड़ बाड़ाहा लगावल लोग, बाकि धिरे-धिरे मकई के भात खानि सेरा गईल लोग। सबकर खुश भइल स्वाभाविके रहे काहे कि ओह लोग का ई विश्वास कहे कि मंत्री जी कबनो ऐरे-गैरे-नत्थु-खैड़े ना हउअन। भारत सरकार के गृह-राज्य-मंत्री एगो महत्व रखेला। मंत्री जी घोषणा कइले बाड़न त जरूर ई काम होइबे करि। अक्टूबर 2007 से अप्रैल 2008 तकले कातना ससताई-महंगाई के सत्र बितल आ अभी कातना बीति तबो गृह-राज्य-मंत्री श्रीयुत् प्रकाश जायसवाल के नेक नियति आ घोषणा पर हामरा पाक्का विश्वास बा। का करस बेचारू कांग्रेसियाँ नेता हउहन राहुल गाँधी आ सोनिया गाँधी के वंशवादी राजनीतिक कुचक्र में सजि-दया-दुआ फसल बा। कांग्रेसियाँ शक्ति आ सत्ता का चक्की में वैचारिक स्वाभिमान आ नैतिक ऊर्जा आटा निअर पिसाता कि मैदा खानि इ बात मंदिर-मस्जिद का लाश प चढ़ के दिल्ली का गद्दी पर बइठे वाला कवनो चतुरीए काका बता सकत बारन तबो जबले सांस तनले आस के कहाउत कइलो कवनो बेकार नइखे बुझात।

भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में भोजपुरी भाषा का साहित्य के भूमिका कवनो दोसरा भाषा से कवनो मायने में पिछे नइखे रहल।

सुन्दर सुभूमि भइला बटोहिया भारत के देशवा से,
मोरे प्राण बसे हिम खोहरे बटोहिय ।।
गंगा रे जमुनवा के झगमग पनिया से,
सरयूग छ्मकी लहरावे रे बटोहिया।
जाऊ-जाऊ भइआ रे बटोहि हिन्द देखि आउ,
जाँहा चारों वेद ऋषि गावे रे बटोहिया।
जइसन देशभक्ति से ओत-परोत,
भरल-पुरल राष्ट्रगान आ आजादी के मशाल जरा

देवे वाला फिरंगीआ गीत के कबहु भुलावल नइखे जा सकत। जवन लाखन भोजपुरिया स्वतंत्रता सेनानी अन के मुख्य राजग धुग रहे। बुझाता फेर ओहि तरे एक बेर सारा भोजपुरिया लोग के माशाल लेके जागे के पड़ी। उ-दिन अब सामने आ रहल बा कि संसद से सड़क तक भोजपुरी माई के दुअरूआ लोग का एक झोक अपना मातृभाषा खातिर बलिदानी मशाल जलावे के पड़ी। आमरन अनसन जइसन आन्दोलन चलावे के पड़ी नाइनसाफि के विरोध जन-जन के जगावे के पड़ी। आजादी के 61 वर्ष हो गंइल। भोजपुरी आन्दोलन के पहिला पंक्ति में मशाल जलावे आला पहिला पीढ़ि के लोग दू-चारय जने छोड़ के सभे स्वर्गवासी हो चुकल बा। जइसे - पं. गणेश चौबे, राहुल सांकृत्यायन, डॉ. रघुवंश नारायण सिंह, कुलदीप नारायण राम 'झड़प', डॉ. स्वामीनाथ सिंह, राधा मोहन सिंह,'राधेश', पं. महेन्द्र मिश्र, भिखारी ठाकुर, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, आचार्य महेन्द्र शास्त्री, डॉ. प्रभुनाथ सिंह, मुंशी सिंह, मुंशी, अदालत राम (मोची), सान राय (भांट) जइसन लोग रहल आ आज दुरार की पीढ़ि के लोग के मुंह भोजपुरी माई जोह रहल बाड़ी कि कवन सपूत अपना बल बलिदान से इन्साफ आ हक के मुँह उजिआर करेला।

बोल वंशी के बसंती बान बढ़ के फूंक दड।
शान्ति श्रद्धा के सहेजल तान बढ़ के फूंक दड ।।

--o--

विश्वास और प्रेम

-जीवन का सार

आर. एन. शाही
जी.एम.समन्वय
वन्दना ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज, रायपुर छ.ग.

विश्वास और प्रेम का प्रगाढ़ सम्बन्ध है। विश्वास ही प्रेम है। प्रेम ही विश्वास है। विश्वास और प्रेम कोई वस्तु अथवा पदार्थ नहीं है, जिसे खरीदा या बेचा जाये यह तो मानव जीवन का सबसे बड़ा सहारा है। आज एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के भरोसे उम्मीद करता है, लेकिन स्वयं विश्वासघात की कोशिश में लगा रहता है। वही है मुख्य कारण अशान्ति का। समूचा विश्व विश्वास पर टिका हुआ है। किसी के प्रति विश्वास होता है और किसी के उपर भरोसा करना पड़ता है। दुनिया के रंग -मंच पर एक इंसान दूसरे पर भरोसा करता है, वफा की उम्मीद में कई बार चोट खाता है,धोखा खाता है। फिर भी जीवन को सुचारु रुप से गति देने के लिये उसे किसी न किसी पर विश्वास करना ही पड़ता है। व्यावहारिक जीवन में जो स्वयं विश्वासनीय है और विश्वासपात्र पर भरोसा करता है, उस पर विश्वात्मा, परमात्मा की चिरोष कृपा होती है। विश्वास प्रेम है,श्रद्धा है, परम की पूजा है और कल्याण का अनूठा मार्ग है। सम्पूर्ण सांसारिक संबंध एवम् कार्य विश्वास के धरातल पर ही टिकेहुये है। माता पिता अपनी संतान के प्रति विश्वस्त होकर उन्हें अतिशय,अनन्य प्रेम करते है, शिष्य अपने गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा तभी रखता है जब उसका मन विश्वास से सराबोर हो । मानव जीवन में मित्रता का संबंध भी महान होता है और रिशते की नींव भी विश्वास पर निर्भर है। मित्र शब्द दो अक्षरों के योग से बनाया है मि + त्र मिलना तरना जिसके मिलने से तर जाये वही मित्रता महान होती है। विश्वासघात करना ही पाप है और विश्वासपात्र पर भरोसा न करना भी पाप है। किसी निरपराध, विश्वासपात्र पर केवल शंका के कारण कुपित हो जाना अथवा बिना पूर्ण जानकारी के निर्णय लेकर किसी के विश्वास में चोट मारना भी उचित नहीं है।

रामायण में एक प्रसंग भी आता है कि जिस समय भगवान श्री राम जी, माता सीता जी और अनुज लक्ष्मण जी के साथ बनवास में गये उस समय भरतजी अपने ननिहाल में थे। जब वे लौटकर अयोध्या वापिस आये तब देखा स्वर्ग समान अयोध्या नगरी शोक में संतप्त थी। सबके मन में उदासी और निराशा का वास था। भरत जी नें पुन: सुख और आनंद वातावरण बनाने वाले भगवान श्रीरामी को वन से वापिस लाने का निर्णय लिया। इस मनोरथ को अपने मन में सजोकर भरत जी तीनों माताओं और पूरी सेना के साथ वन की ओर चल दिये। श्रीरामजी को अकस्मात घोड़ो के टापो की तेज आवाज शोरगुल सुनाई दिया ऐसी स्थिति में भगवान श्रीराम जी ने सुमित्रा कुमार लक्ष्मण जी से कहा देखो तो सही इस भयंकर गर्जना के साथ कैसा तुमुल नाद सुनाई देता है? भगवान श्री रामजी की आज्ञा पाकर लक्ष्मण जी ने तुरंत फुलों से लदे हुये शाला वृक्ष पर चढ़कर चारों दिशाओं में दृष्टिपात किया और उत्तर दिशा सें आती हुई विशाल सेना के साथ भरत जी के आने का समाचार सुनाया। लक्ष्मणजी ने कहा- भैया कैकेयी पुत्र भरत अयोध्या में अभिषिक्त होकर अपनें राज्य को निष्कटंक बनाने की इच्छा से हम दोनों को मार डालने के लिए आ रहे हैं। यहां पर लक्ष्मण जी का विश्वास डगमगाया , कमजोर हुआ और उनकी मर्यादा हिल गयी। क्रोध के वशीभूत लक्ष्मण जी के मन में अविश्वास का जन्म हुआ और वे पिता के समान भ्राता भरत जी को ही मारने के लिए तैयार हो गया। भगवान श्री राम जी ने लक्ष्मणजी को विश्वास की पराकाष्ठा का मर्म समझाते हुए कहा था- हे लक्ष्मण यदि मैं भरत से कहूँ कि तुम राज्य इन्हें दे दो तो मुझे विश्वास है कि वें बहुत अच्छा कहकर मान लेंगे। भगवान श्रीराम जी को भरत जी पर पूर्ण विश्वास था और उन्होनें लक्ष्मण जी कों अविश्वास के भंवर से निकाला। यह त्रेता युग की बात है और लोकोत्तर मर्यादा पुरुषोतम भगवान श्रीराम जी के उन भाईयों की कहानी है जिन्हें राज्य, सत्ता, सुख,आनंद और वैभव के शिखर को भी एक दूसरे के लिये त्याग दिया था।

आज कलयुग के समय में किस पर, कौन, कैसे विश्वास करें? ताप-ताप अनेक प्रकार के होते है। जिसका सुक्ष्म संबंध विश्वासघात से होता है जैसा कि कोई व्यक्ति समाज के ज्ञानी साक्षर व्यक्ति के पास इस विश्वास से आता है कि हमें ज्ञानी से उचित ज्ञान और मार्गदर्शन

प्राप्त होगा, जिससें मेंरा जीवन संभलेगा वहां उसके आशा और विश्वास के विपरीत घटना घटती है जो उस ज्ञानी के स्वार्थ में फँस कर ठला बन कर रह जाता है। यह भी एक महापाप एवं विश्वासघात की श्रेणी में आता है। जिसका प्रभाव उस ज्ञानी के सांसारिक जीवन में समय समय पर प्रगट होकर उस पाप का प्रभाव दिखाता रहता है । लेकिन ज्ञानी अपने अंदर की सुक्षम पाप रुपी अज्ञान को नहीं देख पाता है, जो ईश्वर की नजर में महापापी की श्रेणी में गिना जाता है। संतो का कथन है कि हजारों निर्दोष भेड़ बकरियों को एकत्रित करके उन्हें एक साथ अग्नि में जला देना जितना बड़ा पाप होता है उससे भी हजार गुना पाप होता है विश्वासघात करना। एक देश दूसरे देश पर विश्वास करें, एक प्रांत दूसरे प्रांत पर भरोसा रखे एक समाज दूसरे पर विश्वास करें, एक जाति दूसरी जाती पर भरोसा रखे, एक संबंध दूसरे संबंध पर, एक परिवार दूसरे परिवार पर, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर और फिर सब मिलकर विश्वास करें। इसी में सम्पूर्ण विश्व का कल्याण है। विश्व के कण कण में व्यापक परसत्ता पर है। ईश्वरीय विश्वास कभी कमजोर नहीं होता । ईश्वर पर भरोसा करना सर्वोपरि है। वही सबका सच्चा सहारा है। खरा संबंध है। इसी पर सांसारिक व्यवस्था टिकी हुई है। मेरी मंशा है कि उक्त लेख को अपनें जीवन में पूर्ण रुपेण अनुकरण कर उतारकर विश्वास और प्रेम को जाग्रत कर अनुग्रहित करतें रहें।

***

दूसरों की कमी निहारने से पहले अपनी कमी टटोलो
इससे आप उदाहरण बनोगे

22वां अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, रायपुर
28 एवं 29 मार्च 2009
देश के कोना-कोना से जुटल सम्मानित अतिथि लोगन के पा के
हम आ हमार शहर धन्य बा

इन्जी. विजय सिंह
मुख्य अभियन्ता पारेषण
छ.ग. राज्य विद्युत पारेषण कं. लि., रायपुर

नेता जी आज के

मोहन शर्मा
रायपुर- छ.ग.

नेताजी अइनी नेताजी अइनी
एक गांव में नेता जी अइनी
इंकलाब जिंदाबाद, 2
इंकलाब जिंदाबाद के नारा लागल
नेताजी के बहुत अच्छा लागत।
नेताजी अपना श्री मुख से बोलनी
पंच वर्षीय योजना के फाइल खोलनी
इकइनी ऐसन बखाना,
सबे ही गईल परेसान।
मंगरू भाई से ना सहाईल
बीच में बोल पड़ले ऐ भाई
का कहले बानी लखान,
पांच साल में कइले बानी का ऐसन काम
नेताजी कहते -सुन मंगरु भाई
हम कहत बानी एगो बात
चारों तरफ विकास ही विकास बा
केहके न समझ में आवे,
त हमार का विसात बा,
हमरा लगे कॉने जाइ के छडी नइखे
ओकरा से पहिले फूल बनाई,
फूल से बनाई बकरों
बकरी से बनाई बाघ,
ओकर दूध रउआ सभे के पियाई
पहिले के जमाना और रहे कि
कमात रहे टोपी वाला और
खात रहे धोती वाला
अबके जमाना दोसर बा
कमाई धोती वाला और पाई टोपी वाला।

***

भाई होके दूर ह गइल बा आदमी

भाई होके दूर हो गइल बा आदमी।
आंख रहते सूर हो गइल बा आदमी॥
जवानों रहे इज्जत पानी- पानी हो गईल-
सास से फगड के बहू रानी हो गइल-
भाई-भाई संगे तानी -तनी हो गइल-
लागल हिस्सा ओमे बेइमानी हो गइल-
अपने से कूर, हो गइल बा आदमी,
आंख रहते सूर हो गइल बा आदमी॥
० अलग होके देख 5 बलहीन हो गइल
कुकुरो आज मोंके अइसन दीन हो मइल-
देखड हालत अइसन संगीन हो गलि-
रहे के मुहाल तक जमीन हो गइल-
देखड चुरे-चुर, हो गइल बा आदमी।
आंख रहते सूर हो गइल बा आदमी ।।
०बाग लागल अइसन कि फुलात नइावे-
मलियन से बाग ई सिंचात नइावे-
डेगे-डेगे किचड़ बा कछात नइावे-
बदब एकर तींन को अब सहात नइावे-
अइसन बेसहूर हो, गइल बा आदमी।
आंख रहते सूर हो गइल बा आदमी ।।
०जेही आइल लूटल हमें जी मर के मइया-
अपने टाटा-विड़ला मइलं हमके कइलं पइया-
कइसो-कइसो खेइलां हम जिनिगी के नइया-
हइदा ई हइया जोर लगाव 5 मइया-
पानी विनु फूर हो गइल बा आदमी।
आंख रहते सूर हो गइल बा आदमी॥
०जिदे खातिर किदउ आधार चाही-
पावे के किनारा पतवार चाही-
गावे-गांन लोगबन के प्यार चाही-
सचकी कलडिया के घार चाही-
अब लड़े के मजबूर, हो गइल बा आदमी।
आंख रहते सूर हो गइल बा आदमी ।।

-विनयराय (बबुरंग)

धेपका जी – आंचलिक कथा

रघुबर दयाल सिंह

गांव में शिक्षा के विकास में युद्ध स्तर पर जुटल, जीवट नारी रही अध्यापिका जी
जिनका के गांव के लोग धेपका जी के नाम से जानत/मानत रहे।

गांव में चट्ठी मिलते खलबली मच गईल। चिट्ठी पेठावे वाला रहन मरिच के मुलुक में गईल शिव प्रताप सिंह। चिट्ठी पा के भाई राम-खेलावन सिंह पहिले त अगरा गहईले बाकिर चिट्ठी के मजमून सुनते क्रोध से तमतमाए लगले। उनका मुँह से अनाप-शनाप शब्द झरे लागल। कुछ शब्द साफ सुनात रहे - ई त कुल- खानदान के इजते बोर देलस। कतहीं के ना-छोड़लस। भहव सुनी त घर में महाभारते मची। लोग सुनी त थू-थू करी। नाता-हीत में त मुंहो देखावे लायक ना बांचल। गड़हा में गिरलिस त ओनिए रहि जाईतिस। अरे लालची ! जमीन जायदाद चहितिस त अकेले अईतिस। गरदन में घरी-घन्ट बान्हि के आवे के का मतलब ? भईंस त पानी में गइबे कईल साथ में चार हाथ के पगहो ले गईल। पता ना ई का गूत के आ रहल बा ?

बाबू साहेब कबही माथा प हाथ दे के अपना भाग्य के कोसस त कबही नथुना फुला के जोर-जोर से सांस लेसु। चिट्ठी के बात के पचावलो मोश्किल बा। पानी में के झाड़ा- फीरल कब ले पानी में रही। उतरइबे करी। बड़ा सोच-विचार कईला पईहे तय कईले कि सामाजिक समस्या के समाधान जब अपना से ना हो सके, तो ओकरा के सामजे प डाल देल उचित बा। अब ई पारिवारिक समस्या ना रहला परिवारो त एगो छोटहन समाजे ह। एह विचार के आवते बाबू साहेब के मन से संकोच कुछ कम भईल। नाऊ बुलाके, गाँव भर के पंचायत में आवे के नेवता दिआईल। गोतिया-पटिदार में, के केकरा के सुहाला ? ऊपर से चाचा-बाबा आ भीतर से के ना जरे। पराई विभूति केकरा आँखों भावे ला ? सभे हीते बा आ सभे मुदई। राम खेलावन सिंह के पास पुरहर खेतो रहे आ आठ गाँव के जमींदारी में बड़हन हिस्सो रहे। धीर-गंभीर बाबू साहब गाँव में गिनात रहन। उनका सूझ-बूझ के लोहा गाँव जवार जानत-मानत रहे। उनकर मिजाज गरम देख के आ बरबराईल सुन के गोतिया पटिदारी के लोग सूंघ ले ले रहे कि कौनों बेजोड़ घटना जरूरे घटल बा। लोग आपस में फुसफुसाए लागल। आहे प गरई धरे लागल। कुछ हितलगाह लोग अफवाह प विराम लगावत, कहले कि- दम धरीं सबे ! काहे आपन दिमाग खराब करतबानी ? सांच प डालल परदा के आरद्वाय बहुते कम होला। सांच त उजागर होइए के रही। पंचायत के नेवता मिलते, लोग सांच जाने खातिर बेताब हो गईल आ डेगारगर शिवालय देने चल देलस।

गाँव में आज केहू बाकी ना रहे। पंचायत बइठल। पुरनिया लोग न के ऊँचा आसन दिआइल। बाकी लोग बगईचा के जमीने प बईठ गईल। कहार ताबड़तोड़ बाल्टा में पानी भरे लगले। मिश्री चालवल गईल। पानी पिअवला के बात खैनी बने आ बंटाए लागल। कुछ लोग चिलम निकाल के साफी भिंजावे लागं। गुल घरावे के काम नयका गंजेड़ी के जिम्मे रहे। राम-पलीता मने-मन गील होत रहन कि आज जमींदार के थाह लागिए जाई। कतनों बड़ होखस पंचायत के सामने कुछुओ नईखन। पंचायत के सबब जाने खातिर सब केहू बेसबर होत रहे। पंचायत में सबसे उमिरदार परीखा सिंह सबलोग के शान्त करावत कहले - सब केहू अपना-अपना जगह पबईठीं आ ध्यान से सुनीं।

आज के पंचायत बाबू राम-खेलावन सिंह बोलवले बानी। उनके से आग्रह बा कि आपन समस्या पंचायत के सामने रखीं। राम खेलावन सिंह पंच-परमेश्वर के दूनों हाथ जोड़ के प्रणाम कईले आ कहले कि जब-जब गाँव के कौनो भाई प, पारिवारिक या बाहरी कौनो विवाद आईल त ईहे पंचायत दूध के दूध आ पानी के पानी कईले बा। ओसही कौनों समस्या के समाधान भी मिल-जुल

के कइले बा। रउवा सभे के सूझ-बूझ प पूरा भरोसा बा। एक के बोझा, पांच के लाठी के विचार आवते आपन समस्या रउवा सभे के सामने ई मान के रख रहले बानी कि ई समस्या खाली हमरे ना ह, पूरा गांव के हो गईल बा। गांव के ईज्जत भी आज दांव प बा। बाबू साहेब से बापा-बैर राखे वाला राम पलीता बीचे में बोले लगते-

काकाजी ! आपन काम-धन्धा छोड़-छाड़ के सभे बिटोराईल बा। ढेर भूमिका मत बांधीं। काम के बात प आईं। समस्या सुनाईं। पंचायत में सबसे उमिरदार आ प्रमुख बाबू परीखा सिंह व्यवस्था देले कि राम खेलावन सिंह के पूरा बात कहे के अवसर मीले के चाहीं। बीच में केहू, बात मत काटे। कहले-

घर घोड़ा पैदल चले, कहे बात मुख छीन।

थाती धरे दामाद धर, जग भकुआ तीन।

मधुर डांट सुन के, सब लोग के मुंह प ताला लाग गईल। राम खेलावन सिंह आपन बात फेनु शुरु कई ले।

अब कुछुओ का कहे के बा ? भाई शिव प्रताप मरिच-के मुलुल से एगो चिट्ठी पेठवले बाड़े। चिट्ठी के मजमून हमरा के हिला देले बा। चिट्ठी रउवा सभे के समर्पित बा। बांचल जाय। गुन-दोष व विचार कईल जाय। समस्या के समाधान कईल जाय आ हमरो के उबारल जाय।

सब लोग चिहाईल रहे। चिट्ठी ले के बाबू परीखा सिंह एक पल सोचले आ कहरबा सिंह के हाथ में देके चेतवले-

बबुआ कहरबा ! जोर-जोर से पढ़ द ताकी सब केहू सुन ले। कहरबा जी चिट्ठी पढ़े लगले -

पूज्यवर भैया-भौजी

दण्डवत प्रणाम।

मरीशस (मरिच के मुलुक)

दिनांक 15 जनवरी 1939

स्वस्ति श्री सर्व उपमा योग। चिट्ठी लीखल शिव प्रताप के ओर से गांव-घर के सेआन लोगन के प्रणाम आ छोट लोगन के आशीष। आगे हाल ई बा कि हमनी के गिरमिटिया टाईम पूरा हो गाईल बा। जोड़ला प अनुमान बा कि हमनी के 22 जनवरी के गाँवे चहुंपत बानी जा। घर के सब केहू खातिर कुछ कपड़ा ले लेले बानी। भईया हो। बाबू जी के परलोक सिधरला के बाद तूंही लोग हमार बाबू-भाई हवअ। अतना नेह-छोह पवनी कि ओकरे बल प अंग्रेजन के गुलामी में भी गिरमिटिया मजदूर से मुंशी आ कुमद्दम बन गई नी। दण्ड-बैठक रोजे करत रहीं। जईसन देह बना के भेजले रहअ ओकरा से तनिको ओहर ना होखब। धनो कमईनी। नामो भइल। एह दलदली टापू में खाली मरिच (काली मिर्च) के जंगल बा। अपना देश के लोग हमनी के मरिचहा कहत रहे। ई नाम अतना फेमस भईल कि अंग्रजों हमनी के बोली बोले लगले स। एग्रीमेंटल इण्डियन लेबर के अंग्रेजों गिर मिटिए कहेले स। आ मरिच के मुलुक में गईल लोगन के मरिचिहा ना कह के मारिचस बोले ले स। अब त एह टापू के नाम हमनिये के बोली अईसन मॉरिसस रखा गईल बा।

भईया-भउजी के मालूम हो कि एहिजा गिरमिटिया लोगन में अपना देश के उत्तर-प्रदेश आ बिहार के सबजिला के लोग बा। सब जाति के लोग बा। कतना लोग घर बना के बसियो गईल बा। वाकिर सबसे ज्यादा संख्या में हमनी के भोजपुरिए बानी जा। एहिजों काली-स्थान बनल बा। गवनई होत रहेला। फागुन में ताल एहिजो ठोंका ला। एहिजो होली, दिवाली, छठ, दशहरा आ ईद मनावल जाल। कई गोपरिवार हितलगाह हो गइल बाड़े। पार साल जब हमरा मलेरिया हो गईल रहे त आजमगढ़ के बाबू साहेब जितेन्दर सिंह के परिवार हमरा के राऊर ऑ भउजी के कमी ना महसूस होखे देले। बड़ा सेवा कईल लोग। उनकर एहिजा आपन मकान बा। पूरा

परिवार पढ़ल लिखल बा। बाबू साहेब के बेटी अंग्रेजन के स्कूल से इन्टर पास कर के बी.ए. में पढ़त बाड़ी। बड़ा नेक हुई। सुन्दर सुभेख बाड़ी। भोजपुरी लोगन में समाज-सेवा करे में सबसे आगे रहेली। बेमारी के समय हमार सेवा भी खूब कइले रही। टाइम प दवाई आ पथ्य देवे में बड़ा ध्यान देत रही। उनका बोली भी अईसन बा जे बेमार लोग बोलिए से आधा नीमन हो जाला। उनकर ईच्छा बा कि मॉरिशस में स्कूल ना खोल के, आपना देश के सेवा कईल जाय।

समस्या बा कि गोर-जवान, सुन्दर लईकी अकेले कइसे अपना देशे जाए। उनका अपना गावे के घर ढह-टिमिला गईल बा। चालिस बरिस से उनकर परिवार मॉरिशसे में बस गईल बा। उनका बाबू जी आपन कार-बार अतना बढ़ा लेले बाड़े कि अब छोड़लो नईखे जात। उनकर माई-बाबू हमरा प बड़ा विश्वास करे ला लोग। अपना गांव में लइकिन के स्कूल खोले बदे सुनैना देवी हमरा जवरे आ रहल बाड़ी। उनका परिवार के मर्जी से आ रहल बाड़ी। यदि कौनो गल्ती भईल होखे त माफ करिहए। आगे का लिखीं ? थोड़ा लिखले- ज्यादा समुझिह।

भौजी के चरण में हमार माथा टेकल स्वीकार करब। अत्र कुशलं- तत्रास्तु। हां भैया। सुनयना जी के किरपा से अब हमहूँ पहल-लिखल बानी। मेट्रिक के इम्तिहान देले बानी।

शेष शुभ बा।

राउर लहुरा भाई

शिव प्रताप

चिट्ठी पढ़ि के कहरबा जी पंचायत के ओर टुकुर-टुकुर तिकवे लगले। चिट्ठी बाबू परीखा सिंह के थमा देले। परीखा सिंह कहले कि चिट्ठी से कई गो सवाल खड़ा होत बा। अवरू केहू कुछ कहल चाहत होखे त कहे।

राम पलिता :- आपन गांव एके बाप के संतान ह। हमनी के भगवान राम के जेठ बेटा लव के वंशन हईं जा। हमनी कींहा एक मेहरारू के रहते दोसर बिआह कईल वर्जित बा। ई मरिच के मुलुक से दोसर मेहरारू ले के आ रहल बाड़े। अईसन आदमी के कुजात छंटाए के चाहीं।

भुलेटन :- जाते से ना, गाँवों में समाए ना दिआई। ई पढल लिखल मेहरारू गांव के पतोह-बेटी के रास्ता बिगाड़ दी। कड़ा फैसला कईल जाय। गांव के मर्यादा बचावे खातिर शिवो प्रताप के गांव में ना आवे दिआई।

धरीछन :- बिना विअहले, के अपना जवान बेटी के, अनका मरद के साथे, भेजी जी ? या त अपना बाप-मतारी के चुपके ई भाग के, आईल बा लोग। ना त विआहुत हो के। चिट्ठी में कुछ बात तोपले बा।

राम पलीता :- लईकाइयों में शिव प्रताप कम रसिया ना रहन। बनिहारिनो इनकर शिकाइत करत रही स। जेकरा के ले आवत बाड़े ऊ कईसन ह ? कवना जाति के ह ? भगवाने जाने। घाट-घाट के पानी पी के हमारा गाँव के मुंह प कारिख पोते आ रहल बीआ।

धरीछन :- हँ भाई ! ऐकरा गाँव में अईला से गाँव महकि जाई। गांव के बेटा-बेटिन के विआहो रूक जाई। असहू गाँव में विअह-कटवन के कमी नईखे। राम खेलावन अपना भाई के मोहे यदि ओकनी के अपनावे के सोचले होखस त राम खेलावन के बारे में सोचल अब पंचाइत के काम बा। चिट्ठी के अंगार के आग से पंचाईत गर्माईल रहे ओही समय आन गाँव से एक संदेस-वाहक आ के खड़ा हो गइल। सब लोग के निगाह संदेशवाहक प आ के टिक गईल।

संदेशवाहक :- गाँव के सिवान प बाबू शिव प्रताप सिंह अपना परिवार आ दू एक्का प समान लाद के आईल बानी। गाँव मे

आवे के अनुमती चाहत बानी। ऊहाँ के अपना भैया के साथे साथ गाँव के सबलोग के यथोचित प्रणाम आ आशीर्वाद भी कहले बानी।

अपना धोती के चेंट से एक रोपेया निकाल के परीखा सिंह संदेशवाहक के हाथ में देके कहले- ठीक बा। संदेश मील कईल। तूं जा के शिव-प्रताप से कहि दीह कि गांव उनके समस्या के निवारण में जुटल बा ऊ हमनी के फैसला होखे तक ओहिजे रूकस। राम खेलावन भाई। तहरा कौ उजुर त नईखे ?

राम खेलावन :- अब ई समस्या के निपटावन पंचायत कईए रहल बा। हम पंचायत से बाहर थोरे बानी ? पंचायत के फैसला हमरा सिर आंखिन प रही, आ बा।

संदेशवाहक के कथ पंचायत के आग में घीव के काम कई लस।

राम पलीता :- भूत के हल्ला रहे। लीं ! अब कपारे चढ़ गईल। भूत उतारे के उपाय कईल जाय।

कहरबा :- भाई लोग। अगर उ मेहरारू पढ़ लिख के हमरा गाँव बेटी-बहु के शिक्षा देवे आ गाँव के उन्नति में सहायक बने आ रहल बीआ त हमार कहनाम बा कि किस्मत के स्वागत करे के चाहीं। भाग्य लक्ष्मी सिवान पर खड़ा बाड़ी। हमरा गाँवे आवे के निहोरा करत बाड़ी। आ हमनी के किस्मते नु खराब बा कि आवत लक्ष्मी के नकार रहल बानी जा।

राम पलीता :- बबुआ कहरबा। मायटिक पास भईला से किताबी ज्ञान मीलेला बाकिर व्यवहारिक ज्ञान त जीवन के तपौड़ा में तपले से होला। कईसे जानि गइल कि ऊ लक्ष्मी है कि पतुरिया ह। का मन मैं गूत के आ रहल बीआ ? बिना बिअहले दू गो मरद-मेहरारू एके साथ रहत बाड़े। अगर दोसर बिआह कईले बाड़े, जेकर अंदेशा ज्यादा बा, त कवना जाति से ? अरे ! पहिलकी के का होई ?

कहरबा :- काका जी ! बड़-बड़ खानदान के पढल लिखल जनाना देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में दिन रात लागल बा लोग। उमिर चढ़ गईल। बिआह करे के फुर्सते ना मीलल। त का ऊ लोग बाउर बा ? पतुरिया ह लोग ? ओह लोग के इज्जत नईखे ? अंग्रेज सरकार हमनी से गुलामी करा के आपन खजाना भर रहल बा। आ बिना शिक्षा के ई गुलामी के भूत ना उतरी। नईखी पढ़ल त लईकन के पढ़ाई।

छरीछन :- बात त ठीक लागत बा बाकिर ई मरिचही मेम त लईकिने के नु स्कूल चलई। लईकी त दू दिन के पाहुन ह लोग। बिआह होई त अपना-अपना घरे चल जाई लोग। एह लोग के पढ़वला के का फायदा ? विचार करीं सभे ?

भुलेटन :- धरीछन भाई एगो बात भुलात बाड़े। लड़की के शिक्षा मिली त नैहर आ ससुरार दू कुल के, सुधारी। अपना बाल-बच्चन के शुरुए से पढ़ाई। ससुरारो जई त चिट्ठी चपाठी भेजत रही। समाचार मीलत रही। आज का हालत बा एगो चिट्ठी पढ़ावे खातिर पढ़निहार लइकन को खोजाला। हर हाल में लड़निक के स्कूल चालवे वाली मरिचहा मेम साहब के स्वागत करे के चांहीं।

राम पलीता :- अरे भाई ! ज्यादा सपना मत देखी सभे। स्कूल का आसमान में खुली स्कूल चलावे में ढेर रोपेया के खर्च बा। ई सपना त गांव में आवे के बहाना खातिर देखावल जात बा। पढ़ल लिखल लोग के, महीन दांव ह। सब केहू के बेंवत बा, जे एह चाल के समुझ ले।

कहरबा :- इतिहास साखी बा कि कतना राजा लोग जाति या बिजाति में कई गो विआह करत रहन। केहू जाति से उनका के निकलले बा ? अरे जाति त मर्दन के होला। ओकरे नाम से वंश चलेला। एगो बात अउर बा। शहर में इ समस्या त नईखे ? सब जाति के लोग रहेला। आपन-आपन काम करे ला। होटल में के केकरा से जाति पूछेला जी ? गाँवे में ई छोट बिचार सरकवांशी डलले बा।

एकर गिरह खोलही के परी। हमरा मत से जे सहमत बा उ एकदेने बइठ जाए।

देखते देखते छोट-बड़ आपन-आपन गमछी झारे लगले आ कहरबा के ओर बैठे लगले। थोरही देर में पंचायतके बुझा गईल कि गांव शिक्षा के पक्ष में बा। केहू त आईल जे गाँव के शिक्षित करे के बीड़ा उठा रहल बा ? अपना कमाईल धन के गांव के लइकिन के शिक्षा खातिर खर्च करे के तैयार बा। समस्या त बा कि उनका पहिली मेहरारू ऑ बच्चा के का कईल जाय ? प्रमुख लोग आपुस में विचार कईल आ निर्णय सुना देल।

परीखा सिंह :- गाँव के अनेक लोग के विचार सुनला के बाद, गांव के बहुमत के मंशा जनला के बाद आ पंचाइत के प्रमुख लोग के मसबिरा के अनुसार पंचाईत के अंतिम निर्णय बा कि -

एक - शिव प्रताप आ मरिचिहा मेम के नीयत ठीक बा। उनका के गांव में रहे दियाय। राम खेलावन जी अपना पुश्तैनी जमीन में से दस बीघा आ गढ़ पर के पुरनका मकान दे देस।

दो- शिव प्रताप आ मरिचही मेम के यदि विआह ना भईल होखे त उनकर विआह करा दिआय। वैसे कौनो ईज्जतदार आदमी अपना जवान बेटी के, बिना विआह कईले, अन्य मर्द के साथ ना भेजित।

तीन- शिव प्रताप जब चहिहें अपना पहिले के बाल-बच्चा के पास आ जा सकेले

चार- शिव प्रताप जी के नयका घर-परिवार से जे खान-पियन राखल चाहे, राखे। ना राखल चाहे ना रखे।

पांच- लड़किन के स्कूल गढे पर खोले दिआय। सब लोग आपना लड़किन के पढे खातिर भेजे।

पंचाइत के फैसला सुनते राम पलीता आ चार-पांच लोग मुँह बिजुका के चल गईल। शिव प्रताप के पंचाईत के फैसला से अवगत करावत गइल आ उनका नयका परिवार के गांव में आगमन भईल। सफाई-पोताई करा के शिव प्रताप के नया परिवार गढ़ प के मकान में रहे लागल।

गांव घर के लोग मरिचिहा मेम के एक झलक देखे खातिर बेसब्र रहे। सब लोग के आना-जाना उनके घर के सामने से बार-बार होखे लागल। गांव भर के मरद-मेहरारू के चर्चा के विषय चर्चा के विषय मेमे साहब रही। औरतन में चर्चा रहे कि नयकी मेंम घप-घप गोर आ बहुते सुधर बीआ। केहू से लजाय ना। घूंघ ना ताने। मर्दन से आँख में आँख डाल के बतिआवे ले। रिश्ता में देवर लोग नयकी भौजाई से बतिआवे के मन लेके गढ़ प जाए पर उनका हथ से पानियो ना पीए। ईहे बात नयकी मेम के सुहात ना रहे। उहो ठानिए लेले रही कि गांव के पिछड़ापन के कारण अशिक्षा बा आ ओकरा के जड़ से निर्मूल कईए के मानब। उनकर सबके से बेहिचक बातचीत कईला के बड़ा शिकायत रहे। उनका प लोग अनेक नीमन-बाउर आरोप मढ़ते रहे। मेम साहब के परिवार जब जम गईल तब एक दिन ऊ अपना पति शिव-प्रताप के साथे आरा जाके अंग्रेज कलेक्टर से मिलली। फार्रटे से अंग्रेजी बोलत रही। अंग्रेज मेमिन अइसन चेहरो-मोहरा रहे। जिला में पहिली महिला रहली जे अंग्रेज कलेक्टर से अंग्रेजी में बतिआवली। स्कूल खोले खातिर अप्लेकेशन अंग्रेजिए में लिख के प्रस्तुत कईली। अंग्रेज कलेक्टर के सलाह प अपना अप्लीकेशन में सुधार कईली आ प्रस्तुत कईली। कलेक्टर अत्यन्त प्रभावित भईल। अनुमती पत्र लेके आ विद्यालय संचालन खातिर सरकारी अनुदान राशी के साथ गांव में आवे के तिथी तय कईले।

गांव में डुग्गी पिटाईल। स्कूल के नाम लोर प्रायमरी बालिका विद्यालय रखाईल। दूगो बांस गाड़ के बोर्ड टंगाइल। साफ सफाई भईल। गांव के लोग रंग बिरंगी कागज के झंडी टांगल। आम के पल्लो से विद्यालय के दरवाजा के सजावल गईल। जिलेबी छाने

खातिर हलुवाई लागल।

निश्चित तिथी आ निश्चित समय प कलेक्टर साहेब के आगमन के जानकारी थाना के दरोगा जी देले। उनको स्वागत भईल। ऊ कलेक्टर साहब के आवे तक ओहिजे ड्युटी बजावत रहन। दूरे से कलेक्टर साहेब के बग्घी लउके लागल। दोसरो गांव से लोग बिटोराए लागल। भीड़ लाग गईल। एक बग्घी प कलेक्टर साहेब, उनकर पी.ए.साहब, आ आगे आगे चपरासी जी लाल पट्टा बंधे दौरत रहन। दोसरा बग्गी प सुरडेन्टेन साहेब, नायब, हाकिम आ अन्य अधिकारी रहन। एको छोटहने समारोह में अंग्रेजी सरकार के नुमाइंदो के स्वागत-सत्कार भईल। अंग्रेज कलेक्टर फरनांडिस लियो कुछ पत्र-प्रमाण पत्र मरिचिहा मेम के हाथ में थमा देले। बाकी उपस्थित मेहमान ताली बजावे लगले। ओह लोग के ताली पीटत देख के ग्रामीण भीड़ो बिना बूझले ताली गड़गड़ावे लगले। समारोह स्थल पर दुइए गो कुर्सी रहे जवना प कलेक्टर मिस्टर फरनांडिस लिओ आ मरिचिहा मेम सुनैना देवी बइठली। बाकी लोग विछावल चौकी प बईठल। अंग्रेज कलेक्टर अंग्रेजिए में कहले जवना के भोजपुरी अनुवाद मरिचिहा मेम साहेब कईली।

ब्रिटेन के राजा बड़ा उदार बाड़े। हमरा माध्यम से जब रउरा गांव के अध्यापिका जी से स्त्री-शिक्षा बदे स्कूल खोले के प्रस्ताव मीलल त सम्राट बहुत प्रसन्न भइले आ तत्काल ई आदेश सम्राट के ओर से प्राप्त भईल। बड़ा हर्ष के माथ घोषणा कईल जात बा कि गांव में गंगा ग्राम लोअर प्रायमरी कन्या विद्यालय स्थापना के साथे साथ, दू रूपया, हजार ब्रिटिश सम्राट के ओर से स्कूल संचालन खातिर प्रदान कईल जात बा स्कूल संचालन खाति श्रीमती सुनैना देवी के प्रधान अध्यापिका के पद प नियुक्ति दिहल जात बा। ईनका के सांठ रूपया माहवारी वेतन प्राप्त होई।

घोषणा के बाद अंग्रेज कलेक्टर कुछ देर नव नियुक्त अध्यापिका जी से अंगेजी में बतिअवले आ वापस आरा चल गइले।

गांव में घरे घर इहे चर्चा रहे कि कइसे ई मरिचिहा मेम, माथा उधर ले, अंग्रेज कलेक्टर से, आँख से आँख मिला के सरपट अंग्रेजी में बतिावत रहे। का पढ़ लिख के मेहरारू असही चौपट हो जाली स ? का लाज-शरम बेच देले बीआ ई नयकी मेम ? केहू कहे कि का असही अंग्रेज कलेक्टर मेहरवान भईल बा ? तोपल सत्य के खोज में ही गांव परेशान रहे। खाली समय में कोनो विषय प बात होके, घूम फिर के अध्यापिक जी के चरित्र-व्यवहार प आके ठहर जात रहे। अध्यापिका जी के पूर्णमासी के चांद नीयर चमकत चेहरा के एक झलक देखे खातिर लोग उनके घर के एने-ओने घुरिआइल रहत रहे। केहू रिश्ता में देवर आ भतीजा उनका से दू-टप्पा बतिया लेत रहे त अपना के धन्य मानत रहे। पूछला प कहत रहे कि तहनी के जाहिल समाज के का बुझात बा ? एक महीना कलकत्ता में रहल बानी। मिला-मिला के पढ़िओ लीला। तहनी के बोका ह-व स। तहनी से का बतिआवसु ?

मरिचिहा मेम सुनैना देवी के नाम अब केहू ना लेबे। सब लोग अध्यापिका जी कहे। आस्ते आस्ते अध्यापिका जी से अधेपका जी आ अब खाली धेपका जी के नाम से गांव में जनाए लगली। कुछ महीना तक धेपका जी के लोअर प्राथमिक शाला में कहू ना आवे। उनकर छूवल पानी केहू ना पीअल चाहत रहे। उ त कुजात छंटाईल रही एही से गांव के किनारे गढ़ प स्कोल चलावेली।

गांव में काली माई के मंदिर में रामायण गवात रहे। बिकरमा भाई बहारा से कमा के आइल रहन। रामायण गवावे के आयोजन कइले। पुरहर परसादी मिठाई के साथे-साथ खइनी, बीड़ी, गांजा आ चाह के आयोजन रहे। परसादी आ अन्य स्वागत समाज के लालच से रामायन गवनिहारन के अलावा सुने वालन के भीड़ रहे।

रामायन खतम भइला के बाद मेहीनी गावे के तैयारी होत रहे तक्ही पलखत पावते गांव के लीडर साहेब खड़ा भइले आ कहले।

बड़ा भाग के बात बा कि हमरा गांव में गंगा ग्राम लोर प्रायमरी कन्या विद्यालय के स्थापना भईल बा। जिला जवार में हमरा गांव के नाम अजर-अमर हो गइल बा। सरकारी रेकड़ में अपना गांव के नाम चढ़ि गइल बा। अंग्रेज कलेक्टर साहब, इंग्लैंड से मंगवा के विद्यालय के सामने पताली पंप (चम्पा कल) लाग गईल बा। पाताल से पानी खींचें के मशीन ह। अपना गांव के अलावा कौनों गांव में चंपा कल नईखे लागल। ईहो सुननी हां कि ग्रेट ब्रिटेन के महारानी गुलाम भारत के एगो पिछलड़ गांव में स्त्री शिक्षा के ललक सुनली त अपना खुशी से चम्पा कल के वरदन देले बाड़ी। देवी से कम नईखी ब्रिटेन के महारानी। सुनी सभे ! बिना शिक्षा के कारण भारत माई गुलामी में कलप रहन बाड़ी। मौका रोज-रोज हाथे ना आवे अपना बेटिन के ना पंढ़ावे भेजल जई त अंग्रेज, कलेक्टर दोसरा गांव में विद्यालय के ट्रांसफर कर सकेला। मौका हाथ से मत जाए दिआय। कतना गांव के लोग हमरा गांव के विद्यालय के सुन के जर बोता बा। गंगा जी दुआरे प आ गइल बानी तबहूं हमनी के पियासे काहे मरींजा ? काल्ह से हर घर के बेटी पढ़े जाए के चाहीं भले धेपकाजी के घरे पानी मत पीअल जाए।

लीडर साहबे के बात लोग के मन के कोड़े लागल। कोड़ल जमीन में बीया लीडर साहेब डालि देले रहन। घर घर में तजबीज भइत। शिक्षा के बीया जामल आ आंख फोर हो के कुछुए दिन में लहलहाए लागल।

धेपका जी के ना बुझाईल कि जवना गांव में एको विद्यार्थी पढ़े ना अइली ओही गांव में एके दिन दस गो लड़की स्लेट पेन्सिल ले के पढ़े आ गइली। धेपका जी मनोकामा के बल मीलल। जेकरा स्लेट ना रहे ओकरा के स्लेट पेन्सिल स्कूल से दिाइल। आ धीरे-धीरे स्कूल चल निकलल।

पहिले त लईका- लईकी के धेपका जी अपने विद्याल में पढावत रही। लइकन के संक्या बढत गईल गांव में लड़कन के अलग स्कूल खुलल। दू गो भवन बनल। आज लईका-लईकी अगले अलग पढे लगलै।

देश स्वतंत्र भईल। अंग्रेज गांधी बाबा, जय प्रकाश नारायण, राजेन्द्र प्रसाद जगजीवन राम, राम सुभग सिंह के नेतृत्व में सत्ता सौंप के सात समुदर टप्पू पार अपना देश चलि गइले। जन संख्या बढल। विद्यार्थी बढले आ कन्या शाला के नयका भवन में क्लास रूम बढ़त गईल।

अब धेपका जी अछूत ना रहली। पूरे गांव के खान-पिआन उनका परिवार से बा। धेपका जी सेवा निवृत्त होके बुढ़ौती में भी गांव ना छोड़ली। सबके सुख-दुख के सच्चा साथी रहली। अपना लइकन के खूब पढवली। दूनो बेटिन के विआह कर देली आ इकलौता लइका के प्रोफेसर बनवली। आजा धेपका जी एह दुनिया में नइखी बाकिर ई उनके प्रयास के फल बा कि एह गांव के लड़की जब दोसरा गांव में विआहल गइली त अपना ससुरा में सबसे पढल-लिखल कहइली आ मान पवली। बूढ़ पुरनिया हो गइला प भी रामायन बांचे आ चिट्ठी पढ़े में उहे खोजात रही। अनेक गांव में शिक्षा के दिया जरवली। लोग कहेला कि देश के आजादी पावे में धेपकाजी पेड़ के जड़ अईसन काम कइली।आज धेपका जी के गुन-गाथ सुना के गांव के नयका पीढ़ी आपन माथा ऊंचा करेला। केहू कहेला धेपका जी नारी-शिक्षा के रणक्षेत्र के वीरांगना रही।

--o--

आपका स्वभाव ही आपके साथ चलेगा। अत: अपने स्वभाव को ऊँचा, अति ऊँचा बनाओ।

गज़ल

इ दर्द का सुनाई ई लोर का देखाई,
अरमान के चिता पर रोई की गीत गाई।

हहरत हिया में हमरा लहरत तुफान बाटे,
जिनगी के नाव कवना अब घाट पर लगाई।

अमष्त का बाट में इ घोरल तहरे माहुर,
पीहिले बन के शंकर तोहरा के का पीआई।

कोइल के कूक सुनके कुहकत बा हमरो काया,
सब हीत मति जाके होने हंसी उड़ाई।

मिलल बा जवन हमरा किस्मत के अपना बखरा,
इ आग आउर के तना छाती के हम दबाई।

ए मोह का नगर के कारीख का कोठरी से,
चुप–चाप बबुआ जौहर नाता छोड़ा के जाई।

नदी के धार जे मरूस्थल के ओरी फेर देवे ला,
उ नाता पानी के तरसत भूई के जोड़ देवे ला।

हिमालय लांघे के जेकर लगन आगे बढ़ावे,
उ चिंता गोर पिरइला के पीछे छोड़ देवे ला।

भरम बाचल बा ओकरे दम से नेहिया के जगत्तर में,
जे टू टूटल सनेही दिल के देखते जोड़ देवे ला।

कबो उ यात्रा के यातना से ना डरे राही,
जे चलते–चलते फोड़ा पांव के सब फोड़ देवे।

भला ओकरा के केहु ना कही कहियों कहीं जौहर,
तनी सा बात पर जेकर के वादा तोड़ देवे ला।

***

गज़ल

हरेन्द्र प्रसाद भार्मा,
बी–19 हाऊसिंग बोर्ड कॉलनी,
माधव रावसप्रे नगर रायपुर.

(1)
दिल के दिया, जला के देखीं।
मन के किताब, खोल के देखीं।
दोसर कोई बाउर कहे त।
नीमन काम त करके देखीं।

(2)
मानुष जनम के ले के देखीं।
मानुष जिनगी जी के देखीं।
अपना खातिर जिए सभे लोग।
दोसरा खातिर के देखीं।

(3)
एने ओने बात छोड़ दी।
मानव मानव बन के देखीं।
कतहीं केहू ना मिल पावे।
जौहर जी से मिल के देखीं।

(4)
धरम के ठेका जिनका बाटे।
गाल बजावे उनके देखीं।
अपना अन्दर झांक ले भाई।
सकल बुराई खुद में देखी।
भुलाइल बिसरल तरगर गीत

–संकलनकर्ता–स्वर्गीय राधामोहन सिंह
ग्राम–परासरा, जिला बलांगीर (उड़ीसा)

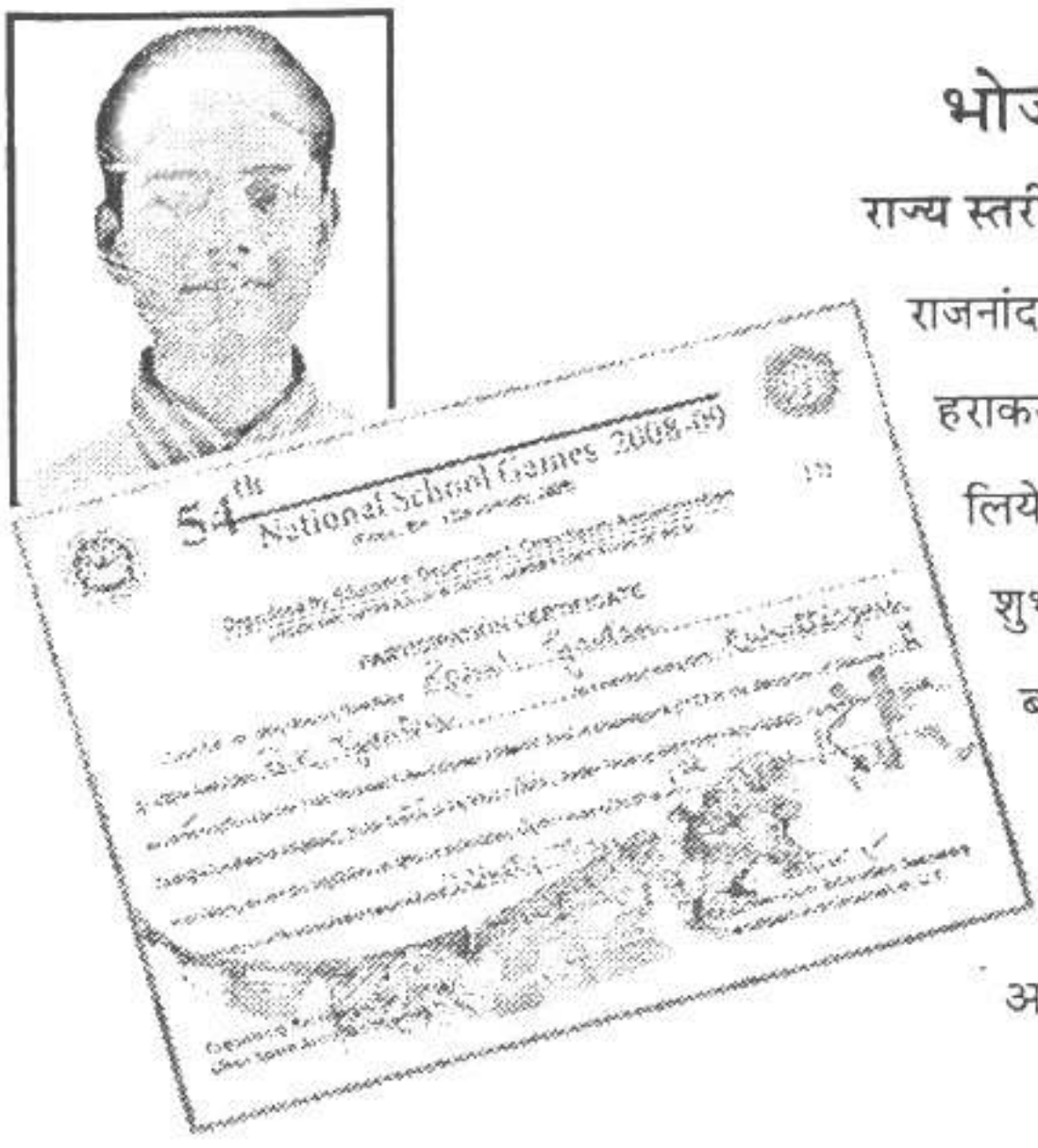

भोजपुरी के उदयमान गौरव

राज्य स्तरीय टेटे स्पर्धा में राहुल गौतम का चयन

राजनांदगांव में आयोजित राज्य स्तरीय टेबल टेनिस टूर्नामेन्ट बिलासपुर को हराकर राहुल गौतम स्टेट टीम में चयनित हुये है। अपने शानदार प्रदर्शन के लिये वह इसका श्रेय अपने कोच व अपने माता-पिता को देते हैं। जिनके शुभ आशीर्वाद से आज वह इस स्तर तक पहुँचे हैं। इस सफलता के बाद राहुल ने 54वें नेशनल स्कूल गेम्स 8 से 13 जनवरी 2009, चंडीगढ़ में छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व किया तथा समाज का नाम रौशन करते हुए अनेकों उपलब्धियाँ पाई उन्हे अनेकों बधाई व आशीष ।

भोजपुरी-सौरभ के प्रकाशन पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं...

एवं

भोजपुरी सहित्य सम्मेलन में पधारल अतिथियों का आत्मीय स्वागत...

इन्जी. पारसनाथ सिंह

मुख्य अभियन्ता अति उच्च दाब

छ.ग. राज्य विद्युत पारेषण कं. लि., रायपुर

एवं

महामंत्री, छ.ग. राज्य विद्युत मंडल अभियन्ता संघ

संपर्क सुत्र

रायपुर –

अशोक कुमार सिन्हा–	9301156563
रधुवर दयाल सिंह –	9424226357
हरेन्द्र प्रसाद शर्मा –	9406016041
अरूण कुमार सिंह –	9425214327
डॉ. प्रभाकर सिंग –	9425516461
रामवदन मिश्र –	9981997399
सत्येन्द्र कुमार गौतम –	9827191718
आचार्य पं. नरेन्द्र कुमार सुमन –	9300201554
समीर श्रीवास्तव –	9425522009
मनोज कुमार तिवारी –	9827932119
अभय सिंह –	9340906838
सुधीर कुमार सिंग –	9329468275
विजेंदर शर्मा –	9826199363
बी.बी. ओझा –	9329126699
राजेश सिंग (ललन सिंग) –	9425515230
सत्येन्द्र सिंह (अधिवक्ता)	9329604150
डॉ. प्रभात कुमार सिंह –	9406197503
प्रफुल्ल विश्वकर्मा –	9827192313
हनुमान सिंह –	9329173992
प्रभुनाथ बैठा –	9425557034
हैदर इमाम जौहरी –	9893162448
उमाकांत पाण्डेय –	9926103645
अशोक चतुर्वेदी –	9826602222
अरूण गुप्ता –	9431055587
जे.बी. सिंग –	9993011800
जगन्नाथ पंडित –	9425208473
रणधीर पाण्डेय (गुड्डू) –	9009535926
अरूण प्रसाद कुशवाहा –	9301193339
विश्वनाथ प्रसाद सिंह –	9893369314
शिवनाथ चौबे –	9893159570
प्रेम कुशवाहा –	9301193339
विश्वनाथ प्रसाद सिंह –	9893369314
शिवनाथ चौबे –	9893159570
प्रेम शंकरराव पार्षद –	9329104342
आर. एन. शाही –	9301721708
ओम प्रकाश शर्मा –	9770136097
शेखर कुशवाहा (पार्षद) –	9827176501
डॉ. राजू दुबे –	9229670988
चन्द्रभूषण शर्मा –	9425205591
संजय जायसवाल –	9302839322
संजय श्रीवास्तव –	9425203636
राजेश सिंह –	9981997364
मनोरंजन सिंह –	9301079224
पी.एन. सिंह –	9826900762
वीरेन्द्र सिंह –	9302839078
संतोष सिंह –	9827161815
श्रीराम व्यास –	9827933408
अभिषेक मोहन –	9993320609
अजय कुमार शर्मा –	9993844124
शेषनाथ तिवारी –	9981174600
संजय सिंह –	9425509656
जनार्दन सिंह –	9098177679
त्रिलोक सिंह –	9300671553
के.एन. सिंह –	9098177115
डॉ. अजय कुमार सिंह –	9827195071
राजमणि शेखर –	9827160395
पं. जितेन्द्र तिवारी –	9827167571
संजय कुमार सिंह –	9301730007
ललन कुंअर –	9098177679

बिलासपुर –

विजय कुमार ओझा – 9993864427

अजय पाठक – 9827185785

विनोद कुमार सिंह – 9425544418

डॉ. धर्मेन्द्र जादव – 9827932418

रायगढ़ –

प्रमोद कुमार सिंह – 9425250502

विनोद कुमार सिंह – 9300003839

सरगुजा –

राजकिशोर चौधरी – 9826181520

अम्बिकापुर –

विजयशंकर यादव (टी.टी.आई.) – 9406274678

राजनांदगांव –

सतीश नायक – 9302840271

जगदलपुर –

योगेन्द्र पाण्डेय – 9425258020

कोरबा –

डी.एन. शुक्ला – 942522418

भिलाई –

सुभाष शर्मा – 9425238122

सी.एस. राय – 9826550145

जितेन्द्र पाण्डेय – 9907918812

एस.आर. राय – 9425239395

एस.के. उपाध्याय – 9300207119

राजेश श्रीवास्तव – 9425556116

रविन्द्र सिंह – 9927161221

शभुनाथ राय – 9993290808

उमाशंकर राय – 9300546971

आदर्श राय – 9893154979

भोजपुरी-सौरभ के प्रकाशन पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं...
एवं साहित्य सम्मेलन में उपस्थित अतिथियों का हार्दिक अभिनन्दन

इन्जी. अजय सिंह

जे. सेंगर कन्सट्रक्शन

विद्युत गृह फाउन्डेशन कार्य के विशेषज्ञ

हर्षित टावर, टाटीबंध, रायपुर (छ.ग.)

भोजपुरी-सौरभ के प्रकाशन पर
हमारी हार्दिक शुभकामनाएं...

विरेन्द्र कुमार सिंह
उपेन्द्र कुमार सिंह

गे. अल्फा इन्टेलिजेन्सा सर्विस प्रा. लि.

परमानन्द नगर, मोहबा बाजार, रायपुर (छ.ग.)
मो. : 09302839078, 09229138071

भोजपुरी-सौरभ के प्रकाशन पर
हमारी हार्दिक शुभकामनाएं...

प्रो. जितेन्द्र कुमार सिंह

गेरार्रा शुभम ट्रेडर्रा

मो. : 09893788049, 9301215024

भोजपुरी-सौरभ के प्रकाशन पर
हमारी हार्दिक शुभकामनाएं...

प्रो. कृष्णा विश्वकर्मा

राज विश्वकर्मा शाकप रिपेरिंग

फूल चौक, रायपुर (छ.ग.)
मो. : 09893309098

भोजपुरी-सौरभ के प्रकाशन पर
हमारी हार्दिक शुभकामनाएं...

प्रो. राजेश कुमार सिंह

गेरार्रा राजेश कन्सट्रक्शन

मो. : 09425515230, 09977233233

भोजपुरी-सौरभ के प्रकाशन पर
हमारी हार्दिक शुभकामनाएं...

सत्येन्द्र कुमार गौतम

इन्शयोरेन्स एडवाइजर

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

जयश्री ट्रान्सपोर्ट

सीमेन्ट/एफ.सी.आई. ट्रान्सपोर्ट कॉन्ट्रेक्टर एण्ड कमीशन एजेन्ट

संतोष भवन, एस.बी.आई. के सामने, फाफाडीह, रायपुर (छ.ग.)

फोन : 0771-2885695, मो. : 9300293271

ग्राम - दुमदुमा, तहसील - मसरख, जिला - छपरा (बिहार) 841 417

भोजपुरी-सौरभ

के प्रकाशन पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं...

Prop. Harendra Prasad Sharma

MAHABEER INDUSTRIAL CORPORATION

• ENGINEERS • FABRICATORS • FOUNDERS • CONTRACTORS

MANUFACUTRERS OF :

Railway Wagon Door, Petrol & Diesel Tank,
Oil and Water Tank, Conveyar Rollers, Wire Drawing,
All types of Light & Heavy Fabrication & Engineering Works.

Regd. Off. : B-19, Housing Board Colony, Madhaw Rao Sapre Nagar, Birgaon, RAIPUR (C.G.)

Off. & Fac. : Shed No. 5-B, 9 Block, Industrial Area, Bhanpuri, P.O. Birgaon, Raipur (C.G.) 493 221
Ph. : 0771-4269373, 4028251 (F), Mob. : 9406016041

Sreeleathers

WORLD CLASS. RIGHT PRICE.

ABHAY SINGH

Phool Chowk, G.E. Road, RAIPUR (C.G.)

Showrooms and outlets at :

KOLKATA

Lindsay Street (22861511), Free School Street (22861506), College Street Marcus Square-22197984

Behala Market (2468 1341), Gar/a Basu Market (24303076) NAIHATI 2A RBCroad.

DELHI 16A Regal Building Con nought Place

HOWRAH Corporation Stadium Complex (26410608),

DOMJUR Jagadishpur Road (26705354),

BURDWAN City Tower, 27G.T. Road,

DURGAPUR Benachiti

ASANSOL 27, (26)G.T. Road

BERHUMPUR BB Sen Road, Khagra

PURULIA B.T. Sarkar Road

SILIGURI City Plaza, Sevoke Road,

JAMSHEDPUR Bistupur, Sakchi

DHANBAD Bank More

BOKARO Sector 4 City Centre

RANCHI Rospa Tower, Main Road

HAZARIBAG Main Road

BHAGALPUR Khalifa Bagh Chowk

MUZAFFARPUR Motijhil Road

PATNA Shahi Complex, New Dak Bungalow Road

CUTTACK B.K. Road, Dolmundai

BHUBANESWAR Ashok Nagar, Janapath Main Road

AGARTALA Hariganga Basak Road

VARANASI Godoulia

BANSAL'S

AMRIT

TEA

FINEST CTC TEA

BANSAL AGRO & TEA MFG (P.) LTD. - KOLKATA

STATION ROAD, RAIPUR

PH. : 0771-2523326, 2523432 (O), 2283828, 2283569 (R)